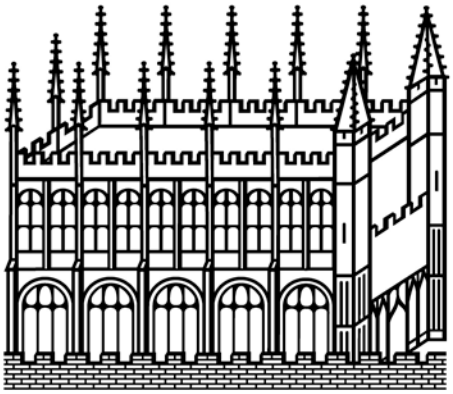


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi misc. B 8

13.A.38.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Nehul Kishore.

Bhāshā kāvya saṅgraha.

Bhakha Kala Sangrach

भाषा काव्य सङ्ग्रह।

जिस को

अवध देशीय पौन जानपदीय शास्त्रार्थियों के नागरी

विद्यार्थियों के उपकारार्थ

श्री मत्पण्डित मण्डली मण्डन पण्डित्याखण्डचण्डिमोद्दण्ड

श्री युत कालिन् ब्रौनिङ्ग-साहब प्राच्यीनडैरक्टर वीरेश्वर ने

शास्त्रीय निज भक्त्युद्गार से

राम नगर शास्त्रीय द्वितीयाध्यापक धनावली

पुरस्थ सरयू पारीण शुक्लोपनामक श्रीपण्डित

महेश दत्त से अनेक कविराजों के ग्रन्थार्णव

मन्थन से सरल सञ्चय कराया

और

श्री मद्विबुधेन्द्र शिरोमणि कवीन्द्रकल्पद्रुम परमकारुणिक

श्री युत डैरक्टर आफ़ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन वीरेश्वर

पश्चिमोत्तर व अवध देशीय की आज्ञानुसार

तीसरी बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर यन्त्रालय में बाजपेयि

राम रत्न पण्डित के प्रबन्ध से छपा॥

नवम्बर सन् १८७९ ई॰ सवी

भाषा काव्य संग्रह।

जिस को

अवध देशीय पौरजानपदीय शालाओं के नागरी विद्यार्थियों के उपकारार्थ

श्रीमत्पण्डित मण्डली मण्डन पण्डित्याखण्ड चण्डमोदण्ड

श्रीयुत कालिन्बोनिङ्ग साहब प्राचीन डैरक्टर वीरेशने

शास्त्रीय निज भक्त्युद्गार से

राम नगर शालीय द्वितीयाध्यापक धनावली

पुरस्थ सरयूपारीण शुक्लोपनामक श्रीपण्डित

महेश दत्त से अनेक कविराजों के ग्रन्थार्णव

मन्थन से सरल सञ्चय कराया

और

श्रीमद्विद्वद्वृन्द शिरोमणि कवीन्द्रकल्पद्रुम परम कारुणीक

श्रीयुत डैरक्टर आफ़ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन वीरेश

पश्चिमोत्तर वअवध देशीय की आज्ञानुसार

तीसरी बार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर मुद्रालय में बाजपेयि

राम रत्न पण्डित के प्रबन्ध से छपा।

नवम्बर सन् १८७९ ईसवी

सूची पत्र ॥

क्रमांक	नाम कवि	विषय	पृष्ठ	पंक्ति
१	महेश दत्त	प्रारम्भ पुस्तक और गणेश जी की वन्दना ॥	२	४
२	तुलसीदास	मित्रता के विषय में ॥	३	६
,,	,,	चतुरता और मूर्खता के विषय में ॥	४	६
३	मदनगोपाल	संसार की अनित्यता का वर्णन ॥	३३	२
४	नारायणदास	विद्या की प्रशंसा ॥	३५	५
,,	,,	सहायता और श्रम का वर्णन ॥	३७	३
२	तुलसी दास	सुसङ्ग की प्रशंसा ॥	५६	२
,,	,,	दुर्ज्जनों की प्रकृति का वर्णन	५८	३
५	हुल्लासराम	स्त्री और पुरुष दोनों की दुरूता ॥	५५	५

	नाम कवि	विषय	पृष्ठ	पङ्क्ति
६	सहज राम	गर्भवासादि दुखों का वर्णन।।	७१	९
७	भगवती दास	नरकों का वर्णन।।	८१	८
८	रत्न कवि	ब्रज की प्रशंसा।।	८८	८
९	ब्रजवासी दास	मारवन चोरी लीला।।	९३	४
१०	सबल सिंह	भीष्मपिता सह घोर अर्जुन का युद्ध।।	१००	१५
११	नरोत्तम दास	दीनता का वर्णन।।	११२	२
१२	नवल दास	भक्तों की प्रशंसा।।	११४	७
१३	लछू जीलाल	दृष्टान्त।।	११६	७
१४	गिरिधर राय	सामयिक वार्त्ता।।	१४०	५
१५	बिहारी लाल	तथा	१४३	६
१६	अनन्य दास	गृहस्थ और राजाओं का योग।।	१४४	२
१७	रघुनाथ दास	राम नाम की प्रशंसा।	१४५	४

क्रमांक	नाम कवि	विषय	पृष्ठ	पङ्क्ति
१८	मल्लूक दास	हरिगुण वर्णन॥	१५३	५
१९	मोती लाल	शुक्राचार्य्य के जन्म की कथा॥	१५५	६
२०	कृपा राम	कृपणता सहनशीलता और मनोबन्धनता का वर्णन॥	१६५	८
२१	क्षेम करण	भोजन प्रकार का वर्णन	१८०	४
२२	सीता रामदास	रामनवमी की प्रशंसा॥	१८२	६
२३	चरण दास	स्वरोदय ज्ञान वर्णन॥	१८२	५
२४	भिखारी दास	छन्दस्स ङ्ख्या का वर्णन॥	१८३	५
२५	रामनाथ प्रधान	घोड़े की प्रशंसा॥	१८४	८
२६	क्षेम करण	हाथी की प्रशंसा॥	१८५	२
२६	महाराज मान सिंह	वसन्त ऋतु वर्णन॥	१८५	६

क्रम संख्या	नाम कवि	विषय	पृष्ठ	पंक्ति
२२	क्षेम करण	तथा॥	१९७	५
२७	अयोध्याप्रसाद	तथा॥	१९८	५
२८	शिवप्रसन्न	ग्रीष्म ऋतु वर्णन॥	१९९	३
२७	अयोध्याप्रसाद	वर्षा ऋतु वर्णन॥	२००	८
१	महेशदत्त	तथा॥	२०१	८
२९	श्रीपति	तथा॥	२०१	३
३०	पद्माकर	तथा॥	२०२	८
२९	श्रीपति	शरद ऋतु वर्णन॥	२०३	२
३०	पद्माकर	हिम ऋतु वर्णन॥	२०३	७
,,	,,	शिशिर ऋतु वर्णन॥		
३१	केशव दास	श्री राम चन्द्र और परशुराम का मिलन॥	२०४	५
३२	हिमाचलराम	नाग लीला॥	२१४	१५
३३	रङ्गाचार	ध्रुव और नारद की भेंट में ज्ञान वर्णन॥	२१६	२

संख्या	नाम कवि	विषय	पृष्ठ	पंक्ति
३४	प्रिया दास	भक्ति की प्रशंसा॥	२२२	६
३५	मीरा	ईश्वराराधन के विषय में॥	२२७	६
३६	देवदत्त	मीरा की प्रशंसा॥	२२८	२
३७	नाभा दास	भक्तों की गणना॥	२२८	६
,,	,,	श्रीमद्भागवत की प्रशंसा तथा॥	२२९	३
३९	क्षेम करण		२२९	६
३८	दास कवि	तुलसीदास जी की प्रशंसा	२३०	४
३९	वंशीधर	राम नाम का माहात्म्य॥	२३३	६
४०	जानकी दास	तथा॥	२३४	८
४१	मति राम॥	श्रीकृष्ण चरित वर्णन तथा॥	२३५	८
४२	राम सिंह		२३६	५
४३	सूर दास	विशुपद	२३६	४
४४	गिरिजा दत्त	विराग का वर्णन॥	२३८	६

नम्बर	नाम कवि	विषय	पृष्ठ	पङ्क्ति
४५	सुन्दरकवि	साङ्ख्यशास्त्रवर्णन॥	२४०	४
४६	नरहरि	शिक्षा॥	२४१	२
४७	हरिनाथ	रीवां के राजा की प्रशंसा॥	२४७	४
४८	रसरवानि	विराग॥	२४८	२
४९	गदाधर	तथा॥	२४८	४
१	महेशदत्त	अष्टादश पुराणोंकी सङ्ख्या॥	२४९	६
,,	,,	विष्णु के २५अवतारों के नाम॥	२५०	७
,,	,,	बारह मासा॥	२५१	४
२	तुलसीदास	सब ग्रन्थों की कुछ २ कविता॥	२५५	३
५०	चन्द्रकवि	सेना देखकर पशिमा लिक का भागना॥	२५८	८

पंक्ति	नाम कवि	विषय	पृष्ठ	पंक्ति
५१	शिव प्रसाद	शङ्कर जी की प्रशंसा	२६१	८
१	महेश दत्त	जिन २ कवियों की कविता इस ग्रन्थमें है उन के नाम॥	२६२	६
,,	,,	इस ग्रन्थमें जो २ छन्द हैं उन के नाम॥	२६३	८
,,	,,	जिस प्रकार से यह ग्रन्थ बना है उस का वर्णन॥	२६४	५
,,	,,	ग्रन्थ समाप्ति के मासादि का वर्णन॥	२६४	३
,,	,,	इस ग्रन्थ के पद्यों की सङ्ख्या॥	२६५	५
		कवियों का वृत्तान्त॥	२६६	४
		कठिन शब्दों का कोश॥	२८८	८

श्रीसच्चिदानन्दमूर्त्तयेनमः

काव्यसङ्ग्रह॥

महेशदत्त कवि॥

गणेशजी की वन्दना

दोहा॥

गजमुख सुखकर दुख हरण तोहिं कहौं शिरनाय
कीजे यश लीजे विनय दीजे ग्रन्थ बनाय १

परमेश्वर का धन्यवाद

दोहा॥

जगदीश्वर को धन्य जिन उपजायो संसार॥
क्षिति जल नभ पावक पवन करि इनको विस्तार २
नृपहि दास दासहि नृपति पवि तृण गिरिहि पषान
जलधि स्वल्प मरुथल सरहि उदधि करै क्षण मान ३

धनद रङ्क रङ्कहि धनद नीचहि करत महान ॥
क्षणहि महा नहिं नीच जो समरथ रूपा निधान ४
ना गुण गण जो कहि सकै अस को जग मति धीर
सृजत अवत जग हरत है विधि हरि रुद्र शरीर ५
वरु महि रज गिनती करै नभ तारे गिनि लेय ॥
विन्दु गिने वरु वृष्टि के विभु गुण किमि कहि देय ६
प्रति जन कोटिन मुख मिलै प्रति मुख रसना कोटि
प्रति रसना कोटिन बसैं शेष शारदा मोटि ७
निशि वासर वर्णन करैं जब लग चन्द्र पतङ्ग
पर ईश्वर गुण निकर को कहि न सकैं एक अङ्ग ८
यासों मैं नहिं कहि सकत कैसो है जगदीश ॥
है जैसो ताके चरण प्रणवौं धरि निज शीस ९

ग्रन्थारम्भ के मास तिथ्यादिका वर्णन ॥

घनाक्षरी ॥

ओम राम नन्द चन्द्र १९३० संवत बल पक्ष
शुचि शुचि मास तिथि सोहैं ७ बुधवार मैं ॥
भाद्रा कृष्ण सङ्ग मघे शक्ल विघ्न करै ॥
अग्नि नाग नाग पृथ्वी १८७३ ई० सन सार मैं ॥

दूसरी जोलार्द्ध श्री कालिन ब्रोनिङ्क वीर ॥
करुणा शरीर को निदेश धै लिखार मैं ॥
यामें कवितार्द्ध न बडार्द्ध न छुटार्द्ध मोरि ॥
लिख्योंयथा तथ्य ग्रन्थ देख्यो जो प्रचार मैं १०

तुलसीदासजी॥

मित्रता के विषय में॥

चौपार्द्ध॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी
तिन्हहिं विलोकत पातक भारी।
निज दुख गिरि सम रज करि जाना
मित्र के दुख रज मेरु समाना ११
जिन के असमति सहज न आई
ते शठ हठि कत करत मिताई।
कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा
गुण प्रगटै अवगुणहिं दुरावा १२
देत लेत मन शङ्क न धरही॥
बल अनुमान सदा हित करही

विपति काल कर शत गुण नेहा
श्रुति कह सन्त मित्र गुण एहा १३
आगे कह मृदु वचन बनाई॥
पीछे अनहित मन कुटिलाई
जाकर चित अहि गति सम भाई
अस कुमित्र परि हरे भलाई १४
सेवक शठ नृप कृपण कुनारी॥
कपटी मित्र शूल सम चारी॥
सखा शोच त्यागहु बल मोरे
सब विधि करब काज मैं तोरे १५

छन्द और रावण की वार्त्ता॥

चतुरता और धृष्टता के विषय में चौपाई॥

यहाँ आन जागे रघुराई॥
पूँछा मत सब सचिव बुलाई।
कहहु बेगि का करिय उपाई
जामवन्त कह पद सिर नाई १६

सुनु सर्व्वज्ञ सकल उर बासी॥
बुधि बल तेज धर्म्म गुण रासी
मन्त्र कहब निज मति अनुसारा
दूत पठाइय बालि कुमारा १७॥
नीक मन्त्र सब के मन माना॥
अङ्गद सन कह कृपानिधाना
बालि तनय बल बुधि गुण धामा
लङ्का जाहु तात मम कामा १८
बहुत बुझाय तुम्हहिं का कहऊँ
परम चतुर मैं जानत अहऊँ॥
काज हमार तास हित होई॥
रिपु सन करब बतकही सोई १९

सोरठा॥

प्रभु आज्ञा धरि सीस चरण बन्दि अङ्गद उठ
सोइ गुण सागर ईश राम कृपा जा पर करहु २०
स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहिं आदर दयउ
अस बिचारि युवराज तनु पुलकित हर्षित हिय २१

चौपाई॥

बन्दि चरण उर धरि प्रभुताई॥
अङ्गद चल्यउ सबहि सिरनाई
प्रभु प्रताप उर सहज असङ्का
रण बांकुरा बालि सुत बङ्का २२
पुर पैठत रावण कर बेटा॥
खेलत रहा सो होइ गै भेंटा॥
बातहि बात कर्ष बढि आई॥
जुगल अतुल बल पुरुष तरुणाई २३
तेहि अङ्गद कहं लात उठाई
गहि पद पटक्यो भूमि भमाई
निशिचर निकर देखि भट भारी
जहं तहं चले न सकहिं पुकारी २४
एक एक सन मर्म्म न कहहीं॥
समुझि तासु बध चुप ह्वै रहहीं
भयउ कोलाहल नगर मझारी
आवा कपि लङ्का जेहिं जारी २५

अबधौं काह करैं करतारा।
अति सभीत सब करैं विचारा
बिन पूँछे मग देहिं बताई॥
जिहि चितवै सो जाय सुखाई २६

दोहा॥

गयो सभा घर बार तब सुमिरि राम पद कञ्ज
सिंह ठवनि इत उत चितै धीर वीर बल पुञ्ज ३२

चौपाई॥

त्वरित निशाचर एक पठावा।
समाचार रावणहि जनावा।
सुनत वचन बोल्यो दशशीशा
आनहुँ बोलि कहाँ कर कीशा १
आयसु पाय दूत चहु धाये॥
कपि कुञ्जरहि बोलि लै आये
अङ्गद दीरघ दशानन जैसा
सहित भाग फज्जल गिरि तैसा २
भुज विटप शिर शृङ्ग समाना
रोमावली लता तरु नाना॥

मुख नासिका नयन अरु काना।
गिरि कन्दरा खोह अनुमाना३०
गयो सभा मन नेकु न मुरा॥
बालि तनय अति बल बाँकुरा
उठे सभासद कपि कहुँ देखी।
रावण उर भा क्रोध बिसेषी३१

दोहा॥

यथा मत्त गज यूथ महँ पञ्चानन चलि जाय
राम प्रताप सँभारि उर बैठ सभहि सिर नाय३२

चौपाई॥

कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर
मैं रघुबीर दूत दसकन्धर॥
मम जनकहि तोहि रही मिताई
तव हित कारण आयउँ भाई३३
उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती।
शिव विरञ्चि पूज्यहु बहु भाँती।
बर पायहु कीन्हेहु सब काजा॥
जीत्यहु लोकपाल सुर राजा३४

नृप अभिमान मोह वश किम्बा
हरि आनेहु सीता जगदम्बा॥
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा
सब अपराध क्षमहिं प्रभु तोरा ३५
दशन गहहु तृण कण्ठ कुठारी
पुरजन सङ्ग सहित निज कारी
सादर जनक सुता करि आगे॥
यहि विधि चलहु सकल भयत्यागे ३६

दोहा॥

विश्वरूप रघुवंश मणि त्राहि त्राहि अब मोहिं
सुनते आरत वचन प्रभु अभय करैंगे तोहिं ३७

चौपाई॥

रे कपि पोच बोलु सम्भारी॥
मूढ न जानसि मोहिं सुरारी॥
कहु निज नाम जनक कर भाई
केहि नाते मानिये मिताई ३८
अङ्गद नाम बालि कर बेटा॥
तासों कबहुँ भई तुहिं भेटा॥

अङ्गद वचन सुनत सकुचाना।
रहा बालिवानर मैं जाना ३९।।
अङ्गद त्यही बालिकरबालक
उपज्यहु वंश अनल कुल घालक
गर्भन रवस्यो वृथा तुम जाये।
निज मुख तापस दूत कहाये ४०
अब कहु कुशल बालि कहँ अहई
बिहँसि वचन अङ्गद अस कहई
दिन दश गये बालि पहँ जाई।।
पूछ्यहु कुशल सखा उर लाई ४१
राम विरोध कुशल जस होई।।
सो सब तुमहि सुनाइहि सोई।।
सुनु शठ भेद होय उर ताके ।।
श्री रघुवीर हृदय नहिं जाके ४२

दोहा।।

हम कुल घालक सत्य तुम कुल पालक दश शीस
अन्ध उबधिर न कहहिं अस श्रवण नयन नव बीस ४३

चौपाई॥

शिव विरञ्चि सुर मुनि समुदाई।
चाहत जासु चरण सेवकाई॥
तासु दूत है हम कुल बोरा॥
ऐसी मति उर बिहरु न तोरा ४४
सुनि कठोर बाणी कपि केरी॥
कहत दशानन नयन तरेरी॥
खल तव वचन कठिन मैं सहऊँ
नीति धर्म्म सब जानत अहऊँ ४५
कह कपि धर्म्म शीलता तोरी॥
हमहुँ सुना कृत पर त्रियचोरी
देखउँ नयन दूत रखवारी
बूड़ि न मरहु धर्म्म व्रत धारी ४६
नाक कान बिन भगिनि निहारी
क्षमा कीन्ह तुम धर्म्म विचारी
धर्म्म शीलता तव जग जागी।
पावा दर्श हमहुँ बड़ भागी ४७

दोहा॥

जनि जल्पसि जड़ जन्तु कपि सठ विलोकु मम बाहु
लोकपाल बल विपुल शशि रसन हेतु जिमि राहु ४८
पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन पर बास॥
शोभित भयो मराल इव शम्भु सहित कैलास ४९

चौपाई॥

तुम्हरे कटक माँझ सुनु अङ्गद।
मो सन भिरिहि कौन योधा बद॥
तव प्रभु नारि बिरह बल हीना।
अनुज तासु दुख दुखित मलीना ५०
तुम सुग्रीव कूल द्रुम दोऊ॥
अनुज हमार भीरु अति सोऊ
जाम्बवन्त मन्त्री अति बूढ़ा॥
सो किमि होय समर आरूढ़ा ५१
शिल्प कर्म जानत नल नीला
है कपि एक महा बल शीला॥
आवा प्रथम नगर जेहिं जारा
सुनि हँसि बोल्यउ बालिकुमारा ५२

सत्य वचन कह निशि चरनाहा
साँचहु कीन्ह कीश पुर दाहा॥
रावण नगर अल्प कपि दहई।
सुनि अस वचन सत्य को कहई ५३
जो अति सुभट सराह्यहु रावन।
सो सुग्रीव केर लघु धावन॥
चले बहुत सो वीर न होई॥
पठवा खबरि लेन हम सोई ५४

दोहा॥

सत्य नगर कपि जारेउ बिनप्रभु आयसु पाय
फिरि न गयउ सुग्रीव पहँ त्यहि भय रहो लुकाय ५५
सत्य कहसि दश कंठ सब मोहि न सुने कछु कोह
कोउ न हमरे कटक अस तुम सन लरत जो सोह ५६
प्रीति बिरोध समान सन करिय नीति असि आहि
जो मृगपति बध मेडुक हि भलो कहै को ताहि ५७
यद्यपि लघुता राम कहँ तोहिं बधे बड़ दोष॥
तदपि कठिन दश कण्ठ सठ क्षत्रिजाति कर रोष ५८

हँसि बोल्यो दश मौलि तब कपि कर दुगुण एक
जो प्रति पालै तासु हित करै उपाय अनेक ४८

चौपाई॥

धन्य कीश जो निज प्रभु काना
जहँ तहँ नाचहिं परि हरि लाजा
नाच कूद कर लोक रिझाई॥
पति हित करहिं धर्म्म निपुणाई ६०
अङ्गद स्वामि भक्त तव जाती
प्रभु गुण कस न कहसि यहि भाँती
मैं गुण गाहक परम सुजाना
तव कटु बचन करौं नहिं काना ६१
कह कपि तव गुण गाहक ताई
सत्य पवन सुत मोहिं सुनाई॥
बन विध्वंसि सुत बधि पुर जारा
तदपि न त्यहिं कछु कृत अपकारा ६२
सोइ विचारि तव प्रकृति सुहाई
दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई॥

देख्यउँ आयजो कछुकापिभाषा
तुम्हरे लाज न रोष न माखा ई३

दोहा॥

बक्र उक्ति धनु वचन शर हृदय दह्यो रिपुकीश।
प्रति उत्तर सन सिन्हु मनहुं काढ़त भटदश शीस ई४

चौपाई॥

जो असि मति पितु खायहुकीशा
कहि अस वचन हंसा दश शीसा
पितहि खाय अब खात्यौं तोही
अब ही समुझि परा कछु मोही ई५
बालि विमल यश भाजन जानी॥
हतौं न तोहिं अधम अभिमानी
कछु रावण रावण जग केते॥
मैं निज श्रवण सुने सुनुतेते ई६
रावण एक महाबल गर्ब्बा॥
जीतन चल्यौ सुरासुर सर्ब्बा॥
सागर उतरि पार सो गयऊ॥
नारिचुन्द सो देखत भयऊ ई७

तिनसन कहिसि पतिन पहँ जाहू॥
कहु एक आयहु निशिचर नाहू
तब हम तिन्हे जीति सङ्गामा॥
लै जैहौं नृप को निज धामा ६८
सुनत वचन एक जरठ रिसानी।
धाय चरण गहि गगन उड़ानी।
गहे दूरि धरि धरि झक झोरा।
डारिसि सिन्धु मध्य अति जोरा ६९

दोहा॥

बयो घागाध अचेत ह्वै मरे न विप्र प्रसाद॥
फाका तिन ऐ बल्यर पुनि दिये न हर्ष विषाद ७०

चौपाई॥

एक गयन को कहौं कहानी॥
जीते चल्यो गिरिहि अभिमानी
गयो निकट अति गीत न मरेऊ
चलित गात विकल भय फिरेऊ ७१
चलि जीतन एक गयो पताला॥
लखा बाँधि शिशुन ह्वय शृगाला॥

खेलहिं बालक मारहिं जाई ॥
दया लागि बलि दीन्ह छुड़ाई ७२
एक बहोरि सहस भुज देखा ॥
धाय धरा जन जंतु विशेषा ॥
कौतुक लागि भवन लै आवा
सो पुलस्त्य मुनि जाय छुड़ावा ७३
बहु प्रकार मुनि ताहि सिखावा
गयो स्वपुर पर लाज न आवा ।
अति निलज्ज मैं जानत ताही
तामस को अपमान लहाही ७४

दोहा ॥

एक कहत मोहिं सकुच अति रह्यो बालिकी कौर
तिन महँ रावण तें कवन सत्य कहे तजि मौर ७५

चौपाई ॥

सुनु शठ सोइ रावण बल शीला
हर गिरि जान जासु भुज लीला

जानु उमापति जासु सुरारी ॥
पूजेउँ जथहि शिरसुमन चढ़ारी ७६
शिर सरोज निज करन उतारी ॥
पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी ॥
भुज विक्रम जानहिं दिकपाला।
धरठ अजहूँ जिन के उर शाला ७७
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई॥
जब जब भिरउँ जाय बरिआई
जिन के दशन कराल न फूटे ॥
उर लागत मूलक इव टूटे ७८
जासु चलत डोलत इमि धरनी
चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी
सोइ रावण जग विदित प्रतापी।
सुने न श्रवण अलीक अलापी ७९

दोहा॥

त्यहि रावण कहँ लघु कहसि नर कर करसि बखान
रे कपि बर्ब्बर खर्ब्ब खल तब न जान्यउ बल आन ८०

चौपाई॥

मुनि अङ्गद सकोप कह बानी।
बोलु सँभारि अधम अभिमानी।
सहस बाहु भुज गहन अपारा॥
दहन अनल कुल जासु कुठारा ८१
जासु परशु सागर खर धारा॥
बूड़े नृप अगणित बहु बारा॥
तासु गर्व्व जेहि देखत भागा।
सो नर किमि दश कण्ठ अभागा ८२
राम मनुज कसरे रट बङ्का॥
धन्वी काम नदी पुनि गङ्का॥
पशु सुर धेनु कल्प तरु रूखा।
अन्न दान अरु रस पीयूषा ८३
वैनतेय खग अहि सहसानन
चिन्तामणि की उपल दशानन
सुनु मति मन्द लोक वैकुण्ठा॥
लाभ कि रघुपति भक्ति अकुण्ठा ८४

दोहा॥

सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुरजारि
कसरे शठ हनुमान कपि गयो जो तवसुत मारि ८५

चौपाई॥

सुनु रावण परिहरि चतुराई ॥
भजसि न कृपासिन्धु रघुराई ॥
जो रवल भयसि राम कर द्रोही।
ब्रह्म रुद्र सकराखि न तोही ८६
मूढ़ मृषा जनि मारसि गाला।
राम वैर होइहि अस हाला ॥
तव शिर निकर कपिन के आगे
परिहैं धरणि राम शर लागे ८७
ते तव शिर कन्दुक सम नाना
खेलहिं भालु कीश चौगाना।
जबहि समर कोपहिं रघुनायक
छुटहिं अति कराल बहु शायक ८८
तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा
अस विचारि भज राम उदारा॥

सुनत वचन रावण फिर जरा ॥
जरत महानल महँ घृत परा ८४

दोहा ॥

कुम्भकर्ण सम बन्धु मम सुत प्रसिद्ध शक्रारि
मम बल श्रवण सुन्यासि शठ जित्यौं चराचर झारि ८५

चौपाई ॥

शठ शठ वा मृग जोरि सहाई
बाँध्यो सिन्धु ग्रहे प्रभुताई ॥
लाँघहिं खग अनेक बारीशा
शूर न होहिं सो सुनु शठ कीशा ८६
मम भुज सागर जल बल पूरा
जहँ बूड़े सुर नर बहु शूरा ॥
बीस पयोधि अगाध अपारा।
को अस वीर जो पावै पारा ८७
दिकपालन पै नीर भरावा ॥
भूप सुयश खल मोहिं सुनावा

जोपै समर सुभट तव नाथा।
पुनि पुनि कहसि जासु गुण गाथा ९३
तो बसीठ पठवत केहि काजा॥
रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा।
हर गिरि मथन निरखि मम बाहू
पुनि कपि पठ निज प्रभुहि सराहू ९४

दोहा॥

सूर कवन रावण सरिस स्वकर काटि निज शीस
हुनत अनल महँ बार बहु हुर्षित साखि गिरीश ९५

चौपाई॥

जरत विलोकउँ जबहिं कपाला
विधि के लिखे अंक निज भाला
नरके कर आपन बध बाँची॥
हँस्योंउँ जानि विधि गिरा असाँची ९६
सो मन समुझि त्रास नहिं मोरे
लिखा विरंचि जरठ मति भोरे।

ग्यान वीर बल शठ मम आगे ॥
पुनि पुनि कहसि लाज परित्यागे ९७
कह अङ्गद सलज्ज जग माँही
रावण तोहि समान कोउ नाही
लाज वत्त नव सहज स्वभाऊ
निज गुण निज मुख कहै न काऊ ९८
सिर अरु सैल कथा चित रही।
ताते बार बीस तैं कही ॥ ॥
सो भुज बल राख्यो उर घाली
जीत्यो सहस बाहु बलि बाली ९९
सुनु मति मन्द देह अब पूरा॥
काटे शीस न होहु हि शूरा॥
बृन्द्र जालि कहँ कहिय न बीरा
काटै निज कर सकल शरीरा १००

दोहा॥

जरहिं पतङ्ग मोह वश भार बहैं खर बृन्द
ते नहि शूर कहा वहीं समुझि देखु मतिमन्द १०१

चौपाई॥

अब जनि बत बढ़ाव खल करई।
सुनु मम वचन मान परिहरई।
दसन गहहु मुख में न बतीठी आवा।
अस विचारि रघुबीर पठावा १०२
बार बार अस कहा कृपाला।
नहिं गजारि यश बधे सृगाला।
मन महँ समुझि वचन प्रभु केरे।
सहेउँ कठोर वचन शठ तेरे १०३
नहिं तो करि मुख भञ्जन तोरा।
लै जातेउँ सीतहि बर जोरा॥
जाना तव बल अधम सुरारी।
सूने हरि आनी परनारी १०४
तैं निशिचर पतिगर्व्व बहूता।
मैं रघुपति सेवक कर दूता॥
जो नृप राम अपमानहि हरऊँ।
त्वहि देखत अस कौतुक करऊँ १०५

दोहा॥

तोहिं पटकि महि सेन हति चौपट करि तव गाउँ
तव युवतीन्ह समेत सठ जनक सुतै लै जाउँ १०६

चौपाई॥

जो अस करउँ न तदपि बड़ाई।
मुये बधे नहिं कछु मनुसाई॥
कौल काम वश कृपण विमूढ़ा।
अति दरिद्र अयशी अति बूढ़ा १०७
सदा रोगवश सन्तत क्रोधी॥
विष्णु विमुख श्रुति सन्त विरोधी
तनु पोषक निन्दक अघखानी।
जीवत शव सम चौदह प्रानी १०८
अस विचारि खल बधौं न तोही
अब जनि रिस उपजावसि मोही।
सुनि सकोप कह निशिचर नाथा।
अधर दशन दसि मीजत हाथा १०९
रे कपि अधम मरण अब चहसी
छोटे बदन बात बड़ि कहसी।

कटु जल्पसि शठ बुधि बल जाके
बल प्रताप बुधि तेज न ताके २१०

दोहा॥

अगुणा अमानि विचारि त्यहि पिता दीनबनवास
सो दुख अरु युवती विरह पुनि निशि दिन मम त्रास २११

जिन के बल कर गर्व त्यहिं ऐसे मनुज अनेक
खाहिं निशाचर दिवस निशि मूढ समुझु तजि टेक २१२

चौपाई॥

जब ते कीन राम के निन्दा॥
क्रोधवन्त तब भयो कपिन्दा॥
हरि हर निन्दा सुनैं जे काना।
होय पाप गो घात समाना २१३
कट कटाय कपि कुञ्जर भारी॥
दोउ भुज दण्ड तमकि महि मारी
डोलत धरणि सभा सद त्रसे॥
चले भागि भय मारुत ग्रसे २१४
गिरत दशानन उठ्यो सँभारी
भूतल परे मुकुट दश चारी॥

कछु त्यैं लै निज शिरन सम्हारे ॥
कछु अङ्गद प्रभु पास पधारे ११५
आवत मुकुट देखि कपि भागे
दिनहीं लूक परन किधि लागे ॥
की रावण करि कोप चलाये ॥
कुलिश चारि आवत अति धाये ११६
कह प्रभु हँसि जनि हृदय डराहू ।
लूकन अशनि केतु नहिँ राहू ॥
ये किरीट दशकन्धर केरे ॥ ॥
आवत बालि तनय के प्रेरे ११७ ॥

दोहा ॥

नडुपि पवन सुत करगहे आनि धरे प्रभु पास ॥
कौतुक देखहिँ भालु कपि दिन करसरिस प्रकाश ११८
वहाँ सुकोपि दशानन सब सन कहत रिसाय ॥
धरहु कपिहि धरि मारहू सुनि अङ्गद मुसुकाय ११९

चौपाई ॥

कहा कोपि दशकन्ध रिसाई ॥
धरि मारहु कपि भागि न जाई ॥

यहि विधि वेगि सुभट सब धावहु
खाउ भालु कपि जहँ तहँ पावहु १२०
मर्कट हीन करहु मैं जाई॥
जिअत धरहु तापसौ दोऊ भाई॥
पुनि सकोप बोल्यो युवराजा॥
गाल बजावत तोहिं न लाजा १२१
मरु गल काटि निलज कुल घाती
बल विलोकि विदरत नहिं छाती
रे तिय चोर कुमारग गामी॥॥
खल मलराशि मन्दमति कामी १२२
सन्निपात जल्पसि दुर्व्वादा॥
भयसि कालबश खल मनुजादा
याको फल पावहुगे आगे॥
बानर भालु चपेटन लागे १२३॥
राम मनुज बोलत असबानी।
गिरै न तव रसना अभिमानी।
गिरिहै रसना संशय नाहीं॥
शिरन समेत समर महिं माहीं १२४

सोरठा ।।

सो नर कस दसकन्ध बालिबध्योजिनएकशर
बीसहु लोचन अन्धिकतव जन्मकुजातिजड़ १२३
तव शोणित की प्यास तृषित रामशायक निकर ।।
तज्योंतोहिंत्यहि त्रासकटु जल्पसि निष्प्रभ प्रथम १२४

चौपाई ।।

मैं तव दशन तोरेव लायक ।।
आयसु मोहिं न दीन रघुनायक
असरिस होत दशौं मुख तोरौं ।
लङ्क गहि समुद्र महँ बोरौं १२५
गूलर फल समान तव लङ्का ।।
बसहिं मध्य जनु जन्तु अशङ्का ।।
मैं बानर फल खात न बारा ।।
आयसु दीन न राम उदारा १२६
युक्ति सुनत रावण मुसुकाई ।।
मूढ़ सिखे कहं बहुत भुशुण्डी ।।

बालि कबहुँ मम गाल न मारा॥
मिलि तपस्विन्ह भयसि लवारा १२८
माँची मैं लवार भुज बीहा॥
जो न उपारौं तव दस जीहा॥
राम प्रताप समुझि कपि कोपा॥
सभा माँझ पन करि पद रोपा १३०
जो मम चरण सकइ सठ टारी।
फिरहिं राम सीता मैं हारी॥
सुनहु सुभट सब कह दससीसा॥
पद गहि धरणि पछारहु कीसा १३१
इन्द्रजीत आदिक बल धामा॥
हर्षि उठे जहँ तहँ भट नामा॥
झपटहिं बल करि विपुल उपाई
पद न टरै बैठहिं सिर नाई १३२
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती॥
टरै न कीस चरण यहि भाँती।
पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी॥
मोह विटप नहिं सकहिं उपारी १३३

दोहा ॥

भूमि न छाड़त कपि चरण देखत रिपु मद भाग।
कोटि विघ्न जिमि सज्जन कहुं तदपि नीति नहिं त्याग १३४

चौपाई ॥

कपि बल देखि सकल हिय हारे
उठा आप युवराज प्रचारे ॥ ॥
गहत चरण कह बालि कुमारा
मम पद गहे न तोर उबारा १३५॥
गहसि न राम चरण शठ जाई ॥
सुनत फिरा मन अति सकुचाई
भयउ तेज हत श्री सब गई ॥
मध्य दिवस जिमि शशि मोहई १३६
सिंहासन बैठा शिर नाई ॥
मानहुं सम्पति सकल गँवाई ॥
जगदाधार प्रणत पति रामा ॥
तासु विमुख किमि लहै विश्रामा १३७
उमा राम कर भृकुटि विलासा ॥
होय विश्व पुनि पावै नाशा ॥

तृणते कुलिश कुलिश तृण करहीं
तासु दूत पण कहु किमि टरहीं २३८
पुनि कपि कही नीति विधि नाना
मानत नाहिं काल नियराना ॥
रिपु मद मथि प्रभु सुयश सुनाया
यह कपि चला बालि नृप जाया २३९
अबहीं मुख का करौं बड़ाई ॥
हति हौं रावत खेलाय खेलाई ॥
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा ।
सो सुनि रावण भयो दुखारा २४०
यातुधान अङ्गद बल देखी ॥
भय व्याकुल सब हृदय विशेषी
कहहिं विचारि सकल मनमाहीं
रावण कीन्ह कार्य्य भल नाहीं २४१

दोहा ॥

रिपु बल धर्षि हर्षि हिय बालि तनय बल पुञ्ज ॥
सजल नयन तनु पुलक अति गहे राम पद कञ्ज २४२

मदन गोपाल कवि

संसार की अनित्यता का वर्णन॥

दोहा॥

चूपतिय शोक विनाशहित कह्यो ऋषभ वैराग
सुनजाहिके नरनको मोहजनम सब भाग १

ऋषभवाक्य॥

चामर छन्द ॥

वेहिव्यर्थ कौन हेतु रोय आँसु फोरहू॥
आदि कौन भो कहो मरो सु कौन जोरहू।
जन्म काल ज्वान बृद्ध मृत्यु देह धर्महू।
तोय फेन तुल्य नल्ल जानि मोह कर्महू २
विष्णु माय ने भये गुणोजु सत्व आदिन्हे।
सृष्टि सर्व हैं रची तिन्हों त्रलोक लोक हैं।
सत्व भूत देवता रजो मनुष्य मानिये॥
जीव गाय पक्षि कीट नाम सारि जानिये ३

वासना अधीन जीव जाति सर्व सङ्ग है ॥
पुण्य पाप कर्म ते सुखी दुखी सबै लहै ॥
कल्पमान आयु जासु तौन देव नाम है ॥
सर्व दोष युक्त देह को मनुष्य गर्व ४
देह जन्म देखि हर्ष मृत्यु में न रोइये ॥
है न आदि नाश जाय कैन तुल्य जोइये
गर्भनाश होत कोय बाल ज्वान बूढ़ऊ
पूर्व कर्म जासु जौन तौन भोग गूढ़ऊ ५
कर्म है अलङ्घ्य ने अनित्य देह सर्वदा ॥
याहि ते न शोचु मातु शोचु है न पुत्रदा ॥
नित्य स्वप्न कौन को जु द्वन्द्व जाल नासही ।
देहयोग भेद छाँड़ि झूठ जानु वैसही । ६ ॥
आपने गये जु जन्म कोटि कोटि के तबै ।
कौन माय कौन तात कन्यका नु कौन के ।
तौन भूत तौन बाप है कहाँ कहो सबै ॥
याहि जानि पुत्र शोक छोड़ु मोह को अबै ७
भूमि तेज तोय वायु व्योम भूत पाच क्यों ॥
चर्म रक्त मांस मेद अस्थि मज्जा बीज ज्यों

हैं शरीर में सबै मलादि मूत्र विष ज्यों।
रानि शोक भाइ छोडु जानि पुत्र वादियों ८
मन्त्र तन्त्र औषधादि मृत्यु जीत होत कै
तौ सबै सुजान लोग लोक तेन जात रहे
मृत्यु एक की सु आनु और मृत्यु आनकी
यौं विचार चित्त में कहो शिवा शिवान की ९
शम्भु की कथा सुधा पियै जो चित्त शोधिके
लोक भोग मद्य छोडि होय शम्भु बोधिके।
राज पत्नि यत्न छोडु शोक जो कुतर्क तें॥
गौरि नाथ तें सनाथ ह्वोहु भाजि नर्क तें १०

दोहा॥

यहि विधि योगी नृपतियहि समुझायो काहि ज्ञान
बोली सो तब ताहि सों पद छै जानि महान ११

नारायण दास कवि॥

विद्या की प्रशंसा॥

दोहा॥

अजर अमर की भांति ह्वै विद्या धनहिं बढाव॥
मनहुं मीचु चोंदी गहे दंत विलम्ब न लाव १॥

विद्याधन सब धनन से सन्त कहत सरदार ॥
मोल बढ़ो नहिं घटत घर दिन दिन होत उदार २
विद्या देत विनीत करि विनय बड़ाई देत ॥
पढ़त जात धन पाइये दान भोग सुख हेत ३
दारुण नृपति समुद्र सों विद्या नदी समान ॥
ले पहुँचावै नीच हू लाभ भाग्य परमान ४
विद्या नदी नदीश नृप निचहु मिलावै हाल
दारुण दानि दया करै होय जो भाग्य कपाल ५
जासों सब संशय मिटै ज्ञान देखा सो देखु ॥
पढ़िवो पोढ़ी आँखि है अपढ़ अन्धकारि लखु ६
सोई भो जाके भये ऊंच होय निज गोत ॥
जनन मरण संसार में मुये कौन फिरि होत ७
एकै साधु पढ़ा भलो पूत सिंह सरदार ॥ ॥
कुल उजियारो चन्द्र ज्यों करै धरै शिरभार ८
गुणी गनत जाकी नहीं लीक भई अगलोनि
पुत्रवती सुत ताहि से होत सो बन्ध्या कोनि ९
दान तपस्या शूरता विद्या लाभ वरवानि ॥
भयो न जाके पूत सों मातु मूत के जानि ॥ १०

अति दुख करि तप जिन कियो तीरथ राज प्रयाग
ताको सुत धन धर्म्म सौं सदा रहै बड़ भाग ११

चौपाई॥

अर्ज्जन करत आप अल मार्द्द
ताको सम्पति रही न जार्द्द॥ ॥
पूर्व्व जन्म कीन्हो जो धर्म्मा॥
सोई भाग्य कहावै कर्म्मा॥१२
ताते भाग्य चही अनुकूला॥ ॥
यत्न करी पुरुषारथ मूला॥
ज्यों माटी करता कर लेई॥
कीन्हों चहै सोई करि देई १३
यह उपरवान लोग सब गावै
जैसा करै सो तैसा पावै॥
यासों विद्या पढ़िये भाई॥
बिन श्रम श्रम फल कहूं किन पाई १४

दोहा॥

पुरुष सिंह जो उद्यमी लक्ष्मी ताकी चेरि॥
भाग्य भरोसे जे रहैं कुपुरुष आवै टेरि १५

भाग्य भरोसेमन्द करि करु पौरुष तजि रोष।।
यत्न करै जो ना मिलै ताउ करै निर्दोष २६।
काक नाल के न्याय सौं निधि आगे जो होय
भाग्य भरोसे क्यों रहै हाथ पसारे लोय २७
मात पिता वैरी भये जिन न पढ़ाये बाल।
हंस समाज गये कहो बक के कौन हवाल १८
काञ्चन सङ्गति काँचज्यों मरकत मणि द्युतिहोइ
त्योंही सज्जन साथतें मूरख पण्डित होइ १९
नीच साथ बुधि नीच है सम सों रहै समान।।
बड़े साथ दिन दिन बढै पण्डित कहत प्रमान २०
काव्य शास्त्र के अर्थ में पण्डित बिनवत काल
व्यसन नींद अरु कलह में मूरख रहै बिहाल २१
पण्डित सुखसों करत हैं दान धर्म के भोग।।
अति दिन दूरुख लहत है सहस शोक भय रोग २२
यज्ञ दान तप शास्त्र अध्ययन सत्य क्षमा धृति संय।।
अरु अलोभ ये नव निधर्म के सार भाँति तें होय २३
अरे गिन जल बिन्दु घट क्रम क्रम सुनहु सुजान
विद्या औ धन धर्म की उपमा यहै निदान। २४

चालहु ते सिरिव लीजिये युक्ति कहत जो होय
रवि को जहाँ प्रकाश नहिं दीप प्रकाश्त लोय२५

सहायता और श्रम का वर्णन

दोहा॥

शुक्ल पक्ष जाने बिना देह निदरि मति डारि
एक टिटिहिरी समुद्र को व्याकुल कीन्हो मारि २६

चौपाई॥

पूँछी सिंह कथा है कैसी ॥
दमनक कही सुनो है जैसी ॥
समुद्र निकट टिटिहीरी जोरी ॥
बसे बसैं यद्यपि बहुतेरी ॥ २७
आव निकट वर्षा को काला ॥
पति सों कह्यो टिटिहिरी बाला ॥
वर्षा योग्य देखु कहुँ ठौरा ॥ ॥
नीको लागे जहँ कहुँ ओरा २८
टिटिहा कही जाउँ लै कहूँ ॥
यहि ते नीक ठौर है जहूँ ॥

कह्यो टिटिहिरी सुनिये नाथा
बार बार घर बूडैं पाथा २८
सो पुनि निज नारी सों कही ॥
अपनी शक्ति जनावा चही ॥
भामिनि सुनु अपने घर रहऊ
हौं काहू सों कछु नहिं कहऊं २९
करै सिन्धु विग्रह बिन काजा ॥
तौ फिरि हमहूं करब दगाजा ।
विहँसि विहँसि सो पति सो कही
नाथ बात नहिं ऐसी चही ३०
सागर सों तुम सों है केतो ॥
अन्तर तुम जानत हौ तेतो ॥
यद्यपि अन्तर बहु है प्यारी ॥
खगपति करहिं सहाय हमारी ३१
तब विश्वास वचन मन दीन्हें
चही ठौर पर स्थो कीन्हें ॥
तब समुद्र अण्डा हरि लीन्हें ।
देखौं शक्ति यहै मन कीन्हें ३२

तब दुख मानि दिटिहिरी रोई
नाथ जलधि सम्पति सब खोई
कष्ट परा तब हीं मैं कही ॥
तुम फिरि बात न राखी सही ३४
दिटिहा कह्यो तु जनि डरु प्यारी
यह कहि आपुहि बात बिचारी
सब पक्षिन कर मेला कीन्ह्यो
गरुड़हि की सेवा मन दीन्ह्यो ३५
गरुड़ गयो अपने प्रभु पासा
जौन करै वरुणालय वासा ॥
प्रलय सृष्टि अति पालन हेता
बाँधी धर्म्म कर्म्म सों सेता ३६
नारायण करुणा मय जौना।
दूजे झुका दूसरा कौना ॥
कुम्भज ऋषि कहुँ आयसु दीना
ऋषि तब गमन उदधि पह कीना ३७
देखा दिटिहि दिटिहिरी आई।
चौंचैं भरि भरि पानी लाई ॥

दौंदन सों वारू लै जाई॥
डारैं समुद्र मध्य तव आई ३८
दोहा॥
ऋषि पूंछीतब दिदिहिरिहि कहा करतुम दोय
कही दिदिहिरी हरिलियो खण्ड हमारो सोय ३९
चौपाई॥
नाते क्रोधहि कियो अपारा॥
समुद्रहि पाटि करब हम क्षारा।
जब जाइहि यह समुद्र सुखाई
तब हमरे जिय आनँद बधाई ४०
कुम्भज कही जलधि गहि राई
कब लगि याको पटि हौ धाई
सुनु ऋषि हमरे जिय की बाता
जो २ जन्म धरब हम ताता ४१
कौनिउं योनि म जन्म हमारा।
पाटब समुद्र न और विचारा॥
और न काज करन हम आवब
जन्महिं भये समुद्रहि पाटब ४२

समुद्र केर जब होइहि नाशा।
तब हमरे जिय होय सु पासा।
ये हमरे सब बालक खोये॥
बड़ अपराध किये दुख बोये ४३
जब याकी जर राखब नाहीं
तब हम सुख होइहि मन माहीं
कुम्भज ऋषि तब कियो विचारा
पक्षिन के दुख बड़ो अपारा ४४
तब कुम्भज ऋषि आचमन कीना
सबै समुद्र शोषि तब लीना॥
सागर व्याकुलता अति भयऊ
सागर जीव सबै अकुलयऊ ४५
तब समुद्र अण्डा सब आना।
पीड़ित मच्छ कच्छ अकुलाना
जलधि आय रावरे लै दीन्हों
दिढ़ दिढ़िहरी अण्डा लीन्हों ४६
सुरित भये मुनि अस्तुति कीन्ही
नाथ हमैं बहुते सुख दीन्हों॥

तब कुम्भज ऋषि पूंछी लीना॥
क्रोध तुम्हार गयो की पीना ४७
महाराज अब सब सुख भेंटा॥
जन्म जन्म कर दुख सब मेंटा॥
इतना सुनि कुम्भज ऋषि बोले
वचन सुधा सम अतिहि अमोले ४८

दोहा॥

अब तुम जाय यहाँते दूरि करौ कहुँ बास॥
जहाँ न यह जल पहुँचे तहाँ तुम्हार सुपास ४९

चौपाई॥

टिटिहि टिटिहिरिहि अस्तुति कीह्यौं.
जय अगस्त मुनि आज्ञा लीन्ह्यौं
नमस्कार करि दूनो चले॥
श्रावक अपने कर धरि भले ५०
जाय दूर तिन्ह कीन्ह्यो बासा।
जहाँ सुखहि कर अहै निवासा

पुनि सागर तब अस्तुति कीन्ही।
विजय भूमि पक्षिन कह दीन्ही ५१
जय कुम्भज ऋषि सुख के दाता।
अब जल छाँड़ि देहु तुम नाना
नाक उरग झष व्याकुल मरना॥
दीन दयालु अनुग्रह करना ५२
सुनि अस्तुति तब छोड़्यो पानी।
कुम्भज दीन दयालु सु दानी
भरेउ समुद्र सुरिवन सब भयऊ
जीवन केर दुःख सब गयऊ ५३
जलचर तब सब करहिं कलोला
एक एक करि जय जय बोला॥
तब कुम्भज ऋषि गमनत भयऊ
दुख समुद्र केर सब गयऊ ५४

दोहा॥

याही ते हौं कहत हौं अङ्गी अहू विचार॥
तेजहि सों नहिं कीजिये निर्ब्बलहू सों मार ५५

तुलसीदास जी ॥

सुसङ्ग की प्रशंसा॥

चौपाई॥

सुजन समाज सकल गुण खानी
करौं प्रणाम सप्रेम सुवानी॥
साधु चरित शुभ सरिस कपासू
निरस विशद गुणमय फल जासू१
जो सहि दुख पर छिद्र दुराया॥
वन्दनीय जेहि जग यश पाया
मुद मङ्गल मय सन्त समाजू॥
जो जग जङ्गम तीरथ राजू २
राम भक्ति जहँ सुर सरि धारा॥
सरस्वति ब्रह्म विचार प्रचारा॥
विधि निषेध मय कलि मल हरणी
कर्म्म कथा रविनन्दिनि वरणी ३
हरि हर कथा विराज त्रिवेनी॥
सुनत सकल मुद मङ्गल देनी॥
वट विश्वास अचल निज कर्म्मा

तीरथ राजसमाज सुधर्म्मा ४
सबहि सुफल सब दिन सब देशा।
सेवत सादर श्रमन कलेशा॥
अकथ अलौकिक तीरथ राऊ
देय सद्य फल प्रकट प्रभाऊ ५

दोहा॥

सुनि समुझहिं जनमुदित मन मज्जहिं अति अनुराग
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग ६

चौपाई॥

मज्जन फल देखिय ततकाला।
काक होहिं पिक बकहु मराला॥
सुनि आश्चर्य्य करै जनि कोई॥
सत सङ्गति महिमा नहिं गोई ७
बालमीकि नारद घट योनी॥
निज निज मुखन कही निज होनी
जलचर थलचर नभचर नाना।
जे जड़ चेतन जीव जहाना ८॥
मति कीरति गति भूति भलाई

जब ज्यहि यत्न जहाँ जिन पाई॥
सो जानब सत सङ्ग प्रभाऊ॥
लोकहु वेद न आन उपाऊ॥
बिन सत सङ्ग विवेक न होई॥
राम कृपा बिन सुलभ न सोई॥
सत सङ्गति मुद मङ्गल मूला॥
सोइ फल सिधि सब साधन फूला॥१०
सठ सुधरहिं सत सङ्गति पाई॥
पारस परस कुधातु सुहाई॥
विधिवश सुजन कुसङ्गति परहीं॥
फणिमणि सम निजगुण अनुसरहीं॥११
विधिहरि हर कवि कोविद बानी
कहत साधु महिमा सकुचानी॥
सो मोसन कहि जात न कैसे॥
साक बणिक मणि गुण गण जैसे॥१२

दोहा॥

बन्दौं सन्त समान चित हित अनहित नहिं कोय॥
अञ्जलिगत शुभ सुमन जिमि सम सुगन्ध कर दोय॥१३

सन्त सरल चित जगत हित जानि स्वभाव सनेहु
बाल विनय सुनि करि कृपा राम चरण रति देहु १४

दुर्ज्जनों की प्रकृति का वर्णन॥

चौपाई॥

बहुरि वन्दि खल गण सति भाये
जो विन काज दाहिने बाँये॥
पर हित हानि लाभ जिन केरे
उजरे हर्ष विषाद बसेरे १५
हरि हर यश राकेश राहु से॥
पर अकाज भट सहस बाहु से
जे पर दोष लखहिं सत साखी
पर हित घृत जिनके मन माखी १६
तेज कृशानु रोष महिषेशा॥
अघ अवगुण धन धनिक धनेशा
उदय केतु सम हित सबही के॥
कुम्भ करण सम सोवत नीके १७
पर अकाज लगि तनु परिहरहीं

जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं
बन्दौं खल जस शेष सरोषा॥
सहस बदन वरणौं पर दोषा १८
पुनि प्रणवौं पृथु राज समाना॥
पर अघ सुनैं सहस दश काना॥
बहुरि अक्र सन विनवौं तेही॥
सन्तत सुरा नीक हित जेही १९
वचन बज्र ज्यहि सदा पिआरा
सहस नयन पर दोष निहारा॥
पर अकार्य्य लागि हयसम चलहीं
पर सम्पति लखि मनु मरि जलहीं २०

दोहा॥

उदासीन अरि मित्र सब सुनत जौरें खल रीति
जानि पाणि युग जोरिकरि विनती करी सप्रीति २१

चौपाई॥

मैं अपनी दिशि कीन्ह निहोरा
तिन निज ओर न लाउब भोरा

बायस पालिय अति अनुरागा
होय निरामिष कबहुँकि कागा २२
बन्दौं संत असज्जन चरणा ॥
दुखप्रद उभय बीच कछु बरणा
बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं ॥
मिलत एक दारुण दुख देहीं २३
उपजहिं एक संग जल माहीं ।
जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं
सुधा सुरा सम साधु असाधू ॥
जनक एक जग जलधि अगाधू २४
भल अनभल निज निज करतूती
लहत सुयश अपलोक बिभूती
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू ॥
गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू २५
गुण अवगुण जानत सब कोई ।
जो जेहि भाव नीक तेहि सोई
बुधहि चही गुण ग्राहकताई
तजि पर अवगुण अहकुटिलाई २६

दोहा॥

भलो भलाई पै लहै लहै निचाई नीच॥
सुधा सराही अमरता गरल सराही मीच २७

चौपाई॥

खल गह अगुण सन्त गुण गाहा।
उभय अपार उदधि अवगाहा।
तेहि ते कछु गुण दोष बखाने
संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने २८
भल पोच सब विधि उपजाये
गनि गुण दोष वेद बिलगाये।
कहहिं वेद इतिहास पुराना।
विधि प्रपञ्च गुण अवगुण साना २९
दुख सुख पाप पुण्य दिन राती।
साधु असाधु सुजाति कुजाती॥
दानव देव ऊंच अरु नीचू॥
अमिय सजीवन माहुर मीचू ३०
माया ब्रह्म जीव जगदीशा॥

लक्ष अलक्ष रङ्क अवनीशा
काशि मगह सुरसरि कर्मनाशा
मरु मालव महिदेव गवाना ३१
स्वर्ग नरक अनुराग विरागा
निगमागम गुण दोष विभागा
कहँ लगि वरणौं विधिकरतूती
गुण अवगुण हैं जाहि विभूती ३२

दोहा॥

जड़ चेतन गुण दोषमय विश्व कीन्ह करतार॥
संत हंस गुण गहहिं पय परिहरि वारि विकार ३३

चौपाई॥

अस विवेक जो देहि विधाता
तव तजि दोष गुणहिं मन राता
काल स्वभाव कर्म बरिआई
भलेउ प्रकृति वश चूकहिं भलाई ३४
सो सुधारि हरि जन जिमि लेहीं
दलि दुख दोष विमल यश देहीं

खलहू करैं भल पाय सुसङ्गू॥
मिटहिं न मलिन स्वभाव अभङ्गू ३५
करि सुवेष जग वञ्चक जेऊ।
वेष प्रताप पूजियत तेऊ॥
उघरहिं अन्त न होत निबाहू॥
कालनेमि जिमि रावण राहू ३६
किये सुवेष साधु सनमानू॥
जिमि जग जामवन्त हनुमानू।
हानि कुसङ्ग सुसङ्गति लाहू॥
लोकहु वेद विदित सब काहू ३७
गगन चढ़ै रज पवन प्रसङ्गा
कीचहि मिले नीच जल सङ्गा॥
साधु असाधु सदन शुक शारी
सुमिरहिं राम देहिं गुणि गारी ३८
धूम कुसङ्गति कारिख होई॥
लिखिय पुराण मञ्जु मसि सोई
सोइ जल अनल अनिल सङ्घाता।
होइ जलद जग जीवन दाता ३९

दोहा॥
ग्रह भेषज जल पवन पट पायकुयोग सुयोग॥
होय कुवस्तु सुवस्तुजग लखहिंसुलक्षणलोग ४०

हुलास राम कवि॥

स्त्री और पुरुष दोनों की दुष्टता।

दोहा॥
रूपसेन नृप सदन महँ शुक शारिका निवास॥
करैं प्रीति तिनकी बढ़ी ताकर सुनुहु प्रकाश १

चौपाई॥
शुक शारिका रहैं एक ठाईं॥
प्रीति भई कुछ वरणि न जाई॥
दूनौं कहैं विविध इति हासा॥
सुनि राजा मन परम हुलासा २
यहि विधि बीति गये दिन भाई
अब देखौ विचित्र कथ नाई॥

एक दिन शुक शारिका बुलाई
देखौ चित्रसार प्रिय आई ॥ ३॥
तब शारिका गई तत काला॥
चित्रसार देख्यो एक बाला॥
भूषण षोड़श भाँति बनाये॥
पर पुरुष सों ध्यान लगाये ४
चूड़ा मणि तब कह्यो विचारी॥
युवती पाप मूर्त्ति अधिकारी॥
तब शारिका स्वरूप निहारी॥
आगे पुरुष एक विचारी ५
नारि से छोरि आभूषण ल्यावै।
वैश्या को शृङ्गार करावै ॥ ॥
कह्यो शारिका सुआ सुजानी।
यह स्वरूप देखहु दिग आनी ६
पुरुष अहै पाप से भारी ॥ ॥
नारि दीन अति हीन विचारी॥
परनुम किमि मानहु रे भाई।
कहत वही जो तुम्हहिं सुहाई ७

दोहा॥

सुक शारिका परस्पर दोनों करैं विवाद॥
जागि नृपति बोल्यो तबै काह भंहे संवाद ८

चौपाई॥

चूड़ामणि तब नृपसौं कही।
राजा सुनौ उभय बत कही॥
नारि पापिनी सब जग जाना॥
तौन शारिका करै न काना ९
यह सुनि कह्यो शारिका ज्ञानी
महाराज सुनिये मम बानी॥
पुरुष पाप मूर्त्ति अधिकार्द॥
चूड़ामणि के चित्त न आर्द १०
तब राजा बोल्यो हरषार्द॥
उभय भेद वरणौं चित लार्द॥
सुनत शारिका नृपहि जुहारी।
महाराज यह तत्व विचारी ११

कमल शील एक नगर कनाऊं
सेठि महाजय बसै तहाऊं ॥
ताके पुत्र भयो उपकारी ॥
नाम धनञ्जय कहै पुकारी १२
ताको व्याहु भयो उत्साहू ॥
पुण्य वर्द्ध है नगर क नाहू ॥
दुहिता उभय सेठि की जानी ॥
लीन धनञ्जय व्याहि सयानी १३
सेठि विदा कै दीन कुमारी ॥
श्वशुर सासु अत्यन्त पियारी ॥
सेठि महाजय कछु दिन गये।
भर्द्द मृत्यु सुरलोकी भये १४
द्यूत धनञ्जय खेलन लागे ॥
हारि द्रव्य ससुरारिहि भागे ॥
नारि सहित पहुँचे तहँ जाई ॥
देखि श्वशुर पुर गये सुखाई १५
फिरिउन भूषण वसन बनावा
प्रीति सनेह उभय पहिरावा ॥

आनँद बैठि करैं ससुरारी ॥
कर्म्म रेख नहिं मिटै मिटारी १६

दोहा ॥

एक दिन स्त्री सों कह्यो चलिये प्रिय निज धाम
श्वशुर वास नीको नहीं यहाँ धरैं सब नाम १७

चौपाई ॥

पति अनुशासन कीन न दूरी ॥
साथ चली बाला सुख पूरी ॥
मात पिता को कहा अलाई
स्वामी साथ चली हरषाई १८
पन्थ बीच में मोठि विचारी ॥
दीजै भूषण वसन निकारी ।
छीनि लेहु कोउ निर्ब्बल जानी
सुनि सब दीन निकारि सयानी १९
तब आगे एक कूप देखाई ॥
दिहिनि गिराय चले हरषाई ।
कूप परी रोवे नहँ बाला ॥ ॥

पथिक एक आयो व्यहि काला २०
लिहिसि निकासि पुंछिकुशलादू
तात दोउ मोहिं दीन गिरादू॥
भूषण वसन काढि सब लीन्हा
स्वामिहि मारिकाढ़ बहकीन्हा २१
पथिक कह्यो चलिये चित लादू
जहाँ कहो तहँ देहुं पठादू॥
भुख्य बहु एक नगर आया॥
उभय सेठि है पिता तुमारा २२
पथिक साथ तब लीनुलिवादू
उभय सेठि के घर पहुंचादू॥
मात पिता तहँ रहे निहारी॥
पुत्री का गति भई निहारी २३
कन्या कह्यो सुनो हो ताता॥
घेरिनि चोर आय मग जाना॥
भूषण लै मोहिं कूप गिरादू
पति की गति जानैं रघुरादू २४
यह सुनि मात पिता उर लादू

पुत्री हाय महा दुख पाई ॥
उभय सेठि सुनि दूत बुलाई ॥
सेठि धनञ्जय हेतु पठाई २५

दोहा॥

वहाँ धनञ्जय नगर निज हारि गये सब दाम
फिरि आये ससुरारि महँ देखा बैठे बाम २६

चौपाई॥

सासु श्वशुर पूँछे कुशलाई ॥
सेठि शोच सुख बात न आई ॥
उभय सेठि की सुता सयानी ॥
बोली आय हर्ष युत बानी २७
नाथ देहु सब भरम भुलाई ॥
सासु श्वशुर तुम्हरी सुख दाई
तातें बसिये यहाँ विचारी ॥
मैं प्रभु दासी आउ तुम्हारी २८
नारि कहै मन भर्म भुलावा
रहे श्वशुर पुर अति सुख पावा

यहि विधि बीति गये बहुकाला
अब सुनिये कृतघ्न भूपाला २८
एक दिन सोवत नारि विचारी
लीन्हों भूषण वसन निकारी
सेठि सार निज पन्थ लगावा
भार्य्या भक्ति भाव नहि भावा ३०

दोहा ॥

यह प्रत्यक्ष देख्यो नृपति पुरुष पाप करवान
चूड़ामणि मानत नहीं कहा करौं बलवान ३१

चौपाई ॥

तब चूड़ामणि कह्यो रिसाई ॥
झूठ कहै तैं नारि बनाई ॥
नारि पाप मूरति मैं जानी ॥
ताको मिथ्या कहौ सयानी ३२
बूतना सुनि राजा मुसुकाई ॥
चूड़ामणि सों कहो बुझाई
नारी पाप कवनि विधि भाई
सो दृष्टान्त सुनावहु आई ३३

सुनि चूडामणि करै वरदाना॥
कञ्चन पुर एक नगर सुजाना
सागरदत्त सेठि चिरव्याता॥
सो श्री दत्त कहै सुत ताता ३४
ताको व्याह भयो अति भारी
शुभ श्री नगर में सेठि सुखारी
नाम समुद्रदत्त अस कहहूँ॥
सुता नाम चन्द्रावति अहई ३५
ताहि विवाहि घरै लै आवा॥
श्वशुर लोग सँग फेरि पठावा
श्रीदत्त मन माहँ विचारा॥
बैठे कहा करी व्यापारा ३६
गये समुद्र चार परवीना॥
लादि जहाज माल सब लीना
यहां नारि ऋतु योवन पाई
चढ़ी महल सिरखे मन लाई ३७
नहवां आय नृपति असवारी
पुरुष एक लख्यो सुकुमारी

वैश्य तरुण अति रूप सुहावा
मानहु काम आप बनि आवा ३८
ताको देखि मोह भै बाला ॥
सखी सों बोलि कह्यो तत काला
तरुण पुरुष जो पाछे आई ॥
ताको अबही लाउ लिवाई ३९
तुरते सखी चली सुनि बाता ॥
पुरुष से आय कह्यो सुनु ताता ।
सेठि समुद्रदत्त व्यापारी ॥ ॥
ताकी सुता बुलावै प्यारी ४०
तब पूरुष बोल्यो हरषाई ॥
आउब निशा कह्यो सब गाई
निशा पाय आइहि तुम पासा
बाला करिये भोग विलासा ४१
कल्प समान याम युग कीना ॥
निशा पाय आयो नर चीना ॥ ॥
सो चन्द्रावलि लिहिसि लिवाई
बट नर जाय सहेट बनाई ४२

आउब यहाँ उचित हम नाहीं
पुरुष जानि सब लखैं पछाहीं
तब चन्द्रावति कह्यो सुहेला॥
बटतर भला सहेट अकेला ४३
निशा पाय दोनों जन जाई॥
बटतर करैं केलि अधिकाई॥
लादि तहाँ श्री दत्त जहाजा॥
आये श्वशुर सेठि के राजा ४४
खबरि कह्यो पुर बासिन जाई॥
सेठि समुद्र दत्त से आई॥ ॥
तब श्री दत्त गयो त्यहि हारे॥
सेठि श्वशुर को जाय जुहारे ४५
आनँद से सब रूप निहारी॥
हर्षित भये सकल नर नारी॥
भोजन विविध प्रकार बनावा।
भली भाँति महिमान न्यवावा ४६
चित्र शाल महँ पलँग बिछाई॥
चंद्रावती तहाँ चलि आई॥

बे मन बैठि रही पर्य्यङ्का ॥
तब श्री दत्त लीन्ह भरि अङ्का ४७
बहु प्रकार रस रीति देखावा ॥
बाल के एक मनै नहिं आवा ॥
निशा बही तब सोयो साहू ॥
चली सहेट महाउत माहू ४८
देखिनि चोर एक है नारी ॥
जानि अकेलि निशा अँधियारी
आपुस में सब कहैं बनार्द ॥
निश्चय आय स्वैरिणी भार्द ४९
याको देखी चलो तमाशा ॥
कहाँ जाय विय करै प्रकाशा ॥
जान निशा कछु संशय नाहीं
नारि चरित्र महा बल चाहीं ५०
यह कहि चोर लिये पिछवार्द ।
कामातुर विय जानि न पार्द ॥
वहाँ कि सुनैं कथा मन लार्द
पूरुष बटतर नारि न पार्द ५१

बैठि गयो बिरवातर जाई ॥
काढ्यो सर्प्प सुयो अकुलाई
नाही समय गर्द वह नारी ॥
बैठी दूत उत जाय निहारी ५२

दोहा ॥

नारि जाय उरलाय के कह्यो उठो महाराज
ज्यहि कारण निशि घरतज्यो सोकीजै अबकाज ५३

चोपाई ॥

मरा पुरुष नहि जगै जगाये ॥
कामातुर त्रिय भेद न पाये ॥
यक्ष एक बट ऊपर ज्ञानी ॥
मृतक शरीर पैठ गहि पानी ५४
नारिहि दीन तुरत पोढाई ॥
काम केलि कीन्ह्यो चितलाई ॥
शिथिल भयो तो नासा काटी ॥
प्राण शरीर से गयो उपाटी ५५
फिरि देखै तो मृतक शरीरा ॥
नाक से रुधिर बह्यो भे पीरा

नारि भागि रहह गई विशेषी॥
यह दृष्टान्त चौर सब देखी ५६
चौरन मन में कीन विचारा॥
नारि प्रबल जानै संसारा ॥
आय सेठि के पास अभागी
पकरि पट्टिका रोवन लागी ५७
परिजन आय गये त्यहि पासा
चन्द्रावति बैठी बिन जासा॥
देखि सकल मुन रहे सुरवाई।
पुत्री मासा कहा कराई ५८
तब बोली चन्द्रावति रोई॥
पापी पुरुष लागि मैं खोई॥
देर भई नहिं आयउ भाई॥
नैहर भाव कहौं सकुचाई ५९
दिखौं जगाय लिखौं उर लाई
नाक काटि मोहिं पलँग गिराई।
ऊपर से फिरि लातन मारी॥
सोये आय भूमि मोहिं डारी ६०

दोहा॥

सुनि परिजन सिखया कै सेठिहि दीन जगाइ
राज द्वार को ले चले लीन्हों मुसुक चढाइ ६२

चौपाई॥

नगर में भयो कोला हल भारी।
सेठि हमार बड़ा अपकारी॥
यह सुनि राजा निकट बुलावा।
देखि महाजन कानि दुख पावा ६३
नृपति कहा का किहा अयानी।
सेठि कहा हम कछु नहिं जानी
तब परिजन सब करैं गोहारी
महाराज यहि दण्ड विचारी ६३

दोहा॥

राजा असमञ्जस परो करिये दण्ड विचार-
चोर सभय बोलत भये श्री महराज दुआर ६४

चौपाई॥

यह वृत्तान्त सकल हम देखा
नारि चरित्र सत्य करि लेखा।

मुनि बोल्यो नृप कस यह भाई
तब चोरन सब कथा सुनाई ६५
राजैं अंगुली दाँत दबाई ॥
सेठिहि छोड़ि दीन उर लाई
सुनत सेठि गिल्लानि में आये
तुरतहि सुर पुर प्राण पठाये ६६
सेठिहि दारि चोर तनु त्यागी ॥
राजैं माऱ्यो पकरि अभागी ॥
मुण्ड मुड़ाय श्याम मुख लाई
गर्दभ धरि सब नगर फिराई ६७
फिरि दक्षिण दिशि दिहिनि निकारी
निश्चय जानि नारि अपकारी ॥
राजहि शुक शारिका सुनाई ।
नारि पुरुष केये फल भाई ६८
कह बैताल सुनौ बल वाना ॥
यामें पापी को अधिकाना ॥
तब विक्रम बोल्यो सुनि बानी
पाप समान दुहुन कर जानी ६९

नारि चरित्र सेवाय विचारी॥
ताते नारि पाप अधिकारी॥
मति अनुसार कहा हम भाई
तुमहुँ विचारि लेहु चित्त लाई ७०

दोहा॥

यह सुनि पुनि बैताल तब उडि मिरसाल पढान
धरि विक्रम फिरि ले चले तब बोल्यो बलवान ७१

सहज राम कवि॥

गर्भवासादि दुखवों का वर्णन॥

चौपाई॥

दैत्य हिरण्य कशिपु बल बाना
सुत प्रह्लाद जासु जग जाना॥
षण्डा मर्का कुल गुरु जाये॥
कनक कशिपु सो तुरत बुलाये १
सुत प्रह्लाद प्राण प्रिय मोरे॥
सौंपहुँ तुमहिं कहौं कर जोरे॥
कीजे इन्हैं पढाय सचेता॥
स्वल्प पढाउब लाड समेता २

बृपनि देख मुनि राम कुमारा ॥
गये लिवाय जहाँ चट द्वारा ॥
उठे सकल बालक कर जोरी ॥
करत प्रणाम बहोरि बहोरी ३
कहि प्रिय वचन विप्र अनुरागे।
प्रणव पुनीत पढ़ावन लागे ॥
वर्ण विचित्र दीनि लिखि पाटी।
देव प्रसाद दीन पुनि बाँटी ४ ॥

दोहा॥

दीन धराय सो लीन कर बाँचहु राज कुमार ॥
करि प्रणाम बोले वचन अति पुनीत श्रुति सार ५
राम भजन को कौन फल विद्या को फल कौन।
घाटा नफा विचारि के विप्र पढ़ो मैं तौन ॥ ६॥

चौपाई।

सुनहु तात विद्या अति पावन॥
सज्जन सुखद दुर्जन मन भावन
सुभग सकल सम्भव बलदाना
बन्धु विपुल धन धनद समाना ७

बिद्या बिना न सोहै कैसे॥
बिन सुगन्ध किंशुक छबि जैसे
बालक सत्य कहौं त्वहिं पाही।
बिद्याधन प्रधान जग माही॥
हरै नरेश न चोर चुरावै॥
देश विदेश महा सुख पावै॥
ते पितु माता शत्रु समाना॥
जे न पढ़ावैं सुत अज्ञाना ८
सभा मध्य नहिं सोहैं कैसे॥
विपुल मराल मध्य बक जैसे
विप्र वचन सुनि राज कुमारा।
बोल्यो वचन विहँसि श्रुतिसारा१०

दोहा॥

वर्णत वेद पुराण बुध शिव विरञ्चि सनकादि
ये बाधक हरि भक्ति के विद्या वित बनितादि ११

चौपाई॥

सिखवौं न सो विद्या लिखि पाती
विषयक मन खग बांधन टाटी।

विद्या सो जो भजे भगवाना॥
लहै सुधर्म्म देह अवसाना १२
विन हरि भजन भूरि भवसागर
तरै न कोटि यत्न नर नागर॥
देह ते कर्म्म कर्म्म ते देहा॥॥
मिटै न बिनहरि चरण सनेहा १३
तृण जलौका चलै तृण आधारा
ऐसे जीव कर्म्म अनुसारा॥
करै कर्म्म वश गर्भ निवासू॥
वरणि न जाय दुसह दुख तासू १४
कर नितम्ब नीचे पद बाँधे॥
बहु पुरीष पल अवयव बाँधे॥
काटहिं कीट लेट तनु लागा॥
नहिं अवकाश अधो मुखटाँगा १५
परायोनि सङ्कट महँ सोई॥
जन्म अनेक कोरि सुधि होई॥
हाय कीन मैं भजन न कबहूँ॥
यासों सहों दुसह दुख सबहूँ १६

दोहा॥

खाय मातु मोदक कटुक परे वदन विच आद
जठर अग्नि की ज्वाल से जीव विकल है जाद १७

चौपाई॥

सञ्चित पराब्ध किय पाना॥
कर्म्म विवश सहे सङ्कट नाना॥
जग जीवन लखि जीव दुखारी॥
प्रकटे हरि सायुध भुज चारी १८
कौस्तुभ कण्ठ वक्ष वन माला।
रत्न किरीट प्रकाश विशाला॥
अस हरि रूप अनूप निहारी॥
करि प्रणाम अस्तुति अनुसारी १९
जय भगवन्त सन्त सुख दायक॥
कृपासिन्धु सचराचर नायक॥
जीव चराचर पशु पशुपाला॥
अति कृपालु तुम दीन दयाला २०
तुम्हरे हाथ नाथ जल चारा॥
बन्ध मोक्ष प्रभु विगत बिकारा

अबकि बार शरणागत बन्धू ॥
जपि तव नाम तरौं भव सिन्धू २१

दोहा॥

विकल जीव जननी जठर हरिसों करत करार
अब की बार तुम्हार गुण गाय तरौं भवपार २२

चौपाई॥

पूरण मास भये यहि भाँती ॥
महा वपुष किय प्रकट तहाँती
भयो अधीर पीर तनु माहीं ॥
क्षण मूर्छित पुनि रुदन कराहीं २३
कहाँ कहाँ करि रोवन लागे ॥
रूप चतुर्भुज दीख न आगे ॥
कीन्हों जबहि पयोधर पाना ॥
भूली सुमति मोह लपटाना २४
गावहिं मङ्गल गीत बधूटी ॥
नेगी करहिं वसन धन लूटी ॥
काटैं कृमि बहु व्याधि सतावैं ॥
रहैं रोय मुख वचन न आवैं २५

जननी उबटन तेल लगावै॥
पालि पोषि सुत देह बढ़ावै ॥
पगन चलत कह तोतरि बतिया
सुनि पितु मातु लगावैं छतिया २६

दोहा॥

क्रीड़ा बहु विधि करत अति गयो बालपन बीति
भजै न सीता राम पद करैं अनेक अनीति २७

चौपाई॥

तरुण भये तरुणी मन मोहैं।
चलैं बाम पुनि पुनि मग जोहैं
जो कदाचि धन धाम विलोका
तृण समान मानैं त्रैलोका २८
जो धन हीन दीन मुख बाये॥
जहँ तहँ याचक पेट खलाये॥
कछु बिन बदन बढ़ावत जाहीं
कछु बिरोध कछु रोदन माहीं २९
कछु सोवत कछु उठि धावैं

राम भजन बिन जन्म गँवावै।
करै सुधा सन्तोष न पावा॥
मृग जल विषय विलास भुलाना २०
गर्भ वास श्रीपति उपदेशा॥
माया विवश न सुधि लव लेशा॥
तजि हरि भजन भोग मन लावा।
यह वह करत जरापन आवा २१

दोहा॥

अनइच्छित आवै जरा सहज राम सित केश॥
मनहुँ विशिख सित पुङ्ख के छेदक काल नरेश २२

चौपाई॥

तनु बलि अबलि वदन रद हीना
तृष्णा तरुणा होय तनु छीना॥
थके चरण तनु कम्पन लागे॥
प्रिय बालक जल देहिं न माँगे २३
खाँसि खाँसि थूकहिं मति माहीं
सुत सुत बधू देखि अस साहीं॥

प्रिय परिवार सुहृद सुत नाती॥
मरण जनावहिं दिन अरु राती ३४
जब कछु सुतन सिखावन देहीं॥
सुत कहैं जाल्मि जाल्मि जिव लेहीं
भवन द्वार गरवा रखवारी॥
यम सिंह जनु भूंक भिखारी ३५
मरती बार कण्ठ कफ लागा॥
तबहूं मोह वश भेषज भागा॥
तनु तजि गहिसि नरक के बाटा॥
मोसन सहि न जाय यह घाटा ३६

दोहा॥

कण्ठ पाश अस पत्र बन दण्ड पाणि अति घोर
चले घसीटत शमन गण यम सुर पन्थ कठोर ३७

चौपाई॥

भयसहिं चढ़े मातु पितु गोदा॥
पुनि स्यन्दन सुख पाल समोदा।
पुनि गज बाजि साज पट हीने॥
सुख करि विविध भाँति पर दीने ३८

चढ़े पर्य्यङ्क प्राय्य पट बाँधे ॥
सो चढ़ि चले चारि के काँधे ॥
झूठ साँच कहि जहँ तहँ बच्ची ॥
बहु बिधि धरे धाम धन सच्ची ३९
सो धन धाम धरा रहै भूपर ॥
कछु भाँड़ा गाड़ा कछु ऊपर ॥
पशु गण कछु बन कछु गोशाला
रही निकेत द्वार बर बाला ॥ ४०
चिता चढ़ाय परोसिन त्यागा ॥
यमपुर चले अकेल अभागा ॥
करि विलाप सुत सर्व्वस कीना ॥
पावक बारि फूँकि मुख दीना ४१

दोहा ॥

सुनहुँ तात पितु मातु सुत बनिता बन्धु अनेक
यमपुर श्री पति भजन बिनु कोइ न सहायन एक ४२

चौपाई ॥

जिहि तनु उबटन तेल लगाये
पहिरे भूषण बसन सुहाये ॥

सो नरदेह खेह है जाई ॥ ॥
जहँ तहँ पवन प्रसङ्ग उड़ाई ४३
यह संसार स्वप्न सम जानी ॥
तजे भजे मुनि शरण पानी ॥
जाहि भजे बिन नाहिं निबाहू ।
रङ्क धनी वरु क्षितिपति शाहू ४४

भगवती दास कवि ॥

नरकों का वर्णन ॥

चौपाई ॥

बहुरि दक्षिण दिशि देखा आई
अद्भुत रूप को वर्णै भाई ॥
क्रोधी क्रोध जे करहिं अपारा ॥
दुष्टी दुष्ट करहिं अपकारा १
गुरु द्वेषी विवेक नहिं माना ॥
साधुन की निन्दा भल जाना ॥
मात पिता की सेव न जानहिं ॥
पर नारी सों अनुचित मानहिं २

मुरव रोगी चित मेल रहाही ॥
दक्षिण दिशि सो अति विललाही
औरो है जे विघ्न सँघाती ॥ ॥
बिन अपकारक मारहिं जाती ३
गर्भ छेद जे करहिं विकारा ॥
त्रिया तजहिं बिन दोष विचारा
गाय विप्र कर अन भल मानहिं
निशि दिन दुष्ट कर्म्म भल जानहिं ४
लेहिं द्रव्य नर देहिं न फेरी ॥
अग्नि देहिं विश्वास अहेरी ॥
बाट घाट चोरी व्यवहारा ॥ ।
मित्र दोष जे करहिं विचारा ५
औरो जे पातकी कहाये ॥
ते सब दक्षिण द्वारे आये ॥
अन्धकार सूझै नहिं आगे ॥
मारग देखि न परै अभागे ही
गिरत परत तिनहीं भय होई ॥
महा त्रास व्यापक नर सोई ॥

श्वान रुद्ध मारग गिनि जोवहिं
तिन के त्रास पातकी रोवहिं ७
अन्धकार एक कूप अपारा ॥
तिहिमा कृमि बहु परैं असारा।
तिहि महँ परत त्रास अति होई
त्राहि त्राहि गोहरावत सोई ८
ऋक्ष व्याघ्र औ सर्प अपारा
दुष्टिक बार बार तनु मारा ॥
कुम्भि नरक जो कहे भयावन ॥
तिहि मारग पुनि आवन जावन ९
बार बार पुनि त्रास दिखावहिं
अनुशासना देत तिहि आवहिं
माता पिता दुरिवत जे होहीं ॥
और दुरा चारी जो सोहीं ॥ १०
वेद शास्त्र की निन्दा करहीं ॥
परनारी कहँ चिन्ता धरहीं ॥
दक्षिणा हारे रहैं निराशा ॥
ते यम सन पावहिं अनुशासा ११

पापी वृक्ष एक है जाता ॥
मांस चर्म्म को जो करै घाता॥
ब्रह्मघात गोधन जहँ देखे ॥
गोवधघात की बहुत विशेषे १२
देव गुरू निन्दक जो होई ॥
माता पिता भ्रात दुख सोई ॥
गर्भ्भ घात की मित्र विश्वासी॥
बालक घात करैं त्रिय त्रासी १३
बिन अपराध त्रिया जे मारहिँ॥
बन महँ अग्नि जाय जे जारहिँ॥
सहजहिँ जानि करैं व्रत भङ्ग।
निन्दहिँ तीरथ सहजहिँ गङ्ग १४
दानहिँ देत निवारहिँ कोई ॥
और अतिथि निन्दक पुनि सोई
वैष्णव को निन्दहिँ मन जानी।
शुचि समेत जे रहैं न मानी १५
जीवघात पर सङ्गहि देखे ॥
नरक पातकी बहुत बिशेषे॥

जे निज धर्म त्यागि परधर्महिं
गहहिं प्रशंसहिं परमत भर्महिं १६

दोहा॥

एते कर्म पातकी देखे हम यमद्वार॥
तिन कहँ बासि दिखावहिं पूँछहिं बारहिं बार॥१७

चौपाई॥

ताही समय सनहु मुनि राऊ
जो देखा सो तुमहिं सुनाऊ॥
एक महापापी तब आवा॥
औरै नरक मैं आनि ढहावा १८
पापी महा कीन अधर्मा॥
युवती गो बध किये कुकर्मा॥
गर्भघातकी लीन्हे आवहिं॥
तेली कोल्हू घालि पेरावहिं १९
स्वामी घातक तुरतहि आवा॥
पापि वृक्षतर आनि रहावा॥
दूतहिं पात परहिं स्वामि देही।
मांस चर्म्म सो पोछन लेही २०

और पापी रहैं अपारा ॥
जिन काहू की हरी है दारा ॥
सीम पराव लेहिं विश्वासी ॥
पन्थ चलाय गरे दें फांसी २१
खेत पराव लेहिं करि बोलू ॥
तिन कहँ धरि पेखावहिं कोलू ।
मात पिता का दुखवैं कोऊ ॥
अग्नि नरक महँ डारैं सोऊ २२
लोह जँजीर बाँधि लै आवहिं
औ किङ्कर त्यहि त्रास दिखावहिं
काहुक वस्तर लेहिं चुराई ॥
सोन रूप जे धरहिं दुराई २३
कांस नाँव जे हरहिं पराया ॥
कन्या दान देत हर काया ॥
यात्रा तीर्थ करहिं मन भङ्गा ।
अधरम केरे करहिं प्रसङ्गा २४
विप्रहि दान देत जे बर्जहिं ॥
गुरुजन माता त्रास न लर्जहिं

पक्षिन कहँ आज्ञा तब दीन्ही।
तुरतहि आँखि काढ़ि तिन लीन्ही २५
श्वान गृद्ध जो नोचहिं ठाढ़े॥
आज्ञा लै तिन कर जी काढ़े।
देखा और नृपति एक आवा
मृत्युलोक कर राव कहावा २६
इन भल नीक न्याय नहिं कीना
करि अन्याय द्रव्य हरि लीना
बाल घातकी औरो आवा॥
विष दै मनुजहि देह नशावा २७
गाय विप्र कहँ दुखवै कोई॥
कृमी कूप महँ डारैं सोई॥
अन देखे जो करहिं चुनारवा
बिना सुने उरआनहिं सारवा २८
नाक कान काटी पुनि ताही॥
चित्रगुप्त न्यावहिं करि जाही॥
औरै करैं भ्रष्ट तनु भोजन॥
ब्राह्मण ह्वै के करैं न शोचन २९

वेद शास्त्र कर मारहिं माना॥
विष्टा कूप मँ परहिं निदाना॥
कहँ लगु चरणौं नरक अपारा
रामभजन बिन नाहिं उबारा॥

दोहा॥

द्विज है सन्ध्या नहिं करैं अरु अन्हाय बिनखाहिं
तिनके शिर अंगारा चलिहै यहिमहँ संशय नाहिं॥

रत्न कवि॥

ब्रजकी प्रशंसा॥

चौपाई॥

एक शत अरु त्रिया पटभाषी
सोरह सहस मण्डल अरु रासवी
सो सकलन मैं सरस पियारी।
श्री रुकुमिनि की बातैं न्यारी १
तिनसौं हरि अन्तर नहिं राखैं
क्षण क्षण की निज मनकी भाषैं

एक दिन चली प्रेम की गाथा
हा व्रज कहि शोच्यो यदुनाथा२
तब रुक्मिनि प्रभु सौं करजोरी
बोलीं मधुर वचन रस बोरी॥
पुरी द्वारका सम नहिं कोऊ॥
अमरावति पुनि पटतर नहिं सोऊ३
पितु वसुदेव देव की माता॥
रिद्धि सिद्धि नव निधि विख्याता
षट दश सहस आठ पटरानी
सो सम्पति प्रभु मनहिं नमानी ४
पुनि पुनि सुमिरत गोकुल गामा
उरसों नहिं विसरत सो धामा॥
तिनकी प्रीति कहो समुझाई
जिन में तव मन रहत लोभाई ५
सुनि रुक्मिनि के वचन सुहाये
परम पुलकि लोचन जल छाये
तब बोले यों राजिव नयना॥
तुम जो कहत सो साँची बयना ६

पितु वसुदेव देवकी माई ॥
तिनहूँ करत छोह अधिकाई
पै न मोहिं बिसरत ब्रज बाता ॥
नन्दबबा अरु यशुमति माता ७
तिनकी प्रीति वरणि नहिं जाई
जिहि विधि मैं उनसों सुख पाई
क्षण क्षण मुख लखि लेत बलैया
कोउ सप्रेम अब कहत कन्हैया ८
वह सत मारवन मैया करके ॥
माखन खावन मेरे हित धरके ॥
ब्रज सुख नहिं बिसरत बिसराये
जिहि विधि सुर मुनि मन ललचाये ९

दोहा ॥

वह वृन्दावन सुख सघन कुञ्ज कदम्ब कि छाहिं
कनक मयी यह द्वारका ताकी रजसम नाहिं १०
नृपति सभा सिंहासन जिहि लखि लजत अनङ्ग
नहिं बिसरत वह सरवन को गाय चरावन सङ्ग ११

राजसाज साजे सकल तिमि नहिं नेकु स्वहाहिं ॥
गुञ्जमाल बन चित्र जिमि मोर मुकुटमणिमाहिं १३
रानी सोरह सहस तुम करत रहत अति प्रीति ॥
श्री राधा छवि प्रेम की कछु है न्यारी रीति १३
गोपी सोरह सहस सब लोक लाज पति त्यागी
अर्द्ध निशाहि रस रास करि मम हित ते रसपागी १४
बिछुरत तिनसों सकुचि मन कह्यौ मिलब पुनि जाय
उनसों उबरण भयो नहिं रह्यो हार का छाय १५
बहुरि जाय ब्रज भेटिये नटवर वेष बनाय ॥
ब्रज बासिन सुख दीजिये मुरली मधुर बजाय १६
निशदिन मेरे हिय रहत ब्रज बासिन में ध्यान
करत बनत सब बात मोहि उनही की मन मान १७

चौपाई ॥

भक्ताधीन बिरद प्रभु केरे ॥
गावत बाणी वेद घनेरे ॥ ॥
सज्जत रहत भक्त के पासा ॥
पुरवत है प्रभु तिन की आशा १८

जे सप्रेम हरि सों मन लावैं ॥
तिनको कबहुं नहीं बिसरावैं
ग्राहग्रसत गज जाय छोड़ाये ॥
गरुड़ छोड़ि तहँ आतुर धाये १८
पुनि प्रभु पाण्डव जरत बचाये।
द्रुपद सुता के बसन बढ़ाये ॥
अजामील यम ते प्रभु कीन्हों
भजन प्रभाव ध्रुवहि वर दीन्हों २०
जल प्रह्लाद अभय करि ग्याप्यो ॥
ताती वायु न बारहि व्याप्यो ॥
जो जन मन ते ध्यावै जैसे ॥
ता कहँ प्रकट होत प्रभु तैसे २१
अग जग सकल विश्व के स्वामी
सर्व्वमयी सब अन्तर्यामी।
प्रेम युक्त अजजन हरि ध्यायो
ताते प्रभु हृदय हरि छायो २२
प्रभु के मन यह रहत सदाहीं ॥
अज वासन को भेद्यो नाहीं।

यासौं धनि ब्रज अरु ब्रजवासी
जाहि प्रशंस्यो हरि अविनाशी ३

ब्रजबासी दास कवि ॥

मारवन चोरी लीला ॥

दोहा ॥

विश्व भरण पोषण करन कल्पतरोवर नाम
सो प्रभु दधि चोरी करत प्रेम विवश भगधाम १

सोरठा ॥

नित उठि करत विहार ब्रज में घर घर सांवरो ।
ब्रजजन प्राणाधार मारवन चोरी व्याज करि १

चौपाई ॥

श्याम एक खालिनि घर आये
चोरी करत पकारि तिन पाये ॥
कहत करी तुम बहुत ढिठाई
अब तो घात परे हो आई ३
दिन चासर मोहि बहुत रिझायो
दधि मारवन सब मेरो खायो ॥

हौं भुज पकरि कह्यो कित जैहौ
दधि भाखन दै छूटन पैहौ ४
ताके मुख तन चितै कन्हाई ॥
बोले वचन मधुर मुसुकाई ॥
तेरी सौं मैं छुयौ न राई ॥ ॥
सखा खवाय सबै गये पराई ५
चारु चितौन चितै उर आन्यो
उर ने रोष जात नहिं जान्यो ॥
सुनत मनोहर हरिकी बतियां ॥
लिये लगाय ग्वालिनी छतियां ६
बैठो श्याम जाउं बलिहारी ॥
मैं ल्याऊं दधि खाउ बिहारी ॥
हरि को लेन चली दधि गोरी ॥
हरि हंसिनिकरि गये ब्रजखोरी ७
रही ठगीसी ग्वालिनि भोरी ॥
मन ले गयो साँवरो चोरी ॥ ॥
हरि गे और ग्वालिनी के घर
देख्यो जाय न कोऊ भीतर ८

दोहा॥

मारवन काहि निशङ्क ह्वै लागे खान कन्हाय।
ग्वालिनि आवत जानि घर तब उठि रहे छिपाय ९

सोरठा॥

ग्वालिनि घर में आय मथनी ढिग ठाढ़ी भई॥
भाजन रीतो पाय चकित विलोकत चहूँ दिशि १०

चौपाई॥

अबहीं गई आय इन पावन॥
आयो मारवन कौन चुरावन॥
भीतर गई तहाँ हरि पाये॥ ॥
पकरी भुजा भये मन भाये ११
तब हरि कहि निज नाम लजाये
नयन सरोज कछुक भरि आये
देखि बदन छवि आनँद ही के
दीन्हें जान भावते जीके॥ १२
भयो ग्वालि मन परम हुलासा
कहन चली यशुमति के पासा

जो तुम सुनहु यशोमति माई॥
हँसि हौ सुनि हरि की लरिकाई १३
आजु गये हरि मोघर चोरी॥
देखी मारवन भरी कमोरी॥
मैं घर आय अचानक जबहीं
रहे छिपाय सकुचिकै तबहीं १४
जब मैं कह्यौं भवन में कोरी॥
तब मोहिं कह्यो निज नामनि होरी
लगे लेन लोचन भरि आँसू॥
तब मैं कानन तेरी सासू १५
सुनत श्याम सब रोहिणी कनियाँ
सकुचन हँसत मन्द मुसुकनियाँ
ग्वालिनि देहँसि हरि तन डर पायो
मारवन चोर पकरि मैं पायो १६

चौपाई॥

करौं नोय की दासी बाँधौं अपने धाम॥
लायलियेउर रोहिणी बाँधि सबै को श्याम १७

सोरठा॥

यशुमति उर आनन्द बाल चरित सुनि श्यामके
कहत सुनौ नँद नन्द ऐसो काम न करहु सुत १८

चौपाई॥

पुनि ढुक गृह गये नन्द दुलारे।
देखि फिरे तहँ ग्वाल दुआरे॥
तब हरि ऐसी बुद्धि उपाई॥
फाँदि परे पिछवार जाई १९॥
श्रूनो भवन कहूँ कोउ नाहीं॥
मानहुँ दून को राज सदाहीं॥
भाँड़े मूँदत धरत उतारत॥
दधि अरु माखन दूध निहारत २०
रैन जमायो गोरस पायो॥॥
लगे खान मनु आप जमायो।
आहट सुनि युवती घर आई॥
झलकात देख्यो कुँअर कुन्हाई २१
औधियोर घर श्याम गये दुरि॥
दधि मटुकी ढिक श्याम गये मुरि

सकल जीव उर अन्तर वासी ॥
तहाँ कछूक चटक परकाशी २३
ग्वालिनि हरि को इत उत हेरै ॥
पावत नाहीं धाम अँधेरै ॥ ॥
कहत अब हिं देख्यो नँदनंदन
किनहि गयो पछितात मनहिं मन २३
परिगये दीठ ओट मथनी के ॥
सुन्दर श्याम प्राण गथनी के ॥
तबहीं ग्वालिनि भुज गहि लीन्हों
कहत तुम्हें अब तो मैं चीन्हों २४

दोहा ॥

कहो कहा चाहत फिरत धाम अँधेरे माहिं ॥
बूझे बदन दुरावते सूधे चितवन नाहिं २५

सोरठा ॥

दधि मथवी में हाथ अब का उतर बनाइ हो।
सखा नहीं कोउ साथ कहिये अब कैसी बनै २६

चौपाई॥

मैं जान्यो यह घर है मेरो ॥
ता धोखे इत है गयो फेरो ॥
दृष्टि परी च्यूँटी दधि माहीं ॥
काढन लगेयो तिन्हें यहि ठाहीं २७
सुनि मृदु वचन ग्वालिमुसुकानी
तुम हो रति नागर हम जानी ॥
उर लगाय मुख चुम्बन कीनो
विधिहि मनाय बिदा करि दीनो २८
हरि दर्शन विन क्षण न स्वहार्द्
वर हन मिस यशुमति पहँ आर्द्
सुनहु महरि निजसुत की करणी
करै अचकरी जात न वरणी २९
प्रति दिन करत दूध दधि हानी।
कहँ लगि करैं कान नँद रानी॥
मैं अपने मन्दिर अँधियारे।
माखन धर्यो दुराय सवारे ३०
सोई ढूँढि लियो हरि जार्द् ॥

अति निशङ्क नहिं नेकु डुराई।
बूझे उत्तर तुरत बनावै ॥
च्यूँटी काढन को कर नावै३१
सुनि ग्वालिनि के वचन सयानी
हँसि कै बोध कियो नँदरानी ॥
यशुमति कहत श्याम सों प्यारे
पर घर काहे जात ललारे ३२

दोहा ॥

मम लोचन आगे सदा खेलहु सखन बुलाय
तुम्हरे बाल विनोद लखि मेरो हियो सिराय ३३

सोरठा ॥

मोपै लीजे श्याम दधि माखन मेवा मधुर।
सब कछु तेरे धाम पर घर जाय बलाय तुव ३४

सबल सिंह चौहान ॥

भीष्म पितामह और अर्जुन का युद्ध ॥

चौपाई ॥

भीषम देव कहन अमलागे
सारथि रथहि चला बहु आगे

अर्जुन वीर कृष्ण सों सारथ
तिन ते रण कीजे पुरुषारथ १
यह कहि कै हाँको रथ जब हीं
अशकुन भये बहुत विधि तब हीं
बोलत काक भयङ्कर बानी॥
बिना मेघ वर्षत है पानी २
रुद्ध सबै रथ ऊपर छाये॥
जम्बुक अपनो भाव दिखाये
उगिलै खड्ग छाँडि कै खापैं॥
रथ के रक्त सैन्य बिन काँपै ३
यह अशकुन देख्यो सबसेनहिं
कुरुदल कहन लागि सबैबेनहिं
नव दिन युद्ध भयानक पेखो
यहि विधि ते कबहूँ नहिं देखो ४
सारथि कह गङ्गा सुत आगे।
सोकहँ यह अचरज करि लागे
हँसि भीषम तब कहि यह बानी
अहो मूढ़ यह बात न जानी ५

दोहा॥
पारथ के सारथि भये निरखहु श्री भगवान
अशकुन नहिं कुछ करि सकै सन्मुख कृष्ण सुजान

चौपाई॥
यह कहि भीषम रथहि चलायो
सिंहनाद कै हाँक सुनायो॥
डोली धरणि शेष शिर नाये
मनो घटा घन में घहराये॥
क्रोधित ह्वै शारंग शरगह्यऊ
नमित वचन नर हरि ते कह्यऊ
सावधान ह्वै जोती गहिये॥
पारथ की रक्षा मों रहिये॥८
यह कहि सहस बाण फटकारे
अर्जुन के उर ऊपर मारे॥
श्याम शरीर हन्यौं दश बानहिं।
बीस बाण मारे हनुमानहिं॥९
चारि बाण ओरो गुण जोर॥
घायल नन्दि घोष के घोरे॥

तब अर्जुन लीनो शारँग शर
होय लागि अति मारु परस्पर १०
दोउ बीर लरैं मैदानहिं ॥
क्रोधित लगे चलावन बानहिं।
दोउ महाबल अरु रणधीरा॥
मनहुँ युद्ध कर धरे शरीरा ११॥

दोहा॥

यहि विधि ते अर्जुन जुरे भीषम सों मैदान॥
जल थल भारत भूमि महँ छाये शर असमान १२

चौपाई॥

बाण तेज हैं यह व्यवहारहि॥
जिमि जलधर वर्षत जलधारहि
सहस बाण अर्जुन गुण जोरे॥
हाँक देत हाँकत हरि घोरे १३
तीक्षण बाण पाण्डु सुत मारे॥
भीषम अन्तरिक्ष होनि डारे॥

अपर वृष्टि शर कार्म्मुक धारे ॥
ते शर अहिफण के तन भारे १४
लागि असी शर कपि के तन माहिं
सत्तरि शर यदु नन्दन तन माहिं।
श्याम अङ्ग शोणित छवि छाजत
पीत वसन रँग अरुण विराजत १५
जोती गह्यो धन्य अति चापल॥
वर्षत शर आवण जिमि घन जल।
यहि विधि ते शर वर्षा कियऊ।
शर के छाँह भानु छपि गयऊ १६
नन्दि घोष रथ माधव सारथ॥
वाण वृष्टि ने छायो भारथ॥
भीषम यहि प्रकार बल कीन्ह्यो
तब अर्जुन दृढ धनु कर लीन्ह्यो १७
श्री हरि कह्यो सुनहु हो पारथ॥
सहि न जाय भीषम को भारथ
तुम से महाबली यह वीरा॥
जानत हौ जस है रण धीरा १८

दोहा॥
हाँकेपगानहिँ चलत हय पारु छाये सब अङ्ग॰
भीषम के सङ्ग्राम ते रणा महँ अचल तुरङ्ग॰१८

चौपाई॥
अर्ज्जुन जिय विस्मय करि मानो
महा क्रोध कै निज धनु तानो
देव अस्त्र पारथ धनु छाँदे।
गङ्ग सुत बीचहि शर काटे॰
अपर विशिख वर्षा क्षण करधारे
ते शर पारथ के शिर मारे
अर्ज्जुन सहित भयो घायल हरि
तुरँग थकेन चलत लघु गति करि॰१९
वर्षत बाण वरणि को कहई॥
पाण्डव दल लक्षन मति लहई
श्री पति कह्यो सुनो हो पारथ
रचो उपाय तजो पुरुषारथ॰२०
यह कहि कै हरि शङ्ख बजाये
सुनि कै नाम शिरवराडी आये

अर्जुन सौं हरि कहने लागे ॥
रण में करहु शिखण्डी आगे २३
पाछे हौं शारँग कर धरिये ॥
यहि विधि तें भीषम बध करिये
अर्जुन कहा सुनहु जग तारण
कपट युद्ध करिये किहि कारण २४
श्री हरि कह्यो गहरु जनि लावहु
गङ्गा सुत कहँ मारि गिरावहु ॥
जबहि शिखण्डी आगे आये
भीषम धनुष डारि शिर नाये २५

दोहा ॥

बिना शस्त्र लज्जित बदन नीचे हेरत नैन।
अस्थिर ह्वै रथ पास भे कह्यो कृष्ण ते बैन २६

चौपाई ॥

दीन बन्धु पाण्डव हित कारण
कपट युद्ध करि चाहहु मारण

अर्जुन कियो शिरवण्डी ओटहि
भीषम हृदय कियो शर चोटहि २७
पारथ बाण वज्र सम छूटहिं॥
भेदि सनाह अङ्ग महँ फूटहिं।
गङ्गासुत यहि बिधि ते कहई।
ये शर नाहिं शिरवण्डी गहई २८
शर मारत अर्जुन मेरे हिय॥
यहै विचार कियो अपने जिय
घाव लगे तनु कम्पै कैसे॥
शिशिर काल महँ गोधन जैसे २९
तब पारथ कीन्ह्यो सन्धानहि
हृदय ताकि मारो सो बानहि
चरण कमल कीन्ह्यो तब धावहि
रसना रटत निरन्तर रामहि ३०
रोम रोम यहि विधि शर मारा।
बहै प्रबाह रक्त की धारा॥
तीक्ष्ण बाण अरु कर लीन्हों
ने शर चोट शीस पर कीन्हों ३१

दोहा॥
भीषम को बल थकित भो मारत अर्ज्जुन तीर
तिल भरि देह न देखिये झाँझर भयो शरीर ३२

चौपाई॥
रथ ते गिरे गङ्ग-सुत धरणी॥
जग में रही सदा यह करणी॥
देखत सब कौरव दल धाये॥
हाहा शब्दा घात सुनाये ३३
द्रोणकरी दुर्य्योधन अत्री॥
धनुष डारि रोवहिं सब क्षत्री
करुणा करत कहत सब बैनहिं
अहो पितामह गरवो सैनहिं ३४
कुरुपति तब छाँड्यो निजस्यन्दन
आयो जहँ गङ्गा के नन्दन॥
सेनापति है मुकुट बँधायो॥
आप कृष्ण कर अस्त्र गहायो ३५
जीति स्वयम्बर कन्या लीन्हों
दोऊ बन्धु व्याह के दीन्हों॥

परशुराम ते युद्ध बिचारो ॥
उठि कै धनुष बाण कर डारो ३६
रोदन कै याहि भाँति बखानत
बिधि चरित्र कोऊ नहिं जानत
मेरे जिय यह बड़ो अँदेशो ३७
पाण्डव सहित जीति हौं केशो ३७
तुम पायो क्षत्रिय के धर्म्महिं ॥
यह सब दोष हमारे कर्म्महिं
तुम्हरे बल मैं कीन्ह लड़ाई ॥
यासों नहिं कछु मोहिं सहाई ३८

दोहा ॥

भीषम घेरे रवन महँ रोवत सबे नरेश ॥
सबलसिंह चौहान कहि देखन चले नर केश ३९

चौपाई ॥

धर्म्मराज माधव सँग लीन्हें ॥
रथतें उतरि गमन तब कीन्हें

अर्जुन भीम और सब राजन
चले पितामह देखन काजन ४०
यहि अन्तर गङ्गासुत बोले ॥
सुन्दर अधर मनोहर डोले ॥
शर पाय्या सब अङ्ग बिराजत ॥
लटकत शीस भूमि पर राजत ४१
कुरुपति कहो हमारो कीजै ॥
उत्तम भाँति शिरहनो दीजै ॥
कोमल तूल पिताम्बर भरे ॥
आनि त्वरित शिर हाने धरे ४२
तब भीषम भाष्यो यह बानी ।
दुर्योधन यह बात न जानी ॥
अर्जुन समय विचारो मन में
उचित सहित शिरुहानो रन में ४३
सुनि अर्जुन शरासन कर लीन्हें
तीनि बाण सन्धारण कीन्हें ॥
सम्मुख ह्वै ललाट महँ मारे ॥
भेदि शीस शर निकसे पारे ४४

दोहा॥

काँक ओर शर पारहै गड़े भूमि वह वान॥
यहि विधि ते शर शय्यदिय भारत के मैदान ४५

चौपाई॥

धर्म्मराज रोदन बहु कीन्हों॥
भीषम सों कछु कहबै लीन्हों।
केवल दुर्य्योधन के पापहि॥
परशुराम दीन्हों निज शापहि ४६
नाते भयो मृत्यु को कारण॥
सम्मुख दरश करो जग तारण
हँसि भीषम यह बात बखानी
साधु नरेश परम सज्ञानी ४७
दक्षिणायन रवि नाशक कहिये
नाते शर शय्या में रहिये॥
उतरायण रवि होइहि जब ही
करिहौं देह त्याग निज तब ही ४८

नरोत्तमदास॥

दीनता का वर्णन

विप्र सुदामा बसत है सदा आपने धाम॥
भिक्षा करि भोजन करै हिये जपै हरिनाम १
ताकी घरनी पतिव्रता गहे वेद की रीति॥
सुबुधि सुशील सलज्ज अति पति सेवा सों प्रीति २
कह्यो सुदामा एक दिन कृपा हमारे मित्र॥
करत रहैं उपदेश प्रिय ऐसो परम विचित्र ३
महादानि जिन के हितू यदुकुल कैरव चन्द।
सो दारिद सन्ताप को मेटै दीजत दन्द ४
कह्यो सुदामा बाम सुनु अति ही कृपा सुभाय।
सत्य भजन भगवान को सहित धर्म्म जप योग ५

घनाक्षरी॥

लोचन कमल दुख मोचन तिलक भाल॥
मणिमय कुण्डल मुकुट बाँधे माथ हैं॥

ओढ़े पीत बसन गरेमों वैजयन्ती माल ॥ ॥
शङ्ख चक्र गदा और पद्म लिये हाथ हैं ॥
नरोत्तम कहै सुभग रूप सान्दीपिन के ॥
तुम्हीं कहो हम वे पढ़ैया एक साथ हैं ॥
द्वारका के नाथ दूर दारिद करैंगे पिया ॥
द्वारका के नाथ वे अनाथन के नाथ हैं ॥

सवैया॥

शिक्षक हौं सिगरे जगको गुरु
ता कहँ तू अब देत है शिक्षा
जे तप कै परलोक सुधारत
सम्पति की तिन के नहिं इच्छा
मेरे हिये हरि के पद पङ्कज।
बार हजार लै देखु परीक्षा
औरन को धन चाहिये बावरि
ब्राह्मण को धन केवल भिक्षा॥
कोदो सवाँ जुरतो भरि पेट तो
चाहती ना दधि दूध मठौती।

प्रीत व्यतीत भयो सिसियात ही
हौं हठती न तुम्हैं न हठौती ॥
जो सुनती न हितू हरि सों तुम्हैं
काह्यक द्वार के पेलि पठौती
या घर ते न गयो कबहूँ पिय।
टूटो तवा अरु फूटी कठौती ८
छाँड़ि सबै तक तोहिं लगी बक
आठहु याम यही बक ठानी।
जानति हौं दैहै लदाय लढ़ा भरि
लेहौं लिये तू यही जिय जानी
पावै कहाँते अटारी अटा जिन
कोहे लिखी विधि दीठि पखानी
जो पै दरिद्र लिखो लिलाट तौ काहू
को त्यहि मेटि सकैगो अयानी ८
प्रीति में चूक नहीं उन के कछु
मोको मिलैं हरि कण्ठ लगायकै
द्वार गये कछु दैहैं पै दैहैं वे ॥
द्वारका नायके हैं सब लायके

बातन बीति गये प्रण दै अब
तौ पहुँचो विरधापन आय कै
जीवन केतुक जाके लिये हरि
के अब होउ कलावदो जाय कै १०
हूजे कनौड़े बार अपार हितू
जो पै दीन दयालु सों पाइये॥
तीनिहुँ लोक के नायक हैं तिन
के दर बार न जात लजाइये॥
मेरो कह्यो मन में धरिये प्रभु
भूलि न और प्रसङ्ग चलाइये।
और के द्वार ते कार्य्य नहीं अब
द्वारका नाथ के द्वार को जाइये ११
द्वारका जाहु जू द्वारका जाहु जू
आठहु याम यहै बक तेरे
जोन कहो करिये तो बड़ो दुख
जावैं कहाँ अपनी गति हेरे
द्वार खरे खोड़िया प्रभु के जहँ
भूपति जान न पावत नेरे॥

पाँच सुपारी विचारु तू देखि कै
भेंट को चारि न अक्षत मेरे १२

दोहा॥

यह सुनि कै तिय हर्ष सों गई एक तिय पास॥
पावसेर चावर लिये आर्द्र सहित हुलास १३
सिद्धि करी गणपति सुमिरि बाँधि दुपटिया खूट
मांगत खात गये चले मारग बोली बूट १४
भाल तिलक घसि कै दियो लियो सुमिरनी हाथ
देखि दिव्य द्वारावती कियो अनाथ सनाथ १५

घनाक्षरी॥

हरि चक चौंधि गई सब सुवरणमयी
एक ते सरस एक द्वारका के भौन हैं॥
पूछे बिन कोऊ कहूँ कान्हू से न करै बात
देवता से साधि सब बैठे करि मौन हैं॥
देखत सुदामा जू को पुर जन धाय गहे
पाय विप्र कृपा कै कहाँ को कीन्हों गौन है
धीरय अधीर के हरन परपीर के॥
बताओ चलवीर केरे धाम यहाँ कौन हैं १६

दोहा॥

दीन जानि काहू पुरुष करगहि लीन्हो धाय॥
दीन द्वार ठाढ़ो कियो दीन बन्धु के जाय १७
सिंह पँवर पग धरत ही रोंकि रह्यो प्रति हार
कोहौ विप्र चले कहाँ कहु निज चित्त बिचार १८

घनाक्षरी॥

एक ग्राम वासी सदा रहत एकही सङ्ग.
काहू याम जुदे न रहत एक मन के॥
एक ही गुरू के पढ़े विद्या बलबीरयुत
एक सङ्ग खेलत न छूटे एक क्षन के
बीते कछु काल आये द्वारका को दीनबन्धु
जात द्विजराज भेंटे चले श्याम घन के
दीजे मोहिं जाय है सुदामा मेरो नाम कहो
हम श्लोकृपा निधान मीत बालापन के १९

दोहा॥

दीनबन्धु के बन्धु गुरु जानि परी मन माहिं॥
द्वार खरिव प्रभु पहँ गयो द्वारपाल प्रभु पाहिं २०

सवैया॥

प्रीस पगा न झगा तन में॥।
प्रभुजानै को आहिबसैकहिग्रामा
धोती फटीसी लटी दुपटी अरु
पाय उपानह की नाहैं सामा॥
हार खडे द्विजदुर्ब्बल एक रहो।
चकि सो बसुधा अभिरामा॥
पूछत दीन दयाल को धाम॥
बतावत आपनोनाम सुदामा॥१

घनाक्षरी॥

बोल्यो द्वारपालसों सुदामा नाम पाँडे सुनि
छाँड्यो राज काज ऐसो जीकी गति जानैं को
द्वार को कै नाथे हाथ जोरि धाय गहे पाय
भेंटे लपटाय ऐसे और सुख मानै को।
नयन प्रेम जल भरे पूछत कृपाल हरि
विप्र बोल्यो विपदा मैं मोहि पहिचानै को
जैसी तुम करी तैसी करै को दया के सिन्धु
ऐसी प्रीति दीन बन्धु दीनन सों मानै को॥२

दोहा॥

भेंटि भली बिधि विप्र को करगहि त्रिभुवनराय
अन्तःपुर को लै गये जहँ दूसर नहिं जाय २३
मणि मण्डित चौकी कनक ता ऊपर बैठाय॥
पानी धरो परात में पग धोवन को आय २४
रुक्मिणि सोरह सहस सब सेवकिनि समेत
आठौ पटरानी रहीं चकित चितै यह खेत २५
जिनके चरणन को सलिल हरत सकल सन्ताप
पाँय सुदामा विप्र के धोवत सो हरि आपु २६

सवैया॥

कैसे बिहाल बिवाइन सों भये
कण्टक जाल गरो पग जोये॥
हाय महा दुख पायो सखा तुम॥
आये इते न किते दिन खोये
देखि सुदामा कि दीन दशा॥
करुणा करिके करुणानिधि रोये
पानी परात को हाथ छुयो नहिं
नैनन के जल से पग धोये २७

दोहा॥

धोय चरण पट पीत सों पोंछ्यो श्री यदुराय॥
सत्य भामा सों कह्यो प्रभु करो रसोई जाय २८
तण्डुल तिय दीन्हों हुते आगे धरिबो जाय
लिख्यो रुचि राज सम्पति सुख दई नहिं सकत लजाय २९
अन्तर यामी आप हरि जानि भक्त की रीति
हृदय सुदामा मित्र को प्रकट जनाई प्रीति ३०
कछु भाभी हम को दियो सो तुम काहे न देत
चापि गाठरी काँख में रह्यो कहो कहि हेत ३१

सवैया॥

आगे चना गुरु मातु दये ते॥
लये तुम चाबि हमैं नहिं दीने।
श्याम कह्यो मुसुकाय सुदामा सों
चोरी की बात कही जो प्रबीने॥
गाँठरी काँख में चापि रहे अब
खोलत क्यों न सुधा रस भीने॥
पाछिली बानि अजौं न गई तुम
देत ही भाभी के तण्डुल कीने ३२

दोहा।।

सकुचत छोरत गाँठि को हरि हेरत त्यहि ओर
जारण पट छोरत फटो विथुरि परे त्यहि ठौर ३३
एक मूठी हरि भरि लई दई स्वमुख में डारि
चबत चबाव लगो करन चतुरानन त्रिपुरारि ३४

सवैया।।

काँपि उठी कमला जिय शोचत
मोको कहा हरि को मन रोको।।
सिद्धि छिपैं नवनिद्धि छिपैं हरि
ऋद्धि छिपैं यह ब्राह्मण धोको
शोर परो सुरलोकहु में जब।।
दूसरी बार लिया भरि भोको
मेरु डरैं बरबशैं जनि मोहि
कुवर चबातें चावर चोको ३५

दोहा।।

मूठी तीसरि लेत ही रुक्मिणि पकरी बाह।।
तुम्हें कहा ऐसी भई सम्पति को अनचाह ३६

कह्यो रुक्मिणी कान्ह सों यह धौं कौन मिलाप
करत सुदामा आप सम होत सुदामा आप ३७
याही कौतुक के समय कही सेवकिनि आय
भई रसोई सिद्ध प्रभु भोजन करिये जाय ३८
विप्र सहित असनान करि धोती पहिरि बनाय
सन्ध्या करि मध्याह्न की चौका बैठे जाय ३९

घनाक्षरी॥

रूपे के रुचिर थार पायस सहित घृत
जीती जन शोभा सब शरद के चन्द की
दूसरे पहिति भात सो धौं सुरभी को घृत
फूले फुल्ल कान फल फूल द्युति मन्द की
पायर सुगोरी बरी बेसन अनेक भाँति
देवता बिलोकि रहे देवकी के नन्द की
या विधि सुदामा जी को अच्छे कै ज्यवाँय प्रभु
पाछे कै पछावरि परोसी आय कन्द की ४०

दोहा॥

सात दिवस यहि विधि रहे प्रति दिन आदर भाव
चित्त चल्यो गृह चलन को ना को सुनई बनाव ४१

देवे हुते सो दे चुके विप्र न जाने गाथ ॥
चलती वार गोपाल जू कछू न दीन्हो हाथ ४२
रहियो आवत जात दून कहत न आई लाज
ऐसे आवन जान सों हौं आयों अब बाज ४३
हौं कब दून आवत हुतो वाही पठयो घेलि ॥
कहिहौं धन सों जाय के अब धन धरहु सकेलि ४४
और कहा कहिये जहाँ काञ्चन ही के धाम ॥
निपट कठिन हरि को हियो मो को दियो न दाम ४५
दून शोचन शोचत झरत आयो निज पुर तीर
दीठि परी एकबारही हय गजेन्द्र की भीर ४६

सवैया ॥

वैसही राज समाज बनो गजराज
घने मन सम्भ्रम छाये
वैसेई काञ्चन के सब धाम हैं
द्वार के माहिं मनो फिरि आये ॥
भौन विलोकि चको मन शोचत
लोचत ही सब गाँव भमाये

पूछत पैज परी सब सों अब ।।
औपड़ी को कहुँ खोज न पाये४७

दोहा।।

पहुँचि रहे निज भवन बहु दिवस लीन्ह सुख भोग।
अन्त गये हरि पुर सहित निज नगरी के लोग ४८

नवल दास कवि।।

भक्तों की प्रशंसा।।

दोहा।।

भक्त एक ते एक जग जनि कोउ करै गुमान।।
कोउ प्रकट कोउ गुप्त है जानि रहे भगवान१

चौपाई।।

सुनहु उमा हरि प्रिय दुख माना
गयो त्वरित सुनि कृपा निधाना
रुक्मिणि वचन कहा कछु ऐसे
दीन सुमन सत्य भामहिं कैसे२
वहिते सरस फूल जो होई।।
नौ मेरे घर आवै कोई ।।

फिरहु तुम्हार अरथ सब पावा।
जाहु जहाँ बैठी सत्य भावा ३
प्रभु सुनि त्वरित फिरे वहि पाये
आय निकट अर्जुन हिं बुलाये
तासों कहि अति वचन उचारथ
कदली बनहिं जाहु चलि पारथ ४
फूल सुगन्ध राज ले आवहु।
धावहु त्वरित गहरु नहिं लावहु
कसा निरवङ्ग धनुष सम्भारी
साँझहि गमन कीन्ह धनुधारी ५
पहुँचे प्रात वही वन माहीं॥
पारिजात जहँ बहुत बसाहीं
जग मगात जैसी फुल वारी॥
मानहुँ रवि शशि किरण पसारी ६
विटप अनेक गगन लहि बाढ़े
फूलि फूलि नव पल्लव काढ़े॥
वचन लाय रहे अशा माना॥
सबुज रङ्ग जनु गगन सुहाना ७

तामिच फूल नरवन सम सोहा॥
पारि जात रवि शशि मन मोहा॥
उदय प्रकाश वास युत जोती
बहुत नषत जनु मणिगण मोती॥
फूल अनेक गिरहिं तजि डारा॥
मनहुं गगन घन दृढहिं तारा॥
सुमन अनेक जाति फल काहीं
दूसर गगन मनहुं कोउ नाहीं॥

दोहा॥

कोउ शुक्र कोउ वृहस्पति कोउ मङ्गल की भाँति
कोउ कचपचि यन्ह उदय घन सुमन अनेकन जाति १०

चौपाई॥

यह छवि देखि छकित भये पारथ
सुमन लेन लाग्यो हरि स्वारथ
वानर चारि रहहिं रखवारा॥
हनूमान के चौकी दारा ११
दूरत देखि शारव मृग धाये।

हनुमानहिं यह खबरि जनाये
मानुष एक धनुष शर ताने ॥
तोरत फूल मनो नहिं माने १२
यह सुनि पवनकुमार रिसाना
क्रोधवन्त आया बलवाना।
आय कह्यो कपि अति रिसपागी
यमपुर जावा चहत अभागी १३
खेवल कुटिल अन्यायी चोरा॥
कहु काके बल फूलन तोरा ॥
तूरत फूल जानि सुनि पाऊँ ॥
नाहिं त्वरित यमपन्थ पठाऊँ १४
ये रघुबर पूजा के कारन ॥
तोरत मैं जानत संसारन ॥
दूसर और कौन अब आयो।
खेचौं खाल सुने जिमि पायो १५
हनूमान या बिधि कहि बोले।
मारयो क्रोधवन्त रव खोले॥
डार डार मैं कूदत डोलत ॥

मर्कटमूढ समुझि नहिं बोलत १६
फल भक्षक रक्षक निज काया
मह भटन सन बाद लगाया॥
बचन अनेक कहे बिन लाजा
बीरन सों कहुँ परयो न काजा १७
जो रघुबर निज दूत सुनायो॥
सो तिनकी महिमा हम पायो
यहि विधि कहत बहुत दुर्व्वादा
पुनि पुनि वर्णत सहित विखादा १८

दोहा॥

बड़े धनुर्द्धर तोर प्रभु घर को मरा न बाँध
गिरि ढोवत मर्कट मुये कहु कौने अपराध १९

चौपाई॥

तब हनुमत रघुबरहि बखाना
रे खल चोर मर्म्म नहिं जाना॥
दीन बन्धु रघुबीर कृपाला॥
कहु त्यहि सम को दीन दयाला २०
कल्यो माय बैर दश रावन॥

तब शिव लहु दीन मन भावन
जबहिं विभीषण प्रभु पद चीन्हा
सहजे सकुचि रामत्यहि दीन्हा २१
अरिहि मारि सुत लक्ष समेता।
सो परिवार कौन कहै नेता॥
एकहि बाण बालि जिन्ह मारा
सुग्रीवहि शिर तिलक निकारा २२
करैं राम सरितेग्रा जो चहहूँ॥
दल बल भार बाण नहिं सहहूँ
नाते श्रानि षषानन राखे॥
हनूमान या बिधि कहि भाखे २३
कहपारथ निज तेज सँभारौं॥
मैं शर पर संसार उतारौं॥
कह कपि रघु सबै संसारा॥
मोहिं चढ़ाय उतारु न पारा ६७
मोहिं चढ़न करु पोढ़ बनाई॥
मानहु सैन्य उतरि सब श्राई॥
तब दोउ जने सिन्धु पहँ श्राये

हनूमान सम वचन सुनाये २५
बाँध बाँधि के मोहि देखावौ॥
तौ निज प्राण दान करि पावौ
तब पारथ कीन्हौं धनुधारी॥
शर समूह को सके बिचारी २६
कोटिन अर्ब्ब खर्ब्ब शर छाँटे।
शत योजन बाणन सौं पाटे॥
बाण बाँध निरखत हनुमाना
अपने जिय अचरज कै जाना २७

दोहा॥

यह कोउ योधा महा बल मोहि पर नहिं जानि
कपट रूप मोसन रह्यो देखि बाँध भयमानि २८

चौपाई॥

नाहि प्रबोधि तहाँ बैठाये॥॥
तब हनुमान उतर दिशि धाये।
पहुँचे जिहि बन बिबिधि पहारा
योजन सहस देह बिस्तारा २९

अयुत कोटि पर्व्वत हनुलीन्हों
रोम रोम सब बन्धन कीन्हों।
कर काँधे कछु मेरु सहाये॥
धवलागिरि हि शीस धैलाये३०
याविधि रूप भयङ्कर कीन्हा॥
भूमि अकाश जात नहिं चीन्हा
चारि हजार कोश लहि काया
पैलि देह सब जगत देखाया३१
बाढि माथ रवि मण्डल लागा
देखत सबै देव गण भागा॥
रवि छपि गयो भई अँधियारी
प्रलय होन चाहत जनु भारी३२
गर्ज्जि तर्ज्जि तड़प्यो विकराला
धायो क्रोधवन्त जनु काला॥
गर्व्व अवहिं तिय कूप सुखानी
रहिगा सिन्धु अकेलहि पानी३३
अर्ज्जुन अन्धकार जब देखो॥
मन महं अति अचरज करिलेखो

मन महँ सोच करत अस भारी
याके चढ़त बाँध को रारवै ३४
राम भक्त हनु परम सयानो॥
नाहक मैं यासन अरुझानो॥
अब तो राम रखावहु मोही।
मैं जानत प्रभु एकै तोही ३५
बाना तोर मोर नहिं कोई॥
यह अपमान तोर प्रभु होई॥
मन ही मन अर्जुन अस भाषे
दूषन बाँध मोहिं नहिं राखे ३६
अब नाही प्रभु मोर उबारा॥
जस बूझै तस करहु विचारा॥
जब कहुँ परत दास कहँ गाढ़ा
तबहीं होत राम तुम ठाढ़ा ३७

दोहा॥

पारथ भे अति विकल तन देखि भयङ्कर कीश
उर अक्षर सुमिरत खड़े तुम रखवहु जग दीश ३८

चौपाई॥

तब श्री पति अपने मन जानो।
दूनो परम भक्त अरु मानो॥
कमठ शेष महि भार न सहई।
वाणा बाँध कोनी विधि रहई ३९
जो हनुमान घात कै पावै॥
पारथ को यमलोक पठावै॥
मैं अति युक्ति करौं अबकोई।
काहू कर अपमान न होई ४०
भक्त मोर दूनो अति प्यारे॥
यह कहि श्री जगनाथ सिधारे
गुप्त रूप अति रची उपाई॥
जाविधि रहै डुबो सर माई ४१
कमठ रूप जल भीतर कीन्हो
शर के हेठ पीठि प्रभु दीन्हो॥
याबिधि प्रभु आये जल माही
हनु पारथ जानत कोउ नाही ४२

पवन तनय अर्जुन्हिँ पुकारी।
धरत पाव शर बाँध सँभारी॥
पुनि पारथ सहसा करि भाखो
जाहु निशङ्क बाँध हमराखो ४३
यह सुनि क्रोध हनौमन कीन्हो
आय पाय शर ऊपर दीन्हो॥
पीठि दबी सहि सक्यो न भारा।
मुख ते छूटि रुधिर की धारा ४४
रक्त वर्ण सागर सब देखा॥
पवन कुमार अचम्भव लेखा
है शर तर कोउ जीव लुकाना
जानित कचरि गयो गरुआना ४५
लाग्यो ध्यान करन त्यहि ठाईं॥
देखा शर तर बैठि गोसाईं॥
आयो लंकहि त्वरित हनुमाना
त्राहि त्राहि मैं भेद न जाना ४६
मैं पशुमूढ़ काह यह कीन्हा॥
हरि के शिर ऊपर पगु दीन्हा

जानि पाद नहिं धक्यौं कृपाला
तुम जानत सब के उर हाला ४७

दोहा ॥

त्राहि त्राहि अब त्राहि मोहिं दीन बन्धु भगवान
मैं मतिमन्द न जान्यऊँ भयो मोहिं अभिमान ४८

चौपाई ॥

भक्त तुम्हार एक ते एका ॥
प्रगट गुप्त बहु भाँति अनेका ॥
जो कोउ भक्त गुमान धरावै ॥
सो प्रभु को सपन्यहु नहिं पावै ४९
कमठ रूप छोड़ा बन चारी ॥
आये निकसि पिताम्बर धारी ॥
चरणन लोटि गये हनुमाना ॥
धन्य धन्य प्रभु कृपानिधाना ५०
मैं मति मन्द अधम अपराधी ॥
तुम प्रभु दीना नाथ अगाधी ॥
चूक मोरि कहि खोरि लगाऊँ
अब कहि भाँति माफ करिपाऊँ ५१

साफ़ साफ़ नारायण भाषा॥
दूनो कर दूनो शिर राखा॥
नारायण अपन्यहिं मुख भाषे
दूनो भक्त बराबर राखे ५२
ताते पार बती सुनु रमा ॥॥
हनु अर्जुनहिं सो अन्तर कैसा
बार बार सुनि मगन भवानी
कह मृदु बचन जोरि युग पानी ५३

हरिगीति का॥

तुम धन्य धन्य पुरारि जाहि मुरारि सरहत आपही
प्रभु तरण तारण जग उधारण मोहि सब सन्ता पही
संसार तारण कार्य्य कारण चारु कीरति गाइये
पुनि भक्तही के चरित सुन्दर और माहि सुनाइये ५४

लल्लूजी लाल कवि॥

दृष्टान्त॥

दोहा॥

भाव सरस समुझत सबै भले लगे यहि भाय
जैसे अवसर की कही बाणी सुनत सुहाय १

नीकी पै फीकी लगै बिन अवसर की बात॥
जैसे वर्णत युद्ध में रस शृंगार न खात २
फीकी पै नीकी लगै कहिये समय विचारि
सब के मन हर्षित करै ज्यों बिवाह में गारि ३
जाही से कछु पाइये करिये ताकी आस॥
रीते सरवर पर गये कैसे बुझत पियास ४
भले बुरे सब एक से जौलौं बोलत नाहिं
जानि परत है काक पिक ऋतु बसन्त के माहिं ५
मधुर वचन ते जात मिटि उत्तम जन अभिमान
तनिक शीत जल सों मिटत जैसे दूध उफान ६
सबै सहायक सबल के कोइ न निबल सहाय
पवन जगावत आगि को दीपहि देत बुझाय ७
प्रकृति मिलेते मिलत है अनमिलते न मिलाय
दूध दही ते जमत है काँजी ते फटि जाय ८
पर घर कबहुँ न जाइये गये घटत है ज्योति
रविमण्डल में जात शशि क्षीण कला छवि होति ९
मूरुख गुण समुझै नहीं तो न गुणी में चूक।
कहा भयो दिन को विभव देख्यो जौन उलूक १०

मूरख तहाँ हीं मानिये जहाँ न पण्डित होय॥
दीपक की रवि की उदय बात न पूछत कोय ११
निपट अबुध समुझै कहीं बुधजन वचन विलास
कबहूँ भेक न जान ही अमल कमल की बास १२
क्यों कीजे ऐसे यतन जासों कार्य्य न होय॥
पर्व्वत पर खोदे कुवाँ कैसे निकसे तोय १३
सहज रसीलो होय जो करै अहित पर हेत॥
जैसे पीड़ित कीजिये दूध तहूँ रस देत १४
कबहूँ कुसङ्ग न कीजिये किये प्रकृति की हानि
गूंगे को समुझाय बो गूँगो की गति आनि १५
कहा करै कोऊ यतन प्रकृति और की और
विष मारै ज्यावै सुधा उपजै एकहि ठौर १६
धन बाढ़े मन बढ़ि गयो नाहिन मन घट होय
ज्यों जल सङ्ग बढ़े जलज जल घटि घटै न सोय १७
सब से लघु है माँगिबो यामें फेर न सार ॥
बलिपै यों चत ही भयो बामन तन करतार १८
होत सुसङ्गति सहज सुख दुख कुसङ्ग के थान
गन्धी और लोहार की देखौ बैठि दुकान १९

ठौर छुटे से मीतहू होइ अमीत सतरात ॥
रविजल उघरे कमल को जारत गारत जात २०
गुण वालो सम्पति लहै लहै न गुण बिन कोय
काढे नीर पताल ते जो गुण युत घट होय २१
अरि छोटो गनिये नहीं जात होत बिगार ॥
त्रण सस्त्र को क्षणक में जारत तनक अँगार २२
परिडुत जुनको श्रम मरम जानत जे मति धीर।
कबहू बाँझ न जान ही तनु प्रसूत की पीर २३
गाहक सबे सपूत के सारे काम सुपूत ॥ ॥
सब को ढापन होत है जैसे बन को सूत २४
करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
रसरी आवत जात के शिल पर परत निशान २५
कह रस में कह रोस में अरिसों जनि पतियाय।
जैसे शीतल तप्त जल डारत अग्नि बुझाय २६
सुख सज्जन के मिलन को दुर्ज्जन मिले जनाय
जानै ऊख मिठास को जब मुख नीच चबाय २७
जाहि मिले सुख होत है तिहि बिछुरे दुख होय।
सूर उदय फूलै कमल ता बिन सकुचे सोय २८

खाय न खरचे मुद्धमन चोर सबल लै जाय
पीछे ज्यों मधु माखिका हाथ मलै पछिताय २९
उत्तम विद्या लीजिये यद्यपि नीच पै होय॥
परो अपावन ठौर में काञ्चन तजै न कोय ३०
अरि के कर में दीजिये अवसर को अधिकार
ज्यों ज्यों द्रव्य लुटाइ दै त्यों त्यों यश विस्तार ३१
जाहि बड़ाई चाहिये तजै न उत्तम साथ॥
ज्यों पलाश मँग पान के पहुँचै राजा हाथ ३२
बदन श्रवण अरु नासिका सबही के एकठौर
कहबो सुनबो देखबो चतुरन को कछु और ३३

गिरिधरराय कवि॥

सामयिक वार्ता॥

कुण्डलिका

बैरी बँधुआ बानियाँ ज्वारी चोर लचार॥
व्यभिचारी रोगी कृपणी नगरनारि को यार

नगर नारि को यार भूलि पर तीति न कीजै
सौ सौगन्दे खाय भूलि के चित्त न दीजै
कहि गिरिधर कविराय घरै आवै अन गेरी
मुखसों कहै बनाय चित्त में पूरो बैरी १
बिना बिचारे जो करै सो पीछे पछिताय ॥
काम बिगारै आपनो जग में होत हँसाय
जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावै
खान पान सम्मान राग रँग मनहिं न भावै
कहि गिरिधर कविराय दुख कछु टरै न टारे
खटकत है दिन रात किये जो बिना विचारे २
सार्दूं ये न विरोधिये गुरु पण्डित कवि यार
बेटा बनिता पवँरिया यज्ञ करावनहार
यज्ञ करावनहार राजमन्त्री जो होई
विप्र परोसी वैद्य आप को तपै रसोई ३
कहि गिरिधर कविराय चतुर की यहै चतुराई
दून तेरह ते तरह दिये बनि आवै साँई ४
सार्दूं अपने चित्त की भूलि न कहिये कोय
तब लगु मन में राखिये जब लगु काम न होय

जबलगु काम न होय भूलि कबहुँ नहिं कहिये
दुर्ज्जन नातो होय आपु मेरे ह्वै रहिये
कहि गिरिधर कविराय बात चतुरन की नाहीं
करतूतिन कहि देत आपु नहिं कहिये साहीं ४
चिन्ता ज्वालु शरीर बन दव लागो न बुझाय
प्रकट धुआँ नहिं देखिये उर अन्तर धुँधुवाय
उर अन्तर धुँधुवाय जरै जस काच की भट्ठी
जरिगो लोहू मांस रहीगो हाडु की ठट्ठी
कहि गिरिधर कविराय सुनो हो मेरे मित्ता
वै नर कैसे जियैं जाहि तन व्यापै चिन्ता ५
राजा के दरवार में जैये समया पाय ॥
जाय वहाँ नहिं बैठिये जहँ कोउ देय उठाय
जहँ कोउ देय उठाय बहुत अन बोलन रहिये
हँसिये नाहिं हहाय बात पूछे पर कहिये
कहि गिरिधर कविराय समय को करिये काजा
अति आतुर नहिं होय बहुरि अनखैहै राजा ६
साहीं अपने भाइ को कबहुँ न दीजे त्रास
पलक दूरि नहिं कीजिये सदा राखिये पास

सदा राखिये पासत्रास कबहूँ नहिं दीजै ॥
त्रास दियो लङ्केश नासु की गति सुनि लीजै
कहि गिरिधर कविराय राम सों मिलिगो जाई
पाय विभीषण राज्य लङ्कपति बाजो गाई ७
गाई बेटा बाप सों बिगर होत अकाज
हिरण्य कशिपु अरु कंस को गयो दुहुन को राज
गयो दुहुन को राज बाप बेटे सों बिगरी
दुश्मन दावा गीर हँसे सब मण्डल नगरी।
कहि गिरिधर कविराय उन्हें काहून बताई
पिता पुत्र के बैर कहो सुख कैसे गाई ८

बिहारीलाल कवि॥

सामयिक॥

दोहा॥

कैसे छोटे नरन ते सरत बड़न के काम॥
मढ़े दमामे जात क्यों कहु चूहे के चाम १
दुसह दुराज प्रजान को क्यों न बढ़ै अति दन्द
अधिक अँधेरो जग करत मिलि पावस रविचंद

बसै बुराई जासु तनु ताही को सम्मान॥
भलो भलो कहि छाँडिये खोटे ग्रह जप दान ३
गुणी गुणी सब कोउ कहत निगुणी गुणी न होत
सुन्यो कहूँ तरु अर्क को अर्क समान उदोत ४
सङ्गति सुमति न पावही परे कुमति के धन्ध॥
गरब गहे मलि कपूर मैं हींग न होत सुगन्ध ५
सोहत सङ्ग समान सों यहै कहै सब लोग॥
पान पीक ओठन बनी काजर नयनन योग ६
को कहि सकै बड़े न सो लखे बड़े यों भूल॥
दीन्हों दर्द गुलाब को दूनि डारन वै फूल॥ ७
शीतलता तजि सुवास की घटै न महिमा सूर॥
पीस सवारे डारि दिय सोरा जानि कपूर॥ ८
नर की अरु नल नीर की गति एकै करि जोइ
जेतो नीचो ह्वै चलै तेतो ऊँचो होइ॥ ९॥
बढ़त बढ़त सम्पति सलिल सब सरोज बढ़िजाइ
घटत घटत पुनि नहिं घटै बरु समूल कुम्हिलाइ १०

अनन्य दास कवि॥

गृहस्थ और राजाओं का योग

प्रज्ञादिका॥

का होत मुड़ाये मूड़ बार॥
का होत रखाये जटा भार॥
का होत भामिनी तजे भोग॥
जौ लौ न चित्त थिर जुरै योग१
थिर चित्त करै सुमिरन मँझार
ऊपर साधै सब लोक चार॥
अह राज योग सुख कोनिधान
कोइ ज्ञान वन्त जानत सुजान२
अर्ज्जुन रु जनक पृथु आदिलोग
राजन साध्यो सब राज योग॥
सुख राज कियो और भोगसिद्ध
को अतिथि भयो इन सम प्रसिद्ध३
यह अतिथिनहूँ ते अति अनूप॥

सुनु राज योग सिद्धान्त भूप।
सुख मारग यह पृथ्वि चन्द्रराज
यहि सम न ज्ञान तम है दुलाज४
यह राजयोग है भक्ति ज्ञान
मनसा सुमिरन धुनि रूप ध्यान
जो यह न सधै धुनि ज्ञान गूढ़
तो अजपा साधन श्वास रूढ़५
जो यह न सधै अजपा उचार
तो दृष्ट देव धरि ध्यान सार
जो ध्यान न आवै बिना देख
तो प्रतिमा थापै दृष्ट वेष ६
नित प्रतिमा पूजन दरश नित्त
सोइ मूरति धारवै ध्यान चित्त
यहि भाँति ध्यान उरबसै आनि
यह ध्यान राह नर नाहु जानि ७
जो ध्यान न सधै न लगै चित्त।
तो नेम सहित जप मन्त्र नित्त
जो मन्त्र न बिधि सों सधै राउ

तो पावन प्रभु को लेय नाउ८
तनु शुद्ध होय मुख शुद्ध वानि
मन शुद्ध होय सर्व्वत्र जानि
मन को स्वभाव भ्रमि बोअकत्य
तिहि सुमिरन साधन ज्ञान गत्यर्थ
मुख को स्वभाव बकिबो नरेश।
तिहि नाम भजन चरचा सुदेश
करि भक्ति भजन सुमिरन सुबुद्धि
मेटहिं मनको भ्रमना कुबुद्धि १०
जित जित मनसा भरमै अनन्त
तित तित सुमिरन साधन करन्त।
कछु दिन साधन करने उपाय
परिजात बहुरि मनसा स्वभाव ११
मनसा सुमिरन धुनि सहजलीन
यह राजयोग जानहु प्रवीन।
जोराज योग यह सधै राज।
तो मन वाञ्छित सब होहिं काज १२
अरु कर्म लिप्त कबहुँ न होत।

जग जीवन मुक्ति सदा उदोत।
यह ज्ञान भेद अरु वेद सारि
अक्षर अनन्य सिद्धान्त भाषि १३

दोहा॥

राज योग सिद्धान्त मत जानि राज शशि चन्द
यहि सम मत नहिं दूसरो खोजि शास्त्र बहु छन्द १४
जो चाहो संसार सुख अरु सिद्धान्त प्रकाश
तो साधो सर्व्वज्ञ यह योग सदा अभ्यास १५

रघुनाथ दास कवि॥

राम नाम की प्रशंसा

दोहा॥

राम नाम की वन्दना करौं प्रथम शिर नाय
जासु कृपा से सिद्ध सब भये सुखद समुदाय १

कुण्डलिका ॥

राम सनेही साधु सोइ करै राम से नेह ॥
वेद मते रघुनाथ भनि पन्थ पुरातम एह ॥
पन्थ पुरातम एह रवेह नाके मुख परई ॥
राम नाम के बीच नीच जो संशय करई ॥
करै न वचन प्रमाण कहै जो जनक विदेही
कलि में तुलसी दास भये पुनि राम सनेही ७

घनाक्षरी ॥

राम नाम जपत महेश प्रेम सौं गणेश
नाम जपि उमा आवागवन मिटाव है
राम नाम जपत अनन्त सन्त सनकादि
नाम जपि ध्रुव धाम अचल सो पाव है
राम नाम जपि मुनि बालमीकि ब्रह्म भये
बड़ोई प्रभाव वेद नेति कहि गाव है
कहै रघुनाथ सोई राम नाम भल मध्य
नाहि जो विदूषै सो तो मूढ़न को राव है ३
राज की चलनि कहा जानै खर कूकर ज्यों

भोगी कहा जानै योग रङ्क सुखराव को
गोमल को जीव कहा जानै वास पङ्कजकी
को लखत दासी पतिव्रता केरे भाव को
कूप केरे दादुर ते जानै कहा सागर को
नर की सो रङ्क काक हंस के स्वभाव को
कहै रघुनाथ ऐसे कूर नर मूढ़ जौन
तौन कहा जानैं राम नाम के प्रभाव को ४

सवैया ॥

राम के नाम के अक्षर है महिमा
कहि शेष सकैं न करोरी
जासु प्रसाद सुरासुर में हर
हर्षि हलाहल पान करोरी
जन रघुनाथ के माथ खर्दूजो
सजीवन सार सुधारस कोरी
रकार श्री राज कुमार उदार
मकार सो श्री मिथिलेश किशोरी ५
सत्य रकार रहै जो सदा अरु
चित्त अकार सचेतन जोरी।

आनन्द रूप मकार मिदं हरि
नाम सच्चिदा नन्द कहोरी।
जन रघुनाथ के माथ स्वर्ग
शिव वाक्य महा रामायण कोरी
रकार श्री राज कुमार उदार
मकार सो श्री मिथिलेश किशोरी ६
नाम प्रभाव सुनै न सुनै फुर
फोरि न देखिये ना मुख आरी
और विलोकत खोरि लगै हमि
ब्रह्म पुराण के माहिं लखोरी
जन रघुनाथ के माथ स्वईजो
करै शुचि शीघ्र सु लम्पट कोरी
रकार श्री राज कुमार उदार
मकार सो श्री मिथिलेश किशोरी ७
ब्रह्म में रेफ रमी पुनि धर्म्म में
कर्म्म में रेफ प्रसिद्ध न चोरी
राधा के नाम में आदि रकार
नारायण मध्य रकार लसोरी

जन रघुनाथ के माथ स्वई
सब नाम न को कुल पूरण जोरी
रकार श्री राज कुमार उदार
मकार सो श्री मिथिलेश किशोरी ८
सप्त ऋषय उपदेश से वेस दई
कादि कोकिल त्यागि ठगोरी।
नाम मरा विपरीत पुकारि
भये निस पाप ऋषय शिर मौरी
जन रघुनाथ के माथ स्वई
ज्यहि हेतु चरित्र बनो पलकोरी
रकार श्री राज कुमार उदार
मकार सो श्री मिथिलेश किशोरी ९
राम चरित्र लगे शिव बाँदन
बाँदे जु तैंतिश २ क्रोरी
तैंतिश लाख सहस्र तथोपरि
तैंतिश तैंतिश वर्ण दशोरी
जन रघुनाथ के माथ स्वई
युग शड्ड बचे लिये आपनि होरी

रकार श्री राजकुमार उदार
मकार सो श्री मिथिलेश किशोरी १०

दोहा॥

सिफ़त करै जो रवाँड की धरै न सुख अभिराम
लहै स्वादु रघुनाथ किं मिति मि सुमिरन बिननाम
सहित तन परिहास युत अस्तोभन हेलन्न
जपै नाम रघुनाथ सो उदले पाप अमितन्न १२
स्वद ज्ञानी ध्यानी स्वद दाता शूर सुजान
अति पवित्र रघुनाथ स्वद जो सुमिरै भगवान १३
शठ अशिष्य विषपाठ को तिन्है न काहिये एह
राम उपासक सों कही जो सुनि उरधरि लेह १४

मलूक दास कवि॥

हरि गुण वर्णन॥

चौपाई॥

वामन ह्वै गये बलि के द्वारे
दीन वचन हरि जाय पुकारे

माँगु माँगु बलि राजा बोले।
मने कीन्ह गुरु वचन अगोले १
साढे तीनि पैग भुइं माँगी॥
राजा कह तुम बडु अभागी
तुम कछु दक्षिणा माँग न जानी।
मैं देत्यौं आधी रजधानी २
तब वहिं कहा कर्म कर हीना
नापि लेहु मैं यह वर दीना
बढे कृष्ण तब लागि अकाशा
चकित भये बलि देखि तमाशा ३
तीन लोक तीन्हें पग कीना।
बलि छलि राज्य इन्द्र कहँ दीना
आधे पग को पृथ्वी नपाई
तब रीझे गोविन्द राई ४
तब हरि कह्यो माँगु वर राजा
सब विधि पुरवौं तोरे काजा
तब बलि कह हरि इतना कीजे
सदा आप मोहि दर्शन दीजे ५

ऐसे राम वचन के गाढ़े
राजा बलिके हूरे ठाढ़े
जहँ जहँ परै दास को गाढ़ा
मानहु राम काल्हि ते ठाढ़ा ई

मोती लाल कवि ॥

शुकाचार्य्यके जन्मकीकथा

चौपाई ॥

एक समय गिरिवर कैलासा
सहित शिवा शिव करैं विलासा
करि कछु काल राम गुण गाना
महादेव उठि गये अन्हाना॥
बैठी गिरिजा सदन सुहाये॥
ताही समय देव ऋषि आये॥
उठिके उमा विनय बहु कीन्हा
पाद्यारघ दै आसन दीन्हा॥
बैठे नारद अति सुख पाई।

तबहिं उमा मृदु वचन सुनाई
धन्य भाग्य मुनि आज हमारे॥
कृपा कीन्ह दृहवौ पगु धारे ३
कवहि कारण आगमन तुम्हारे
कहु ऋषि सो अब करौं बिचारे
यह सुनि नारद वचन उचारे
चित दै सुनिये हाल हमारे ४

दोहा॥

बहु दिन बीते ब्रह्मपुर मन महँ भयो उदास
शिव दर्शन के कारण चलि आयौं कैलास ५

चौपाई॥

शम्भु कहाँ गय शैल कुमारी।
सो हम सौं तुम कहौ बिचारी
बोली वचन उमा हित कारी
मज्जन करन गये त्रिपुरारी ६
पुनि नारद कह वचन बखानी
सुनहु एक आश्चर्य्य भवानी
नर शिर माल शम्भु उर जेऊ

तुम जानहुँ कछु तिन कर भेऊ ७
उमा कहा मुनि मैं नहिं जानउँ
मिथ्या तुम सन काह बखानउँ
तब नारद कह बचन रसाला।
तुम्हरे शिर की है वह माला ८
तुम ने कछु शिव अन्तर राखा
जो यह बात कबहुँ नहिं भाषा
जब आवै शिव करि असनाना
तब तुम पूछ्यहु सकल बिधाना ९

दोहा॥

यह कहि नारद नाय शिर भवन गये सुख पाय
तब मुनिवर के बचन सुनि उमा बैठि बिलखाय १०

चौपाई॥

यहि अन्तर शङ्कर चलि आये
देखी उमहिं बिषाद बढ़ाये॥
तबहि शम्भु बोले मृदु बानी
कबहि कारण दुख कीन भवानी ११
तबहि उमा कह पद शिर नाई

संशय एक सुनहुँ मम मार्दू
तुम्हरे हृदय मुण्ड की माला
सो किहि के शिर कहहु कृपाला १२
तब शङ्कर बोले मुसु कार्दू ॥
को तुम्हारि यह मति भर मार्दू
मुण्ड माल मम हृदय भवानी
कथा नाहि की सुनहुँ सयानी १३
जब जब जन्म तुम्हारो होई ॥
राम कृपा ते व्याही सोई ॥
समय पाय जब त्यागहु देही
तब तब शिर की माल करेही १४

दोहा ॥

जेते जन्म तुम्हारि भे देह तजे कारि भोग ॥
तेते शिर की माल किय प्रिया तुम्हारे योग १५

चौपार्दू ॥

यह सुनि गिरिजा गिरा उचारी
सुनहुँ वचन मम नाथ पुरारी

तव अवतार भयो प्रभु एका
किहि कारण मम जन्म अनेका १६
मोरे मन प्रभु भयो अँदेशा।
सो समुझाय कहहु विश्वेशा
तब शिव बोले गिरा सुहाई॥
हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई १७
बीज मन्त्र रघु नायक केरो॥
सो मम हिय किये सदा बसेरो
ताते मोर होइ नहिं नाशा॥
डरै काल तम मन्त्र प्रकाशा १८
बीज मन्त्र तुम जानत नाहीं।
ताते जन्म धरहु बिपुलाहीं॥
तब गिरिजा बोलीं कर जोरी
विश्वनाथ सुनु विनती मोरी १९
दासी जानि कृपा अब कीजै।
बीज मन्त्र हम को प्रभु दीजै॥
प्रेम सहित हम सुनब कृपाला
यासों कहिये दीन दयाला २०

दोहा॥

शङ्कर बोले वचन तब सुनहुँ प्रिया मम बानि।
बिपुल जीव सब शैल पर किहि बिधि कहौं बखानि २१

चौपाई॥

जो यह मन्त्र सुनै कोइ पावै॥
ताके काल निकट नहिं आवै।
अजर अमर सो होइ भवानी
ताते किहि बिधि कहौं बखानी २२
तब गिरिजा कह वचन सुहाई
जीव सकल प्रभु देहु भगाई॥
तब शङ्कर चिंतेउ करि क्रोधा।
भागे जीव विकल चहुँ कोधा २३
आदि पिपील जीव जहँ नाई
सो चट पट सब गये पराई॥
जीव रहित गिरि देखि कृपाला
बैठि बिछाय नाग रिपु छाला २४
ढिग बैठीं गिरिजा अनुरागे॥
तब शिव बीज सुनावन लागे॥

जिहि नरु तर बैठे गिरि नाहा
तहँ एक नीड़ कीर कर राहा२५

दोहा॥

तिहि मन्दिर सों अण्ड एक धरि खग गयो उड़ाय
जो भावी सो ना मिटै सुनहु युधिष्ठिर राय॥ २६

चौपाई॥

अण्डा जीव सुने मन लाई॥
बीज मन्त्र शिव उमहिं सुनाई॥
कहत सुनत उपजत सुख नयऊ
बारह बर्ष बीति तब गयऊ २७
जो २ मन्त्र उमहिं शिव दीन्हा
अण्ड फूटि सो सब सुनि लीन्हा
द्वादश वर्ष बीति जब गयऊ
निद्रा वश गिरिजा तब भयऊ २८
सोवत जानि गिरीश कुमारी।
तब तें कीर दई हुङ्कारी॥
एहि अन्तर कहि कथा सिरानी
शिव देखा गई सोय भवानी २९

उमहिं जगाय कहा शिव बानी
कहँ लगि सुन्यौं सो चीज सयानी
जहँ लग सुना कहा सब गाई
अन्तर लखि शिव कह अनखाई ३०
कथा पुराण मैं कहा बखानी
हुङ्कारी को दीन भवानी ॥
उमा कहा प्रभु मैं गइ सोई
देखहु नाथ जीव कोउ होई ३१
तब पाङ्कर देख्यो करि ध्याना
सुन्यो बीज खग कीर सुजाना।
कर त्रिशूल लै उठे रिसाई
देखि कीर उडि चल्यो पराई ३२
दोहा॥
पाछे शिव धावत फिरे किये क्रोध सुख मूल
भावी बश नृप कठिन है छूटन शम्भु त्रिशूल ३३
चौपाई॥
जहाँ जहाँ खग शरणाहिं भाषी
शिव तस्कर लखि सकै न राखी

भाग्यो खग व्याकुल अति शोका
भ्रमत फिर्यो सो त्रैलोका ३४
जब अति विकल कीर मन भयऊ
उड़त उड़त व्यासा श्रम गयऊ
व्यास नारि त्यहि समय भुआरा
मज्जन करि तब रविहि निहारा ३५
नाहि तबै आई जंभु आई ॥
वदन पन्थ खग जठर समाई
पाछे शम्भु पहुँचे आई ॥
शम्भु देखि त्रिय माथ नवाई ३६
बोले शिव सुनु ऋषि की नारी
चोर हमार तु देहु निकारी ॥
सुनि त्रिय कहा नाथ नहिं जानौं
यहां चोर को मर्म बखानौं ३७
तब तियसों कह शम्भु सुजाना
जठर तुम्हारे चोर समाना ॥
नाही को हम ढूढ़त आई ॥
मृषा न बात सत्य हम कहई ३८

दोहा॥

दे निकारि रिपु मोरहै करहु वचन विश्वास।
नहिं तो अबही मुनिविया करौं तुम्हारो नाश॥

चौपाई॥

यहि अन्तरहि व्यास मुनि आये
देखि शिवहि पद शीस नवाये
समाचार सुनि कहा मुनीशा
वचन हमार सुनो जगदीशा ४०
विया जाति प्रभु बधना कीजै।
बालक होइ तुम्हहिं सो लीजै
मुनि के वचन सुने अति हेतू।
भये प्रसन्न तबै वृषकेतू ४१
पुनि मुनिसों तब कह्यो महेशा
दिह्यों पुत्र त्वहिं तजो अंदेशा
पाणि जोरि मुनि विनती कीन्हा
है प्रसन्न तब शिव वर दीन्हा
होइहि पुत्र महा विज्ञानी॥
नामु चरिव तिहूं पुर जानी

वरदे शम्भु गये कैलाश।
मुनिहिं पुत्र की उपजी आश।४३

दोहा।।

पूरण दिन बालक भयो शुकते सुनहुं मुआरि
शुका चार्य्य अस नाम तिहि राखा व्यास विचारि

कृपाराम कवि।।

कृपिणतासहन शीलता और मनोबन्धनता
का वर्णन।।

चौपाई।।

सुनि उद्धव के मृदु शुभ वचना
जनु पियूष साने बहु रचना।
अति कृपालु सज्जन सुखदायक
बोले गिरा मधुर यदु नायक १
हे उद्धव ऐसो नहिं कोई।।
दुर्ज्जन वचन क्षुभित नहिं होई

मर्म्म वाण लगि अस दुख नाहीं
दुष्ट वचन जस घाव पिराहीं २
दुर्ज्जन वचन सहै जो साधू ॥
उन को यश गुण शील अगाधू
सहन शील बिन साधु न होई
है अति कठिन सहै जन कोई ३
परमैं तोहिं उपाय बताई ॥
सहन शीलता उर ठहराई ॥
मोसों सुनहु एक इतिहासा ॥
जा सुनि होय हिये परकाशा ४
भिक्षुक एक ज्ञान मय भावी ।
ताकी तोहिं सुनावौं सारवी ॥
दुष्टन कियो बहुत अपमाना
ताड़न गारि देहि बिधि नाना ५
तिन भिक्षुक गाथा एक गाई
कुमति आपनी धोय बहाई ।
सो अब सुनौ सुचित ह्वै मोसों
निज जन जानि कहत हौं तोसों ६

दोहा॥

मालव देश सुवेश अति भूसुर एक धनवन्त
कृषी वणिज मन्नत करै कामी कृपण असन्त

चौपाई॥

अति लोभी क्रोधी यश हीना
धनो इव्य रह सदा मलीना
जोनर होइ बहुत धनवन्ता॥
सुख जासौं पुनि लहैं न सन्ता
निज तनु को पीड़ा पुनि देई॥
पुत्र दार हित करैं न तेई॥॥
देव पितर गण मन्त न पोषै
भगिनिहिं भूलि कबहुं नहिं तोषै
सो कदर्य्य जामें गुण ऐसो॥
यहि ते पाप रूप कहु कैसो।
वह कर्ज्जी भूसुर अति भयउ
सब जग में अति अपयश लयउ॥
बन्धु ज्ञाति मित्रन के निजतनुहूं
इनहूं हेतु खर्च न कबहूं॥

पुत्र आदि कलपैं बहु भाँती
आति भृत्य दुख सहैं दिनराती ११
कन्या अरु कलत्र कुल सारा
जे सम्बन्ध सगे संसारा ॥
ते सब द्रोह निरन्तर करहीं
ताको प्रिय नहिं कोऊ चरहीं १२
ऐसो पाप देखि अति नाको
यज्ञ समान वित्त है जाको ॥
धर्म्म काम ते सब विधि हीना
इहँ लोक के सुख करि छीना १३
जिन हित पञ्च यज्ञ जन करहीं
गेही सकल दण्ड नित भरहीं
सकल देव तासों करि कोपा ॥
तिन करि भयो विप्र धन लोपा १४

दोहा ॥

कछु धन चोरी ते गयो कछु आतिन हरि लीन
कछु धन पावक तेज ज्यो भयो काल तन हीन १५

सोरठा॥

विप्र भयो अति दीन राज दण्ड बहु धन गयो
यहि विधि सब धन छीन भयो तासु अपमान बहु १६

चौपाई॥

बहुत कष्ट करि धन उपराजा
दियो न खायो मों बिन काजा
तब यहि उपजी चिन्ता भारी॥
निशि दिन धन हित भयो दुखारी १७
महा ताप तापित सो भयऊ॥
नयन प्रबाह रोग उर छयऊ॥
ऐसी विधि उपजा वैराग्या॥
छोड्यो जासु करि जग दुख त्याग्या १८
तब सो द्विज बोला अकुलोई
धिक २ अधम न मो सम कोई
अहो वृथा मैं बहु श्रम कीन्हा
आप आप को दुख बहु दीन्हा १९
मैं धन कीन्ह बहुत अस पाई॥
सो भोजस सपने सुख जाई॥

मैं रावयों नहिं दियो न काहू।
केवल श्रुतयश भा यहिलाहू २०
इत सुख लहै न उत सुख होई
उभय लोक निज करतिन खोई
बहुत झूँठ कहि जिन धनजोरा
तिन कहँ यम पुर विपति कठोरा २१
परम यशस्वी बहु गुण वन्ता
पण्डित श्रुरु जे बड़ कुल वन्ता
सकल शिरोमणि जग सबजाना
श्रति कमनीय रूप जग माना २२

दोहा॥

ऐसे नर जो जगत में जो यद्यपि कछु लोभ॥
तो सब गुण श्रव गुण भये त्यहि पुनि कछु श्रनशोभ २३

चौपाई॥

जैसे रूपवन्त नर होई॥ ॥
कौन्यहुँ श्रङ्ग विघ्न नहिं कोई
होत कुष्ठ रन्ध्रक भा जाही॥
सकल रूप शरङ्गार बताही २४

ऐसहि घोरौ भाज्यहि लोभा
मिटै सकल गुण रूपन शोभा
जब ते धन हित उद्यम करई॥
बढ़न हेत सुख सब परिहरई २५
तब ते शोक त्रास भय पावै॥
चिन्ता पावक नितहि दहावै॥
सिद्ध भये अरु रारवन हेतू॥
पुनि ते सहैं कष्ट अध केतू २६
भोग न करै नाश जब होई॥
तब पुनि बहु दुख पावै सोई
हिंसा दम्भ मृषा अरु चोरी॥
काम क्रोध मद गर्व्व बहोरी २७
बैर भेद अरु गत विश्वासा॥
बहुत सपर्द्धा ह्वै हरि दासा॥
पुनि तिय सङ्ग द्यूत मद पाना।
पन्द्रह महा अनर्त्थ बखाना २८
षट हिंसादि प्रथम धन हेतू॥
होहिं अनर्त्थ महा धन केतू

भये अर्थ नव अनरथ होई
मदते आदि कहे सब जोई २९
जो चाहै कोउ निज हित कीन्हा
दूनहिं दूर करि देय प्रवीना
अर्थ्य नाम सुनि भूलहिं लोका
बिन विचार पावैं दुख शोका ३०
भ्राता पिता पुत्र अरु दारा ॥
स्वजन सुहृद जे निजपरिवारा
कौड़ी बीस लागि अज्ञानी
बैर करहिं सुखतजि अभिमानी ३१

दोहा ॥

आप आप मैं बैर करि युद्ध करैं नर मूढ ॥
तिहि मारैं आपन मरैं समझैं अर्थ्य न गूढ ३२

सोरठा ॥

धन हित निज प्रिय प्रान तजहिं नाहि छण सहज ते
अनिअघ दोष निदान जाहिं मूढ पुनि अधम गति ३३

चौपाई॥

जा तन को याँचहिं नित देवा
मिलै न सो लावहिं नित सेवा
सो नर तन तामें द्विज जाती॥
सो तनु पाय बहुरि दिन राती ३४
भज्यौ न कृपा सिन्धु सुख धामहिं
खोवै मूढ़ रत्न बिन कामहिं॥
निज हित करै न नर तनु पाई
दुख बहु सहै अधोगति जाई ३५
यह नर देह मुक्ति कर द्वारा॥
ताहि पाय कस भूलु गँवारा॥
जो अनर्थ तामह मन लावा
मूढ़ जन्म तिन व्यर्थ गवाँवा ३६
देव पितर ऋषि भूत सहाया॥
पुत्र मित्र गुरु स्वजन रु जाया
घर धन होइ तोषि नहिं इनहीं
जाहिं अधोगति बड़ दुख तिनहीं ३७

सो तनु धन में व्यर्थ गवाँयो॥
भव दुख ते नहिं आप बचायो॥
अब जप तप करि अङ्ग सुखाई॥
भजो मुहरिपद मन चित लाई॥३८

दोहा॥

अनुमोदन जो करहिं सुर तो मम काज न होइ।
यद्यपि मैं अति वृद्ध हौं हरि पद दूषन कोइ॥३९

चौपाई॥

नृप खड्ग धरी है माहीं॥
प्रभु पद गया नजहं जग जाहीं॥
प्रभु सम को कृपालु जग माही॥
जन को प्रकट होत पल माही॥४०
मन वच काय भजो अब ताही॥
दीन बन्धु श्रुति कह नित जाही॥
निश्चय करि ममता तजि भूरी॥
भिक्षुक भयो बुद्धि अब रूरी॥४१
क्षिति विचरै मन गहि एकाकी॥
इन्द्रिय युत निग्रह अभिलाकी॥

भिक्षा हेतु जाय सब ठामा।
फिरै अलक्षित पुरगृहग्रामा ४२
भिक्षुक विप्र वृद्ध को जानी
दुष्टन तिरस्कार बहु ठानी॥
कोऊ दण्ड छीनि ले तासू
कहि दुर्व्वचन देय कोउ त्रासू ४३
पात्र कमण्डलु कोउ लेछीनी
मारग रोकि गारि बहु दीनी
कोउ कन्था को करि परिहारू
हरहिं चीर कोउ बिनहिं विचारू ४४

हरिगीतिका॥

कोउ देत गारि पुकारि बहु विधि कहहिं मंदअचेतहै
कोउ देत बासन बसन फेरि सुलेत बहु दुख देतहै
कोउ भजत भिक्षान्न खान लै तिहि माँझ कोउ थूकेघनो
कोउ मूति शिरपर धूरि डारै तरजि बाँधि पशू मनो ४५

दोहा॥

कहहिं मूढ तें बोलुरे जब वह मौनी होइ॥
नहिं बोलै तो नाहि सब मारहिं नरपशु सोइ ४६

सोरठा॥

एक तर्जे कहि ताहि चोर चोर यह मन्द है
कोउ दुरै पुनि ताहि एक कहै यह शठमहा ४७

चौपाई॥

भयो सकल धन हीन अभागा
तब यहि ग्रह कहँ भयो विरागा
सकल कुटुम्ब त्यागि यहि दीना
उदर निमित्त वेष धरि लीना ४८
देखो यह कैसो है मोटो॥
महा प्रबल अन्तर को खोटो
देखौ हम पनि सगरे हारे॥
यहि केमन न भयो दुख भारे ४९
धीरजवन्त अचल यह कैसो
पवन प्रचण्ड मेरु गिरि जैसो।
भाँति कादि दुख भावे जैसे
तिन बहु भाँति रहैं सब तैसे ५०
वर्षा शीत उष्ण दुख जेते॥
ये दैविक दुख जानहु तेते॥

ज्वर अरु ताप उदर बहु रोगा
शिर अरु व्रण बहु दैहिक शोगा ५२
ऐसे बहु विधि दुख तिन पावा
सुख नहिं कबहूँ तिहि ढिग आवा
पर तिन कछू न मन में आने
अपने करे कर्म्म तिन माने ५३
तब तिन भाषी गाथा नीकी ॥
पावन परम सुखद सब जीकी
सुख दुख देन हार को मोही
यह नर आप आपनो द्रोही ५४
नहिं दुख देन हार ये लोगा
नहिं यह देह न गृह सम्योगा
नहिं सुर कर्म्म न ह्वै कोउ काला
ये सुख दुख सब मन जञ्जाला ५५
जगत चक्र में मन लै डारे ॥
दुख सुख मन पुनि आप विचारे
मन सब करै विषय नित भोगा
नाहिन होइ कर्म्म सँय्योगा ५६

पुनि सत रज तम बहु विस्तारा।
नाना योनि विविधि परकारा।
देह योग ते बहु दुख होई॥
मन विन तन दुख देइ न कोई ५६
दुखदायक यह मन निरधारा।
कहैं सन्त श्रुति विविध प्रकारा।
मन के हारे हार हिं लोका॥
मन हीं मों जन होहिं विशोका ५७

दोहा॥

अव्यय अविकारी सदा देह रहित प्रकाश
विद्या युत यह आतमा मन करि भव दुख त्रास ५८

चौपाई॥

मन सों बंध्यो अविद्या माहीं।
निज बन्धन सुधि अहै न ताहीं
विषया विष सम लखै न सोई
स्वाद सुधा सम पुनि दुख होई ५९
ब्रह्म रूप यह जीव कहावै
मन के सङ्ग घनो दुख पावै॥

मन विषयन कर जब परिहारू
तबहि शुद्ध है ब्रह्म विचारू ६०
जिन अपना मन बश करि लीना
नहिं करनो कछु ताहि प्रवीना
जिन अपनो मन वश नहिं कीना
तिन करि कर्म्म कहा फल लीना ६१
षोड़श महा दान जो देई ॥
एका दशी कोटि करि लेई ॥
अरु निज धर्म्म करै बहु भाती
यम अरु नियम करै दिन राती ६२
श्रुति पुराण बहु भाँति निरूपा
औरो सकल धर्म्म अनुरूपा
किये सकल साधन युत नेमा।
मन बश बिना वृथा सब प्रेमा ६३
मन बश करण हेतु सब वेदा
साधन विविध कहे तजि खेदा
मन निग्रह ते सब फल दाई
बिन मन निग्रह सकल नशाई ६४

दोहा ॥
मन वश्य भयो सुजाहिको विधि कछु तांको नाहिं
जाको मन वश्य है नहीं विधि सबही वह नाहिं ॥१॥

क्षेमकरण कवि ॥

भोजन प्रकार वर्णन ॥

नरिन्द छन्द ॥

भेज्यव नार तयार तरहते रघुवर करत बिचारी
अनुजसमेत मनुज पतिमन्दिर सुरनरमुनिमनहारी
बैठि बरासन आसन पासन बासन को अधिकारी
गेडुआ थार कटोर कटोरी पञ्च पात्र अरुझारी१
तिनमहं भोजन बस्तु प्रकाशित शीतल सरभू बारी
सुरवा मेवमिठाइविविधिविधि व्यञ्जन अरुनुरकारी
पूरी पापर पुआ कचौरी फुलका भाँति सँवारी
खीर महीर दूधदधि सुन्दर नूतन घृत हितकारी २
बरा विरञ्ज बरी बरियां बहु मुगछ मसरँगी पारी
अब वासँ विलिया पन वाभँटवा पहिती परम पियारी

खरिका खंडर समाज रेनुका छिमियाँ की छलकारी
परवर पनस तरोद करैला वृन्ताकमि सँवारी ३
मेथी मरस चना चौराई सोवा सर्ष प भारी॥
पालक पोय कचर वुका कुलफा बथुआ आदि सँभारी
फल फूल मूल पत्रन के सालन विविध प्रकारी।
अमित अँचार भाँति भाँतिन के चटनी की चट कारी ४
सिरका शक्कर कन्द दही पुनि मिसरी चूरण चारी
खाजा खुरमा पेर फिरकैं माठ मठुलिया न्यारी
गुनी गँदौरा ल्याडुआ बरफी बुंदियाँ बहुत करारी
पाक प्रकार कंचनि विधि वरणौं जहाँ सियसि जेंनहारी ५
जेंवत आपज्यवा वत भाइन कहि २ स्वादु प्रचारी
तनिक अचर जेंवहु मोर लालन कहि परसत मनुहारी
यहि विधि जेंइ यतन ते अँचइनि पगु पलँगा पर धारी
लवंग कपूर जादुफल जात्री एला फाल सुपारी ६
पान पाय परि पूर मसालन उचित २ अनुसारी
पाय पलोटत भरत भरत सुरलक्ष्मण पवन सँचारी
पौकदान रिपु मदन लिये कर सीता पान प्यदारी।
दासी दास अनेक त्यहँ पर सेवत हैं ये चारी ७

यामिनिगत युग याम जानि प्रभु नयन उनींदनि हारी
प्रभु अनुशासन पाय बन्धु सब निज निज शयन सिधारी
अज अद्वैत भक्त हित तनु धरि दशरथ सदन विहारी
क्षेम करण सिय राम स्वामि की वार २ बलिहारी ८

सीताराम दास॥

राम नवमी की प्रशंसा॥

सोरठा॥

शेष न पावहिं पार राम जन्म उत्सव महा॥
आदि करन जुहार सुद मङ्गल तिहुँ लोक की १
हरण पाप दुख जाल मुक्ति दानि सरयू नदी
कियो भक्त को माल सेवक सीता राम तहँ २

चरण दास कवि॥

स्वरोदय ज्ञान वर्णन॥

दोहा॥

चारि वेद को भेद है गीता को है जीव॥
चरण दास लखु आप में तौ में तेरा पीव १

सब योगन को योग है सर्व ज्ञान को ज्ञान॥
सर्व सिद्धि की सिद्धि है तत्व स्वरन को ध्यान २
ब्रह्म ज्ञान की जाप है अजपा सोहं साध॥
परम हंस के जानि हैं जाको मनो अगाध ३
भेद स्वरोदय सो लहै समुझै श्वास अश्वास
बुरी भली तामें लखै जो न सुरति परकाश ४
शुकाचार्य्य गुरु कृपा करि दियो स्वरोदयज्ञान
तबसों यह जानी परी लाभ होय की हान ५
इँगला पिँगला सुषुमना नाड़ी तीनि विचार
दाहिने बायें स्वर लखै लखै धारणा धार ६
पिँगला दहिने अङ्ग है इँगल सुवायें होइ
सुषुमन बीचो बीच है जब चाले स्वर दोइ ७

भिखारीदास कवि ॥

छन्द संख्या का वर्णन॥

दोहा॥
है कलके है भेद हैं जानो श्री मधु छन्द
नहीं सारु अरु कमलयतीनि विकलके वन्द २

चारि मत्त प्रस्तार में पाँच वृत्ति निरधारि।
कामा रमणि नरेन्द्र अरु मन्दर हरि हि विचारि २

सोरठा ॥

पञ्च मत्त प्रस्तार आठ भेद युत हरि प्रिया ॥
तरुण चारु पञ्चार बीर बुद्धि निशि यमक शशि ३

दोहा ॥

ताली रमा नगानि का जानि कला कर ताहि।
मुद्रा धारी वाक्य अरु कृष्णा नायका चाहि ४
हर अरु विष्णु मत्त गनो औषधि को होत निमित्त
षट कल तेरह भेद के प्रकट तेर हो वृत्त ५
सात मात्र प्रस्तार को शुभ गति जानो छन्द।
वृत्त यकीस प्रकार है चारि भाँति गति बन्द ६
आठ मत्त प्रस्तार में तिथ्यादिक उन मानि ॥
सहित हंस मधु भार गति चौंतिस वृत्त बखानि ७
नव मात्रा की अमित गति पचपन वृत्त विचारि
कर्ण यगन हारी गनो नस बसु मती निहारि ८
दश मात्रा के छन्द में वृत्ति नृवासी होय ॥
तम्मो हादिक गतिन सँग वरणत हैं सब कोय ९

ग्यारह कल में एक से चौवालिस गति वृत्ति
तहँ अहीर लीला अपरहन्त माल गनि मित्ति १०
बारह मात्रा छन्द गति वरणयो अमित फणीश
होत किये प्रस्तार के वृत्त दुसै तैंतीस ११
नराचिकादिक तेरहे कल की गति गनि लेहु
वृत्ति बूझि कै तीनि से सत हत्तरि कहि देहु १२
चौदह मात्रा छन्द गति शिव्यादिक अव रवि
भेद छसै दश होत हैं प्रस्तारो करि देखि १३
पन्द्रह मात्रा छन्दगति आदि चौपदी जानि
नव से सत्तासी कहत वृत्त भेद उनमानि १४
सोरह मात्रा छन्द गति रूप चौपदी लेखि॥
पन्द्रह से सत्ताणवे जानो भेद विशेषि १५
सत्रह मात्रा छन्द में धारी विजयो नीक॥
बाला तिरगा पचीस से चौरासी है ठीक १६
अकट अठारह मत्त को रूपा माली जोड़॥
वृत्ति सु इक तालीस से दुक्यासी जिय जोड़ १७
उत्तम उन इस मत्त में रति लेखादि विचारि।
सत सठि से पैं साठ कहत वृत्ति भेद निरधारि १८

होत हंस गति आदि दे छन्द निमित्तो बीस॥
दश हजार नवसे उपर गनो भेद चालीस १८
पद्म गादि इक ईस में कीजे छन्द बिचार॥
सवह सहस रु सात से इग्यारह प्रस्तार १९
मालती मालादि दे छन्द बादसे मत्त॥
भेद अठादस सहस पर छसे सतावन तत्त २१
हीरक इद्ध पद आदि दे तेइस मत्त अनन्त।
छालिस सहस रु तीनिसे अठसठ भेद कहन्त २२
लोलादिक आदि पति कह्यो छन्द मत चौबीस
दश पच हत्तर सहस पर जानो बिन्नि पचीस २३
गग ना ङ्गादि पचीस कल भेद होत हैं लाख
इकइस सहस रु तीनि से तिरानवे पुनि भाष २४
छब्बिस कल में चंचरी आठ लाख गनि लेहु
सहस छानवे चारि से अट्ठारह कहि देहु २५
हरि पद आदि सतादसे जानें छन्द अनेक।
तीनि लाख सवह सहस आठसे दश टेक २६
अट्ठादस में गीतिका आदिक कह्यो फणीश
पाच लाख चौदह सहस दोसे पर उनतीस २७

उनतिस मात्रा भेद में सठ ह्वा दिक देखि॥
आठलाख बत्तिस सहस चालिस भेद विशेषि २८
तीस मत्त में सारंगी चतुर पदी चौबोल॥
तेरहलख छ्यालिस सहस दुसै बहत्तरि डोल २९
एकतिस मात्रा भेद में छन्द सवैया जोहि॥
एक लाख अठहत्तरै सहस तीन सै नोहि ३०
रूप सवैया बत्तिसै कला लाख पैंतीस॥
चौबिस सहस रु पाँच सै अठहत्तरि विधि दीस ३१
इमि ह्वै ते बत्तीस लगि वृत्ति बनावै लाख
सत्ताइस हज्जार पर चौसै बासठि भाख ३२

अथ वर्णी वृत्तानि॥

सवैया॥

एक वर्ण को उक्ता प्रकरण तासु भेद दुइ कीजै पाठ
द्वै अत्युक्ता भेद चारि हैं मध्या तीनि भेद हैं आठ
चारि प्रतिष्ठा सोरह विधि पाँचै सुप्रतिष्ठा भेद बत्तीस
षट गायत्री चौंसठि साते उष्णिक सोवै अट्ठाइस ३३
आठै वर्ण अनुष्टुप द्वै सै छ्यानभे कहत फणिराउ
नव अक्षर को वृहती प्रकरण भेद पाँच सै बारह ठाउ

दशे वर्णा को पंक्ति प्रकरण भेद सहस ऊपर चौबीस
ग्यारह को त्रिष्टुप प्रकरण गनि देहु हजार सरू अठालीस ३३
बारह को जगती प्रकरण त्यहि भेद हजार चारि छानवे
तेरह अक्षर को अति जगती दुक्यासी शत पैछानवे
चौदह को शक्करी सोरह सहस तीनिसै चौरासीय ३४
पन्द्रह अति शक्करी सहस बत्तीस सात सै अठसठकीय
सोरह अष्ट सहस पैंसठि शत पांचछ नीसाधिक लेखरी
सत्रह को अत्यष्टि लाख पर एक तिस सहस सवहजारेकरी
अट्ठारह धृति छब्बिस एनु दुकीस से ऊपर चौवालीस
बावन अयुत बयालिस मैं अट्ठासी विधि धृति उनइस ३६
बीस वर्णा को कृति प्रकरण है नासु भेद गनि लेहु सलासु
अठतालीस सहस्र पांचसै और छहत्तरि ऊपर सरव
इक्कइस वर्णा प्रकृति प्रकरण है बीस लाख पहिले अनुमिल
सत्तानवे सहस्र एकसै बावन ऊपर दीजै चित्त ३७
छंद शेष बाईस वर्णा को आकृति प्रकरण जानि अभेद
एकतालीस लाख चौरानवे सहस तीनि सै चारि भेद
छंद कहा चैचिकृति प्रकरण ते बइस वर्णा होहिं जाहि माह
लाख तिरासी सहस अठासी छ सै साठ गने अहिनाह ३८

संस्कृति नाम वर्ण चौविस को तासु भेद हैं एक करोरि
सत सठि लाख हज़ार सत्तरि हैं सै ऊपर सोरह जोरि।
प्राकृति कृति प्रकरण वर्ण पचीसै तीन करोरि लाख पैंतीस
चौवन सहस चारि सै वत्तिस भेद विचारि कहत फलि ईस ३९
अपभ्रंशति होत वर्ण छब्बिस को भेद छकोटि दुरवत्तालक्ष
आठ हज़ार आठ सै चौंसठि क्रमते द्विगुण बढ़े प्रत्यक्ष
तेरह कोरि बयालिस लक्षौ सत्रह सहस सात सै होइ॥
छब्बिस अधिक जोसि सब भेद नठौ कहियो चाहै जो कोइ ४०

रामनाथ प्रधान कवि॥

घोड़े की प्रशंसा॥

दोवै छन्द॥

जग बन्दन जिहि नाम जाहिरो रघुनन्दन को बाजी
ताको गुण छवि के हैं लग वर्णों जोहि होत मनरंजी
भूषित भूषण अङ्ग अदूषण पूषण हय लखि लाजैं
चोदिन तनियाँ गुथी सुमनियों पगुपैंजनियाँ बाजैं १
जटित जवाहिर जीन जरी की जरबीली अति सोहै॥
पूंजी पटा की छटा कहै को काम लटा मन मोहै॥

जेरबन्द मनफन्द बसन को तङ्ग सुरङ्ग सुहावै
जरकसि पेटी लसी लपेटी झुकि झालरि छावि छावै २
ललित लगाम दाम बहु केरी झङ्किन नाम बिराजै।
सुछबि उमङ्गि झुकी त्रिभङ्गी माणिक लङ्गी छाजै
जित रुख पावै तित पहुँचावै क्षण आवै क्षण जावै
जमि थमि थरकि पुहुमि पर गति नाति तिन दरसावै ३
चलत चमाकै इत उत नाकै विविध कलाकै भावै
जनु नभ नाके करत उजाके राम रजाय न पावै।
खीनी काटि पीनी खुर थालैं बधी नवीनी नालैं
लेत उताले सिंह उछालैं करत समुद्र एक फालैं ४
जब उडि टापैं धरत धरापैं रवि बाजिन उर काँपैं॥
जलपै थलपै अनिल अनलपै जात न कबहुँ रोपैं
धावत पवन न पावत पीछू गरुड़हु गर्व्व गवावै
रघुनायक को वाजि लड़ैतो अनुपम कला देखावै ५
नाम समुद मुद देत जनन को जापर भरत विराजैं
श्री रघुनन्दन कीदहिनी दिशि चलत चपल गति साजैं
रोकत बागैं अति रिस रागैं गर्व्वित झुरकन लागैं।
झमकि झमाकी लै गति बाँकी दै झाँकी सुखपा गैं धी

कहुँनभ जावै सुरन छकावै कहुँमहि खोदमचावै
श्रवनी नेऊ आशमान लौजनु सोपान लगावै
फाँदत चञ्चल चारु चौकड़ी चपलाहू चपकाँपै
भरत कुँअरको तुरँग रँगीलो वर्णि जाय कहुकोपै ७
चम्पा नाम चाल चट कीन्हा जिहि पररिपुहुन भाये
सब समाज के आगे निरते मोर कुरङ्ग लजाये॥
जो कहुँनेकहुँ हाथ उठावत कहुँ हाथ उड़ि जातो
बार बार चुचुकार दुलारत ताहू पैन जुड़ातो ८
जबगहि तालै झूम कन हालै गनि श्धरन सुफालै
तकि त्यहि चालै सुरमुनि जालै चितवत चकित विहालै
गजन मध्य घुसि परत डरत नहिँ जरत बरत पगु धारै
रिपु सूदन को बाजि बाँकुरो कोटिन कला पसारै ९
लाखी घोड़ा लखन लाल को बाँको निपट दलाको
उड़ि श्जाय वायु मण्डल को परत नभहि पगु ताको
क्षणाश्रिति परक्षण आशमान परक्षण छकि छवि छाँवै
क्षण महँ छम श्लाचि नर्द गति सिगरे जनन छकावै १०
तरफराय उड़ि जाय परत है लक्ष्मी निधि हय पाही
उचित बिचारे हँसै रघुवंशी राम हुँ सदा सुमुकाही

मेघघटा पै मारि मुटा पै विचरे विबुध अनंदा पै
केशजटा पै बाजिन ढाँपै जनु रति मण्डल नापै ११
तोप तुपक छूटै जहँ जूटै नहँ जाय सो दूटै ॥
रणरस छूटै वैरिन कूटै वीरन में यश लूटै
दून करत पुरुहूत डरत जिय महा बूत बल जाके
जकिसे रहे जबै पुरबासी जोहि जोर जब ताके १२
चिक्कन चोटी सुभग सकोटी मोटी कटि छवि पावै
रेशम तारन जाल समारन बारन ऊपर धावै
फुल झरिया सी झरत धरत डुग करत अनेक नमास्ता
डुरकनि सुरकनि थरकनि तरकनि वरणी जाय कहुकासा १३
नाकि तुरा की चञ्चलता दै लपनकि देखि चढाई
निमिवंशी रघुवंशी सिगरे ठगि भरहे विकाई।
राम आदि जे कुँवर लाडिले ते लखि भरे उछाहैं
गोमिरनद लवन लाल को चारहि चार सराहैं १४
डुमि मगहोन विलास विविध विधि विपुल बजने बाजे
सुनतन कोउ पुकार नगर तिय काढि बैठी दर वाजे।
कोउ तिय निरखि बदन की सुखमा अति सुखमा सो वारी
भरी सनेह देह सुधि भूली राम रूप अनुरागी १५

क्षेमकरण कवि॥

हाथी की प्रशंसा॥

घनाक्षरी॥

मद्र भद्र मृग गिरिजाति जाति भाँति भाँति॥
उन मत्त सदा मद मद के पनारे हैं
झौंकदार नोकदार दारक दरद्दू के
समै पाय समै पाय मङ्गर विदारे हैं
क्षेमकर महाराज कोशलेश के करीश
गुण के अगारे शोभा सकल सँभारे हैं
दन्त उजियारे आरे अरिन के फन्द फारे
देश देश के नरेश देखि हिय हारे हैं १
आई है बरात कोशलेश की विदेहपुर
बसती के बालक तुरन्त उठि धाये हैं
देखि आये साज की समाज की विभूति भूति
सेना चतुरङ्ग रङ्ग रङ्ग से सोहाये हैं
पूछैं पितु मातु आयो भूप कुँअर काहे के

क्षेमकर सोई बात बन्दि कै बनाये हैं
माते मतङ्गज मद्दि दारिद दबाय जात
वापै दशरथ के दुलारे चढि आये हैं २
हरित मणि हीरा औ पद्मराग हाटक के
हौदन में कोरि कोरि कुसुम बनाये हैं
तैसही विचित्र जीव विरचे सजीव मानो
ताके बीच बीचन सुभाव छवि छाये हैं
भूलझाँपै फल झलात झालरि औ झब्बौंते
मुक्ता मकतूल समतूल से सजाये हैं
क्षेमकर घण्टन के राव सुने राव होत
राव दशरथ के दुलारे दिए आये हैं ३
इन्द्र द्युति देखत ही दारिद दबाय जात
दानी होत दान देखि दीनता दुराये हैं
फाल फैलावत फ़क़ीरिनि फिकिरि होत
तुण्डकी समेत शोच शत्रुन पठाये हैं
क्षेमकर क्षोद से भरे छबीले छाँद छके
क्षोणी पति महाराज कोशलेश लाये हैं
कुञ्जर करारी भारी घटा से अमारीदार

मानौं पाद चारी धरा धारी धरि आयेहैं ४
झूमत झबाऊ झाल झटकैं जँजीर जाल
मत्त मद बहत बनै सबै सवील से
चिक्करैं सगरद उड़ाय शुण्ड मुण्ड पर
फटकत श्रवण उड़ाय भृङ्ग व्हील से
क्षेम कर अमर ईश इन्द्री दुराय देत
धमकत धरणि धरत पाव ढील से
ऐसे अवधेश के असील पील खानेपील
पेखत अपर पील लागत पिपील से ५

महाराजमानसिंहकवि॥

वसन्तऋतुवर्णन॥

सवैया॥

सोधे समीरन को शिरदार
मलिन्दन को मनसा फलदायक
किंशुक जालन को कलपद्रुम
मानिनी बालन हूं को मनायक

कन्त अनन्त अनन्त कलीनको
दीनन के मन को सुख दायक
साँचो मनोभव राज को साज
सो आवत आजु दुतै ऋतुनायक १
बायु बहारि बहारि रहे क्षिति
वीथी सुगन्धन जाती सिँचाई
त्यों मधु माते मलिन्द सबै जाय
के करखान रहे कछु गाई
मङ्गल पाठ पढैं द्विज देव
सबै विधि सों सुखमा उपजाई
साजि रहे सब साज घने
बन में ऋतु राज की जानि अवाई २

घनाक्षरी ॥

चहकि चकोर उठे शोर करि भौंर उठे
बोले ठौर ठौर उठे कोकिल सुहावने
खिलि उठीं एकै बार कलिका अपार हिलि
हिलि उठे मारुत सुगन्ध सरसावने॥

पलक न लागी अनुरागी इन नैननपै
लपटि गये धौं कबै तरु मन भावने
उमँगि अनन्द आँसु बानलौं चहूँघा लागे
फूलि फूलि सुमन मलिन्द बरसावने ३
होन लगे शोर चहूँ ओर अति कुंजन में
त्योंही पुञ्ज पुञ्जन पराग नभ छायगो
फूल फल साजन को आयसु विपिन माहिं
शीतल सुगन्ध मन्द पौन पहुँचायगो
द्विज देव भूल भूले फिरत मलिन्दनको
सुखमा विलोकि हिये सुख सरसायगो
आये द्रुत आगे ते हरौ लन के लोग इत
आवत हमारे उत ऋतुपति आयगो ४

क्षेम करण कवि॥

फूले कचनार सह कार औ अपार बन
शीतल सुगन्द मन्द मारुत कँपायोरी
चन्दन के गार और सुमन सुगन्ध सार
हार सुकुलान के वितान तन तायोरी

क्षेम करण चन्द्रीक गूंजैं औरकूंजे पिक
आछे भोज अशन बसन मोन भायोरी
आयो मधुमास मोहिंकरै उपहास मधु
मधु पुर मैं माधव बसन्त हूंन आयोरी १
पल्लव पील पालकी नगारैं कूककोयलकी
सुमन सिपाही सैन्य साजिकै सिधायोहै
मधुबननकीब बोलै बोलै वायु चोपदार
नोपदार तरुवर नयारी करितायो है
क्षेम करण चाँदनी चमूकी चाव देतो है
लेतो है अँकोर नाहिं हरवल शशि आयोहै
वैरी या बसन्त वर जोरी व्रज राज बिन
मदन महीप मन मारैउठि धायो है ॥ २ ॥

अयोध्या प्रसाद कवि ॥

सेवती निवार सेत हीरन के हार जूही
यूथ औ अनार मोती विद्रुम लसन्त भो
पन्ना पुखराज पत्र चम्पक समाज फाव
माणिक गुलाब नील दृन्दीवर गन्त भो

माधवी न सूनो गऊ मेद कल सूनो दूनो
औध बाटिका बजार पूनो बिल सन्न भो
यतन जलूस जोर रतन रसाल रङ्ग-
अतन अनन्द हेत जौंहरी बसन्न भो१
खाती हरषाती रस जाती मद माती हिय
काती सी लगाती टेर विरही विघाती की
जाती लै किराती मन भाती न दयाती नचु
पाती ताल गाती न फिराती उत पाती की
पाती केहू भाँती नौ विसाती जो पोसाती औध
राती सिय राती जो व्यथाती तानी छाती की
स्राती खत जाती भैं नो चाती रोम पाती काढ़ै
बाती लै जलाती जी भछै लिया कुजाती की२

शिव प्रसन्न कवि॥

ग्रीष्म ऋतु वर्णन

धोर हर धौल भूप धामहू धँसै न जामैं
चहुँधा दुआर के सुगन्ध सार शालसैं

मणि दीप माला मणि भूषणा बलित बाला
खासे परियङ्क वासे सुमन निमाला से।
व्यंजन उशीर नीर मलयज समोये हूँ
पर्यंत समीर है सरस शीत काला से
जिन हेतु विरचे विरञ्चि हैं मसालाऐसे
व्यथिनन होत तेनिदाघ जात ज्वाला से१

अयोध्या प्रसाद कवि ॥

वर्षा ऋतु वर्णन ॥

बारिका बिहङ्गन पै वारि गात रङ्गन पै
वायु वेग गङ्गन पै बसुधा बगार है
बाँकी बेनु नानन पै बगले वितानन पै
बेस औध पानन पै बीथिन बजार है
वृन्दाबन बेलिन पै बनिता नबेलिन पै
ब्रजचन्द केलिन पै वंशी बट मार है
वारि के कनाकन पै बद्दल बाँकन पै
बिज्जुली बलाकन पै वरषा बहार है१
हरषे हरौल है अमर से अनङ्ग हेत
करषे कलापी चोपि चातक चसूषिली

उमड़े घटा हैं मानि करने छटा हैं छटा
फेरत पटा हैं ठटा शूर की हटा किन्नो
घेरि के अड़े हैं बिन बूंदन लड़े हैं औध
आनन्द खड़े हैं देख दादुर बड़े दिल्ली
कादर वियोगी हारि चादरि बलाक फेरि
बादर बहादुर को नादिर फने मिल्ली २

महेशदत्त ॥

स्री ऋतु पावस में मोर घोर रोर करैं
ठौर ठौर मण्डुक कठोर शोर वे रह्यो
देखि वे बकालीरी कपालीऔरि जाली हाली
आली बन माली बिन काली मोहि कैं रह्यो
दामिनी दमङ्क बीच यामिनी विलोकि नित
कामिनी शकांत बात मुख पैन धे रह्यो
झिल्ली झन कारैं मेघ वारिधार झारैं फेक
कोकिल पुकारैं यों महेशदत्त ह्वै रह्यो १

श्री पति कवि ॥

जल भरे भूमैं मानौ भूमैं परशत आय
दशहूं दिशान घूमैं दामिनी लये लये

धूर धार धूसरित धूम से धुधारे कारे
धारे धुर वान धावै छवि सौं छये छये
श्री पति सुकवि कहै घरी घरी घहरात
तावत अतन तन ताप सौं तये तये
लाल बिन कैसे लाज चादर रहैगी अब
कादर करत मोहिं बादर नये नये १

पद्माकर कवि ॥

मल्लिका मन्जुल मलिन्द मतवारे मिलैं॥
मन्द मन्द मारुत सुहीम मनसा की है
कहै पदमाकर सुनादत नदीन नित
नागरि नवेलिनि की नजरि निशा की है
चौरत दरेरे देत बादुर सुदूरै दीह
दामिनी दमङ्गनि दिशनि में दिशा की है
बद्दलनि वुन्दनि विलोकौ बगुलानि बाग
बौलन बलिनि बहार बरसा की है १

श्रीपति कवि॥

शरद ऋतु वर्णन॥

फूले आस पास काश विमल आकाश भयो
रही न निशानी कहूँ महि में गरद की॥
गुञ्जत कमल दल ऊपर मधुप मैन
छापसी दिखाई. आनि बिरह फरद की
श्रीपति रसिक लाल आली बन माली बिन
कछू न उपाय मेरे दिल के दरद की
हरद समान तन जरद भयो है अब
गरद करत मोहिं चाँदनी शरद की १

पद्माकर॥

हिम ऋतु वर्णन॥

अगर की धूप मृगमद को सुगन्ध वर.
वसन विशाल जाल अङ्ग. ढाँकियतु है
कहैं पद्माकर सुपोन को न गोन जहाँ॥
ऐसे भोन उमँगे उमङ्गि. छाकियतु है
भोग ऐसो संयोग हित सुरत हिमन्त ही में.
पैये सब सुखद सुहाये वाकियतु है

तान की तरङ्ग तरुणापन तरणि तेज
तेल तूल तरुणि तमूल ताकियतु है १

पद्माकर कवि॥

शिशिर ऋतु वर्णन॥

गुलगुली गिल मे गलीचा है गुनी जन है
चिकै है चिराके है चिरागन की माला है
कहै पद्माकर है गजक गिजाहू सजी
प्यारी है सुरा है है सुराही है सुप्याला है
शिशिर के पाला को न व्यापै कसाला तिन्है
जिन के अधीन येते उदित मसाला है
तान तुक ताला है विनोद के रसाला है
सुबाला है दुशाला है विशाला चित्रशाला है १

केशव दास जी॥

॥ श्री राम चन्द्र और परशुराम का मिलन

दोहा॥

विश्वामित्र विदा भये जनक फिरे पहुँचाय
मिले आगिली फौज को परशुराम अकुलाय १

चञ्चरी॥
मत्तदन्ति झमन्त ह्वै गये देखि २ नगाज्ज हीं
ठौर २ सुरेश्वा केशव दुन्दुभी नहिं बज्ज हीं
डारि २ हथ्यार शूरजै जीव लै लै भज्ज हीं
काटि कै तनु त्राण यूथ तिन नारि वेषन सज्ज हीं २

दोहा॥
वामदेव ऋषि सों कह्यो परशुराम रणधीर
महादेव को धनुष को कहु तोरयो बलवीर ३

परशुराम॥
सँयुता॥
यह कौन को दल देखिये
वामदेव॥
यह रामसों झभु लेखिये
परशुः॥
कहु कौन राम विचारिये
वामदेव॥
शर ताड़का ज्यहि तारिये ४

परशुराम॥
त्रिभङ्गी॥

ताड़का संघारी त्रियन विचारी कौन
बड़ार्द ताहि हने
वामदेव॥

मारीचहु तो संग प्रबल सकल अंग अरु सुबाहु
काहू ने गने। करि क्रतु रखवारी गुरु सुखकारी
गौतम की तिय शुद्ध करी। जिन रघुकुल मंड्यो
हरधनु खण्ड्यो सीय स्वयम्बर माँझ बरी पु

परशुराम॥
सवैया॥

बोरौं सबै रघुवंश कुठार की
धार में वारण बादर सत्य हि
वारण की वायु उड़ाय के लक्षन
लक्ष करौं अरि हा समरत्थहि
रामहिं वाम समेत पठै बन
कोप के भार में भूजौं भरत्थहि

जौ धनु हाथ धरैं रघुनाथ तौ
आजु अनाथ करौं दशरत्थहि
तोमर ॥
सहभरत लक्ष्मण राम
बहु किये आनि प्रणाम
भृगुनन्द आशिष दीन
रण होहु अजय प्रवीन ७
मदिरा ॥
तोरि शरासन शङ्कर को शुभ
सीय स्वयम्बर माझ बरी।
ताते बढ्यो अभिमान महामन
मेरियो नेक न धाङ्क धरी
रघुनाथ ॥
सो अपराध अगाध पर्यो अब
क्यों सुधरै तुमहूं धौ कहौ
परशुराम ॥
बाहु दै दोऊ कुठारहि केशव
आपने धाम को पन्थ गहो ८

रघुनाथ॥

कुण्डलिका॥

टूटै टूटन हार तरु वायुहि दीजै दोस
त्यों श्रव हर के धनुष को हम सौं कीजत रोष
हम सौं कीजत रोस काल गति जानि न जाई
होन हार है रहै मिटे मेटे न मिटाई
होन हार है रहे मोह मद सब का छूटे
होय तिनू का बज्र बज्र तिन का पै टूटै ट

परशुराम॥

विजया॥

केशव है हय राज को नाम
हला हल कौरन खाय लियोरे
तालगि मेद महीपन के घृत
घोरि दियो न सिरानो हियोरे
मेरो कह्यो करु कोप कराल जो
चाहत है चिर काल जियोरे
नो लो नहीं मुख जो लहु तें
रघुवंश कासोनु सुधान पियोरे२०

भरत॥

तन्त्री॥

बोलतकैसे भृगुपति सुनिजैसो कहिजैत नवनिआवै
आदि बड़ेनो बड़पन राखो जातेसब जगसुख पावै
बन्दनही में भ्रातितन धरखै आगिउठैयह गुणसुनिलीजै
हैं हय मारे नृपति सँघारे सोयशलैकिन युगजीजै११

परशु राम॥

नराच॥

भली कही भरत्थ तें उठाय आगि अङ्गते
चढ़ाव चापि चाप आप बाण लै निषङ्गते
प्रभाव आपनो देखाव बालभाव छाँड़ि कै
रिझाव राज पुत्र मोहिं रामलो छिड़ाइ कै१२

सोरठा॥

लिये चाप जब हाथ तीनिहुं भैयन रोष के
बरज्यो श्री रघुनाथ तुम बालक जानो कहा१३

दोहा॥

भगवन्तनसों जीति पै कबहुं न कीजे शक्ति।
जीती एकै बात ते कीने केवल भक्ति १४

तोमर॥

सुनु राम शील समुद्र। तव बन्धु जो अति क्षुद्र
मम बाहु बानल कोप। अब किया चाहत लोप १५

शत्रुघ्न

दोधक॥

हो भृगुनन्द बली जग माहीं
राम बिदा करिजे घर जाहीं।
हौं तुम सों पुनि युद्ध हि माडौं
क्षत्रिय वंश को बैर लै छाडौं १६

तोटक॥

यह बात सुनी भृगनाथ जबै
कह रामहिं ले घर जाहु अबै
इन पै जग जीवत जो बचिहौं।
रण हौं तुम सों फिरके सचिहौं १७

सवैया॥

भूतल के सब भूपन को भिरि
भोजन तौ बहु भाँति कियोई

मोद सों तारक नन्दन मेद
पञ्चावरि पान सिरायो हिय्योर्द्
वीर षडानन को मद केशव
सो पल में यहि पान लियोर्द्
राम निहारे ही कण्ठको शोणित
पानी को चोंह कुठार पियोर्द् १८

रघुनाथ ॥

छप्पै छन्द ॥

मग्न भयो हर धनुष साल अब तुम को सालो
वृथा होय विधि सृष्टि दृग आसन ते चालो
सकल लोक संहरहु शेष शिर ते धर डारो
मग्न सिन्धु मिलि जाहु होय सब ही तुम भारो
अति अमल ज्योति नारायणी कहि केशव बुधि जाहु वर
भृगु नाथ सों भार कुठार में करयो राम सनयुक्त शर १९

स्वागता ॥

राम राम जब कोप करयो जू। लोक लोक भय भूरि भरयो जू
वामदेव तब आपु हि आयो। राम देव दोउ समुझायो २०

दोहा॥

महादेव को देखि कै दुहु राम सविशेष॥
कीनी परम प्रणाम उन आशिष दिये अशेष २१

महादेव॥

चतुष्पदी॥

भृगुनन्दन सुनिजैसन महँ गुनिजैरघुनन्दन निर्दोषी
निजये अविकारी सब सुखकारी सबही विधि सन्तोषी
एकै तुम दोऊ और न कोऊ एकै नाम कहायो।
आयुर्बल खूटयो चापजु टूट्यो मैं तनमन सुख पायो २२

अज्झटिका ॥

तुम हौ समान नहिं वैर नेहुं
सब भक्तन कारण धरत देहुं
सब अपने यों पहिचानि विप्र
सब करहु आगिलो कार्य्य क्षिप्र २३
तब नारायण को धनुष जानि
भृगुनाथ दियो रघुनाथ पानि
तब नारायण को बाण लियो
ऐंच्यो हँसि देवन मोद दियो २४

रघुनाथ कह्यो अब काहिहनौ
त्रैलोक्य कँप्यो भयमानि घनौ
दिग्देव देह बहु बात बहे
भूकम्प भये गिरिराज ढहे २५

परशु राम ॥

शशिवदना ॥
जगगुरु जान्यो । त्रिभुवनमान्यो
ममगति मारो । समयविचारो २६

दोहा ॥
विषयी को ज्यौं पुण्य अरु गति को हरत अनङ्ग
राम देव त्योंहीं कियो भृगुपति की गति भङ्ग २७

मरहट्ठा ॥

सुरपुरगतिभानी शासनमानी भृगुपति को सुखभागे
आशिषरसभीने सबबल दीने अबदशकंठहि मारे
अतिअमलभयेरविगगनबर्षेसुविदेवनमङ्गलगाये
सुरकुलसबहरष्योपुष्पनवरष्योदुन्दुभिदीहवजाये २८

विजया ॥

तारका तारि सुबाहु सँघारि कै
गौतम नारि के पातक टारे
चाप हत्यो हँसि कै हर को सब
देव अदेव हते सब हारे
सीतहि व्याहि अभीत चले गिरि
गर्व्व चढ़े भृगुनन्द उतारे
श्री गरुड़ध्वज को धनु लै
रघुनन्दन ओध पुरी पगु धारे ॥

हिमाचल राम ॥

नागलीला ॥

सवैया ॥

एक समै प्रभु खेलहिं गेंद
गिरो यमुना जलमध्य हिमाहीं
कूदि पर्‌यो हरि नाही के हेतु
गयो धँसि पैठि पताल हि जाहीं

बाल सखा बहु रोदन कै हिय
शोच बड़ो गे माहरि पाहीं
कृष्णा तिहारो बुड़ो यमुनावि च
ढूंढि थके हम पावत नाहीं १
हाहाकार भयो ब्रजमण्डल
नन्द की रानी न देह सँभारी
शोच के वश्य कहै असवैन
बसो मेरो भौन धौं कौन उजारी
लोटहिं केश परे धरणी हिले
बाल सखा वहि घाट सिधारी
ब्रज नारिन शोच को कौन कहै
मनु रुप्पणा द्रव्य जुआ बहु हारी २
कृष्णा तला तल कीन प्रवेश
निवास भुजङ्गम तेज अपारा
जाय समीप जगावत भे नव
नागिनि कृष्णा सौं वैन उचारा
बालक तू किहि हेतु शरीरहि
खोय चले यहँ वो पगु धारा

नाहक नाग जगावत हो फुफु
कार तिहूं पुर होय उजारा ३
बोले कृष्ण सुनो अहि नारि
बसै ब्रज में एक कंस भुआरा
मांगत फूल अही पुर के मोहिं
डारि नरेश ने कीन बिहाला
लादि के फूल चलो तिहिद्वार
वृथा नहिं बैन सुनो अहिवाला
काली को तेज सुना वत हौंमैं
कोटिन कालन केर कराला ४
यह नाहि अहार सो बाहन है
परिवार समेत सो नाहि खवावौं
पतिहीन करौं त्वहिं को सुनु नारि
स्त्री नाथि के कालिहि देश पठावौं
हाहाकार पताल परे लै
गोकुल मण्डल माहं नचावौं
देह जगाय न वार करौ मोहिं
होय विलम्ब कहा डर दावौं ५

दोहा॥
सात स्वर्ग पाताल सोइ काहु न सर्च्यो रिकौन
सो बालक बरि आइयौ अनुचित कहवे लौन ६

सवैया॥
कालि उठा रिसि आय नवै अस
कौन तिहूँ पुर दूसरो मेरो।
दृष्टि के सम्मुख जौन परै तिहि
भस्म करौं जिहि के तन हेरो।
जो कुछ तेज करौं हिय में क्षण
एक मलौं में तिहूँ पुर पेरो
आयु तुलानि के ही सनुनागिनि
कौन यही पुर कौन बसेरो ७
दृष्टि परी नंद लाल की ओर
नवै विषराशि छोड़ो फुफकारा
यौन अगाध चली अति दुस्सह
कौन कहै तिहि तेज अपारा
श्याम शरीर भयो अति सोवर
कृष्ण विषङ्ग नवै शिर धारा

कर जोरि अनेकन थाकि गयो
नहिं पावहिं आचल को पटि टारा ८
चढ़ि मस्तक कृपा पयानाकियो
अहि लोकहि शून्य कियो क्षण माहीं
पौन के तेज चला सहसानन
क्षाय नुलानि कदम्ब की छाहीं
मुरलीधर वेणु बजावत भे
सुनि ग्वाल बधू गई माहरि याहीं
वंशी की तान परी मेरे कान कहै
हिय मोर मुनों हरि क्षाहीं ९
जौं लगि शोच करैं हिय में हरि
नो लहि नन्द बुक्षा रहि आये
शोर भयो सब गोकुल में नर
नारि कुमारहि देखन धाये-
माहरि गोद उठाय लियो मोरे
लाल तू कालिहि कैसे बँधाये
साजि के आरति शीस उतारि
निहारि के क्षानन प्रेम बढ़ाये

रङ्ग चार॥

ध्रुव और नारद की भेंट ज्ञान वर्णन॥

दोहा॥

वही कवर बनको गये रोका रुका न आप॥
लगा नेह भगवान का खोय मरे मा बाप १

चौबोला॥

खोये मा बाप रहे बन को वो चला
नारद मुनि आवो उसे पन्थ में मिला
राम राम कीनी ध्रुव नारद मुनि से
नारद मुनि पूछी बात यौंही उन से २

कुण्डलिका॥

राम राम तेरी सही राम राम महराज
अय लड़के इस बन विषे तू आया किसकाज
तू आया किस काज विकट जङ्गल में डोले
नरह नरह के जीव अरे इस बन में बोलै
तेरा है का नाम लाल तू कहदे मो से
कौन तेरा है पिता योंहि मैं पूछूं तोसे ३

उतान पात मेरा पिता बसै अयोध्या माहिं
गुरू हमारा नाम है हरिसे मिलने जाहिं
हरिसे मिलने जाहिं लगा है ध्यान हमारा
तुम क्यों रोको मुझे कहो क्या काम तुम्हारा
आप कौन महाराज हमी बन हीं में डोलो
तुम्हारा क्या है नाम भेद हम ही सेरवोलो ४
सभी दिना बन में रहो नारद माने है नाम
जा लड़के ह्यां से तुही नहीं मिलेंगे राम
नहीं मिलेंगे राम देव ह्यां रहते दाने
प्रेत भूत ह्यां रहैं खोउ मत अपनी जाने
मर जायगी तेरि माय रोवेगा बाप तुम्हारा
मत करु उन को दुखी जाय तू ह्यां से प्यारा ५
सभी दिना बन में रहो तुम जानी हो आप
किस कारण घर वार है कहु किसके मा बाप
कहु किसके मा बाप सभी झूंठे हैं नाते
सङ्ग किसी के कोइ नहीं हम देखे जाते
जहँ देखे ह्यां राम बिना और नहे कोई ६
राम बिना महाराज उमर क्यों तुम ने खोई ६

यह मथुरा की राह है सुनि लेहो तू धूरु
मुझ को तू बतलाय दे तेरा को है गूरु
तेरा कोई गुरु दिया जिस ने उपदेश्या
हरि मिलने का कौन पड़ा तुझ को अन्देश्या
तू फिरने का नाहिं यही अब हमने जाना
हमने लीना जान तेने यहि राह रवाना ७
तुम्हीं हमारे हो गुरू तुम दीजो उपदेश
तुम्हीं हमारे ईश हो आनि मिले यहि भेस
आनि मिले यहि भेस तुम्हीं हो गुरू हमारे
दया कीजिये आज मिले जो दर्श अपारे
हे नारद मुनि गुरू शरणा अपनी में राखो
ऐसी देहु आशीस वचन हरि पद को भाखो ८
धुरू तुही आनन्द रह मेरी यही आशीस
तीनि लोक के नाथ ही मिलियो विश्वा बास
मिलियो विश्वा बीस तेरी आशा हो पूरी
तेरा मन लागि रहा नहीं तुझसे हरि दूरी ९
शारदूल सो सिंह मिलै तुझ को बन हाती
नहिं तुझ को डर होय चलै तू दिन दो राती

धनुर्व्वाण लिये हाथ राम तुझ को मिलिजँगे
तू रहियो चिरजीवि कार्य्य होंगे बिन माँगे ही
नारद मुनि को करि गुरू ध्रुव हुये आनन्द
ले आशीष आगे चले दूर हुये सब फन्द
दूर हुये सब फन्द हुये मन में खुशियाले
जाहैं बन में चले सुरति हरि जीमें डाले
जब जाना श्री राम ध्रुव जी हम पै आया
होय चतुर्भुज रूप राम ने दर्शन दिखाया
पल में हारे मिलि गये ध्रुव नयनों सुख पाया
छोरे चरण में गिरा जभी शीतल भद्र काया॥

त्रियादास कवि॥

भक्ति की प्रशंसा॥

घनाक्षरी॥

मेरे तो जनम भूमि भूमि हित नैन लगे
आगे गिरिधारी लाल पिता हो के धाम में
रानी की सगाई भई करी ब्याह सामा नई
गई मनि चूड़ि वा रँगी ले घन श्याम में

भाँवरैं परत मन साँवरे स्वरूप माँझ
तामरे सो आवैं चलिवे को पतिगाम में
पूछैं पितु मातु पट आभरण लीजिवे जू
लोचन भरत नीर कहा काम दाम में १
देवो गिरिधारी लाल जो निहालकियो चाहो
और धन माल सब गरिवये उठाय के
बेटी अति प्यारी प्रीति रङ्ग चढ्यो भारी राय
मिली मह तारी कही लीजिये लड़ाय के
डोला पधरादूं दृग २ में लगादूं चली
सुख न समादूं चादूं भाणा पति पाय के
पहुँची भवन सासु देवी पै गमन कियो
तिया और वर गाँठि जोरो कियो भाय के २
देवी के पुजादूवे को कियो लै उपाय सासु
वरचै पुजाय पुनि बधू पूंजि भाखिये
बोली जूबिकायो माथ लाल गिरिधारी हाथ
और कोन बै एक वही अभिलाखिये
बढ़त खहाग याके पूजे नाते पूजा करो
भत छठ करो शीस पायन में राखिये

कही बार बार तुम यही निरधार जानौ
वही सुकुमार जाये वारि फेरि नारि वये३
तव तौ रिवसानी भई अति जर बर गई
गई पति पास यह बधू नहीं काम की
अबही जवाब दियो कियो अपमान मेरो
आगैं क्यौं प्रमान करै भरै श्वास चाम की
राना सुनि को पकर्यो धर्यो हिये मारि बोई
दई ठौर न्यारी देखि रीझी मति चाम की
लालन लड़ावै गुण गाय कै मल्हावै साधु
सङ्ग ही सुहावै जिन्हैं लागी चाह श्याम की४
आदु के ननन्द कहै गहै कित न चेत भाभी
साधुन के सङ्ग मैं कलङ्क लगै भारिये
राना देश पती लाजै बाप कुल रती जान
मान लीजै बात बेगि सङ्ग निरवारिये
लागै भाग साथ सन्त पावत अनन्त सुख
जाको दुख होइ ताको नीके करि टारिये
सुनिकै कटोरा भरि गरल पठाय दियो
लियो करि पान रङ्ग चढ़्यो यौं निहारिये५

गरल पठायो सोतो शीशपै चढ़ायसङ्ग
त्याग विष भारी ताकी झारन संभारी है
राना ने लगायो चर बैठे साधु ढिगद्वारि
तब ही खबारि करि मारो यह धारी है
राजैं गिरिधारी लाल निनही मों रङ्गाल
बोलत हंसत ख्याल कान पर्यो प्यारी है
जादू कै सुनाई भई अति चपलाई आयो
लिये तरवार दै किवार खोलि न्यारी है ई
जाके सङ्ग रङ्ग भीजि करती प्रसङ्ग नाना
कहाँ वहु नर गयो बेगि दे बताइये
आगें ही विराजैं कछु तो सों नहीं लाज भई
देखु सुख साजैं औरि खोलि दरशाइये
भयोहै विषानो राना निरख्यो विचीत मनो
उलटि पयानो कियो नेकु मन आइये
देख्योंहु प्रभाव औपे भाव मैंन भियो जाय
विन हरि कृपा कहो कैसे करि पाइये
विषयी कुटिल एक बेष धरि साधु लियो
कह्यो धों प्रसङ्ग मोसों अंङ्ग सङ्ग कीजिये

आज्ञा मोकों दई आप लाल गिरिधारीजहो
शीघ्र धरि लेई कछू भोजनऊं कीजिये
सज्जन समाज में विछाय शय्या बोलि लियो
शङ्ख अब कौन की निशङ्क रस पीजिये
सेत सुख भयो विषै भाव सब गयो नयो
पायन में जाय मोको भक्ति दान दीजिये ८
रूप की निकाई भूप अकबर भाई हिये
लिये सङ्ग तान सेन देखिवे को आयो है
निरखि निहाल भयो छवि गिरिधारीलाल
पद मुख जाल एक नव ही चढ़ायो है
वृन्दावन आई जी रसा ई जोमों मिलि झिली
तिया मुख देखिवे को पनलै छुड़ायो है
देखी कुञ्ज कुञ्ज लाल प्यारी सुख पुंज भरो
धरी उर मांझ आप देश बन गायो है ९
राना की मन्दिन मति देखि बसो हारावति
गिरिधारी लाल नित्य ही लड़ाइये
लायो चट पटी भूप भक्ति को स्वरूप जानि
ऋद्धि बुद्ध मानि विप्र श्रेणी लै पठाइये

वेगि लै कै आवो मोकौं प्राण दे जियावो
अहो गये द्वार धरनी दै विनती सुनाइये
सुनि बिदा होन गई राय रणा छोरजीपै
छाड़ो राखो हीन लीन भई नाहिं पाइये १०

मीरा की कविता॥

ईश्वाराधन के विषय में॥

सवैया॥

पलकोटैं दृननैन कै गिरिधारी विना पल अन्न निहारैं
जीभ कटै न भजै नंदनन्दन घुड़ि कटै हरिनाम विसारैं
मीरा कहै जरि जाहु हियो पद पङ्कज विन पलभ्र न धारैं
शीस नवै ब्रजराज विना वहि शीस हि काटि कुल्हाड़ि न डारैं १

दोहा॥

रसन कटैं आनहुँ रटैं फुटैं आन लखि नैन
श्रवण फुटैं ने सुनै विन श्री कृष्ण यश बैन २

देवदत्त कवि॥
मीरा की प्रशंसा॥

घनाक्षरी

कोऊ कहौ कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ
कोऊ कहौ अङ्क न कलङ्किनी कुमारी हौं
कैसे सुरलोक नरलोक परलोक सब
कीनमैं अलोक लोक लोकन तेन्यारी हौं
तन जाकु मन जाकु देव गुरुजन जाकु
जीम वेंचा न जाकु टेक टरत न टारी हौं
वृन्दावन वारी गिरिधारी के मुकुट पर
पीत पटवारे की मैं मूरति पै वारी हौं १

नाभा दास जी॥
भक्तों की गणना॥

छप्पै॥

शुकर शुक सनकादि कपिल नारद हनुमाना
विष्वक सेन प्रहाद बलिरु भीषम अज्ञाजाना
अर्जुन ध्रुव अंबरीष विभीषण महिमाभारी
अनुराग अंकुर सदा उद्धव अधिकारी

भागवत भक्त अवशिष्ट की कीर्ति कहन सुजान
हरि प्रसाद रस स्वादु के भक्त हूते परमान ३

श्रीमद्भागवत की प्रशंसा ॥

ब्रह्म विष्णु शिव लिङ्ग पद्म स्कन्द विस्तार
वामन मीन वराह अग्नि अरु कूर्म्म उदार
गरुड़ नारदी भविष्य ब्रह्मवैवर्त्त श्रवण शुचि
मार्कंडेय ब्रह्माण्ड कथा नाना उपजै रुचि
परम धर्म्म श्रीमुख कथित चतुर श्लोकी निगमशत
साधन साधि सत्य पुराण फलरूपी श्रीभागवत ३

क्षेम करण कवि ॥

घनाक्षरी ॥

सत्य दया पूरण पुराण मुनि व्यास कह्यो
विरच्यो विचित्र दंति हास कथा भारी है
ताहू ने चित्त की सुचितता न जानि परी
ताही समै नारद मुनि आश्रम सिधारी है
क्षेम करण देव ऋषि दीन्ह्यो बताय सोई
जोई मन गोई श्री भागवत करारी है

पुनि मुनि विस्तारै निस्तारे अनेकै जीव
सुने जासु अक्षर सों अक्षर करि डारी है १

चौपाई॥

आरति श्री भागवत कथा की
ज्ञान विराग भक्ति सुपथा की
श्री भगवान कहा स्वमुखहि ते
नाम भागवत भयहु तबहि ते २
श्री नारायण ब्रह्महि दीना
ब्रह्मा ते नारद मुनि लीना
नारद दीन व्यास मुनि पावा
सो अतिप्रियसुत शुकहि पढ़ावा ३
भूप परीक्षित शरणाहिं आये
ता कहँ श्री शुक देव सुनाये
श्री गोकर्ण बन्धु हित बाँचा
प्रेत योनि तजिभा सुरसाँचा ४
जो जो कहा सुना अनुमाना
सो सुरपुर चढ़ि चल्यउ विमाना

श्रेम करण भागवत भागवत
कहत सुनत सो सब सुख पावत ५

दास कवि।

तुलसी दासजी की प्रशंसा

तोटक ।।

वहि भाँति कछू दिन बीति गये
अपने अपने रस रङ्ग रये
सुखिया इक यूथप माझ रहे
हरिदासन को अपमान गहे १
भइ क्षीण आयु तिन देह तज्यो
पतिनी शुभ जानि पतीहि भज्यो
तब नौ अरु सप्त शृंगार कर्यो
सब त्यागि पती पद ध्यान धर्यो २
निज लोक विलोकि विशोक कियो
कुल दोष पवित्र हि शुद्ध हियो
धृमि हाग्रहि मन्दिर से निकसी
लखि जानकी दीन्हि राय लसी ३

करुणामय के मुख योनिकलो
अतिबान रहे निज गेहबसो
सुनि कान अशीस संकोच किये
प्रभु मोहिं कसा शिर बादियो४

अज्ञादिका ॥

निज स्वामि सङ्ग हौं जब जान
सह गमन होय दृढ़ कह्यो बान
आचरण विभूषित लखि कृपाल
लखि दुरित द्वेष परदुख व्याल थ्
भक्तन निन्दा की गति विलोकि
द्विजरहित अहित विधि गति विरोकि
बहु कुटुम्ब बुलाये वचन कीन्ह
हारे दासन हूं को सपथ दीन्ह ६

चतुष्पदी

तब मृतक मँगायो निकट धरायो
कह्यो विप्र निज राम कह्यो
सो सुनि अंगिरायो शीस उठायो
जनु सोवत निज धाम रह्यो

निज दृष्टा जो देखो अति भय लेखो
उठी चेत है पाप परो
प्रभु के गुण औ गुण हूँ अपने जो
कियो फिरि जन्म सबै सुमिरो ७
वंशीधर॥

राम नाम का माहात्म्य॥

सवैया॥

जो फल ना कुरुसत्र में विप्रन
काञ्चन को भुवदान दिये ते
जो फल योग औ यज्ञ किये नहिं
जो फल धूम हूँ पान किये ते
जो फल रामहि दान दिये सब
तीरथहू परिकर्म्म किये ते
जो फल वंशी सो कोटि उपाय से
सो फल राम को नाम लिये ते १
चनाछरी॥

जिन्हैं तू मगन तेरे तिन्हैं ताकि देखो नर
नग्र कै निकारि के चढ़ायवे को जीता है

सपने को सम्पदा सुलभ साथ सबही के
सोई हित लाग्यो हरि नाम आवि होना है
कहै मिश्र वंशी कबहूँ न आई मति वैसी
जैसी चहूँ छहूँ ठहराय गावै गीता है
चैन नाहीं परैगी पै तरी नावै चलो अब
सीताराम जपि ले जनम जात बीता है २

जानकी दास कवि॥

इसी विषय में

दोहा॥

के वन्दन श्रीराम पद रचै सिन्धु वध चित्र
दास जानकी दीन को दीजै प्रेम पवित्र १

त्रिपदी॥

पीत पटा तन श्यामा कोटि छटा छवि धामा
मोर किरीट विराजै सूर प्रभा लखि लाजै २

मालवक छोड़ा॥

ध्याव सदा राम उमा देव नहीं वाहि समा।
सेवत जा वद चहू पावत ना अन्त कहू ३

मल्लिका॥

त्यागि कै विकार कार कै विचार वेद सार
सीय कन्त बार बार ध्याव जानकी पवार४

बरवा॥

जपु पवार निशिवासर रघुवर नाम
सेवत चरण सरोरुह लहु सुख धाम५

सोरठा॥

जो जपि नाम उदार भव सागर सेतै रचे॥
कै बैकुंठ बिहार आपु तरै तारे कुलै ६

मति राम कवि॥

श्री लल्ल चरित वर्णन

सवैया॥

गुच्छन को अवतंस लसै
शिरि पल्लव गुच्छ किरीट बनायो
पल्लव लाल समेत छरी कर
पल्लव सो मतिराम सहायो
गुच्छन को कर मञ्जुल माल
सो कुञ्जन ते कढ़ि बाहर आयो

आन को रूप लखै ब्रजराज को
आँखिन को फल आजु हिपायो१

रसमिंह कवि॥

घनाक्षरी॥

सोहत मुकुट शीस कुण्डल श्रवण सोहै
मुरली अधर धनि सोहै त्रिभुवन को
लोचन रसाल बङ्क भृकुटी विशाल सोहै
सोहै बनमाल गरे हेरे लेत मन को
रूप मनमोहन न चित्तसे बिसारो मन
सुन्दर वदन पर कोटि मदनन को
जगत निवास कीजे सुमति प्रकाश मेरे
उर में हुलास है विलास वरणन को१

सूरदासजी॥

विलुपद

यशोदा तेरो भलो हिरदै है माई॥
कमल नयन मारवन के कारण बांधे उलूखल ल्याई
जो मूरति जल थल में व्यापक निगम नखोजै पाई

सो मूरति मेरे आंगन में चुटुकी देय नचाई
जो सम्पदा देव मुनि दुर्लभ सपन्यो देत दिखाई
याही ते तू गर्व्व भुलानी घर बैठे निधि पाई
बारम्बार सलिल भरि लोचन चितवन कुंवर कन्हाई
कहा करौं बलि जाउं छुडाऊं मोहूं सों हठ दिखाई
जा कारू के लरिका रोवत हौं हरि लेत उर लाई
अब अपने घर के लरिका इती कहा निठुराई
सुरपालक असुरन उर शालक त्रिभुवनताहि डराई
सूरदास स्वामी सब लायक विधि सों कहा बसाई ?
जानि पायों हौं हरि नीके ॥

चोरि चोरि दधि माखन मेरो नित प्रति गीधि रहे बुद्धि छीके । अब कैसे जैयत अपने बल भाजन दही दूध मेरो पीके ॥ सूरदास प्रभु भले परे फंद देहौं न जान भावतै जीके ॥ २ ॥

महरि हो मानो मेरी बात ॥

ढूंढि ढाढि सब घरको गोरस लियो तुम्हारो तात
असम्भाव बोलन हौं आई ढीठि गुवालिनि जात
चारयत नहीं दूध धौरी को क्यों करि मेरो स्वात

अरु हौं कहत लयो छीके ते ग्वालकन्ध धैलात
यह मेरो नहिं दूतो अचगरो कहा बना वत बात
अरु हौं और कहत सकुचत हौं कहा दिखाऊँगात
हैं गुण बड़े सूर प्रभु अब ह्याँ ये लरिका ह्वै जात ३

गिरिजा दत्त ॥।

विराग का वर्णन॥

विलु पद

विन हरि भजन सु जन्म गवांयो ॥

संसारी माया में फाँसि के माधव में नहिं चित्त लगायो। पुत्र कलत्र कुटुम्ब निमित नित झूँठी झूरि बहु बात बनायो॥ नारिन महं परि हरि बिसरयो विषय भोग महं अति रुचि लायो। वेद शास्त्र पुराण सुनि हित से भलि विधि निज पर लोक नशायो॥ हंस तजे सर कोउ न नेराने कोउ न एक पग जाइ पठायो। जब यम राज से काज परे जू तब बहिठाउं न कछु कहि आयो॥ डारे गये घोर रौरव में कोउ न तबहूं जाय बचायो। गिरिजा दत्त भजहु श्री पति नित सब यामें कछु नाहिं खोदायो॥१॥

राग धनाश्री॥

यह जग हाट लख्यत अति सुन्दर
क्रय विक्रय कहँ सब जन आये
देन लेन जासे भल बनिगे
ते सब निज २ ग्राम सिधाये
विविधि प्रकार वस्तु जिन लरिकै
चोरी करन को कर लपकाये
तिन्हैं दमन करि शमन वृत धरि
बन्दी गृह महं जाय बंधाये।
यहि संसार माहिं यह लेखा
गिरिजा दत्त बनिहि हरि गाये २

राग गुर्ज्जरी ॥

नरतनु पायके भजहु रमा वर
जो नहिं चरण शरण माधवके
तिन ते भले हैं स्वर श्वा शूकर
वे पग जनु नरवर की शाखा
चले न जो हरिदरश के मगपर

जो शिर नयो न हरिमन्दिर में
दूज्यहुं सो मानहु वर्तुल पत्थर
श्रीपति भजन वदन ज्यहि नाही
तिन ते सगरी विलि उत्तम तर
जिन श्रवणन हरि कथा न सुनिये
तिन ते भले हैं पक्षिन के घर
जो कर प्रभुहित वस्तु न लाये
तिन ते भले हैं दण्ड काष्ठ कर
जिन नयनन नहिं दरश रामके
तिनसों झन्झी रूप हैं सुन्दर
गिरिजा दत्त मीत भापति सम
कोउ काहू को कहुं नहिं दूसर ३

सुन्दर कवि॥

साङ्ग षडक्षरवर्णन॥

क्षनाक्षरी॥

क्षिति जल पावक पवन नभ मिलि करि
शब्द स्पर्श रस रूप और गन्ध जू

श्रोत्र त्वक चक्षु घ्राण रसना रस को ज्ञान
कहै वाक पाणि पाद पायु सो उपस्थ जू
मन बुद्धि चित अहङ्कार ये चौबीस तत्व
पञ्चविंश जीव तत्व करत है धन्य जू
षटवीस को है ब्रह्म सुन्दर सुनिस कर्म्म ।
व्यापक अखण्ड एक रस निरसन्ध जू १
श्रोत्रादिक त्वक वायु लोचन प्रकाशै रवि
नासिका अश्विनी जिह्वा वरुण बखानिये
वाक अग्नि हस्त इन्द्र चरण उपेन्द्र बल
मेढ्र प्रजापति गुदमित्रहू को ठानिये ॥
मन चन्द्र बुद्धि विधि चित्त वासुदेव आहि।
अहङ्कार रुद्र को प्रभाव कीर मानिये
जाकी सत्ता पाय सब देवता प्रकाशत हैं
सुन्दर सो आत्मा ही न्यारो करि जानये २

सवैया॥

श्रोत्र सुने दृग देखत है
रसना रस घ्राण सुगंध बियारे

कोमल तत्व को जानत है
पुनि बोलत है मुरव शब्द उचारो
पारिण गहे पद कौन करे
मल मूत्र तजे सो उभै अधद्वारो
जाके प्रकाश प्रकाशत है सब
सुन्दर सोई रहे घट न्यारो ३
बुद्धि भ्रमै मन चित्त भ्रमै
अहङ्कार भ्रमै कहा जानत नाहीं
श्रोत्र भ्रमै त्वक घ्राण भ्रमै
रसना दृग देखि दशो दिशि जाहीं
वाक भ्रमै कर पाद भ्रमै
गुद द्वार उपस्थ भ्रमै कछु काहीं
तेरे भ्रमाये भ्रमै सब ही
गुण सुन्दर तू क्यों भ्रमै इन माहीं ४
बुद्धि को बुद्धि अरु चित्त को चित्त
अहङ्को अहम्मन को मन सोई
नैन को नैन है वैन को वैन है
कान को कान त्वचा त्वक होई

प्राण को प्राण है जीभ को जीव है
हाथ को हाथ पग पग दोई
शीस को शीस है प्राण को प्राण है
जीव को जीव है सुन्दर सोई ५

घनाक्षरी॥

कैसे कै रच्यो है यह जगत जगत गुरु
मोसों कहो प्रथम ही कौन तत्व कीन्हो है
प्रकृति पुरुष कीधौं अवर तत्व अहङ्कार
कीधौं उपजाये रज सत तम तीनो है
कीधौं व्याम वायु तेज आप की अवनि कीन
कीधौं पञ्च विषय पसारि करि लीनो है
कीधौं दश इन्द्री कीधौं अन्तह्करण कीन
सुन्दर कहत कीधौं सकल विही नो है ६
ब्रह्म ते पुरुष और प्रकृति प्रकट भई
प्रकृति ते महा तत्व पुनि अहङ्कार है
अहङ्कार हू ते तीनि गुण सत्व रज तम
तमहू ते महाभूत विषय पसार है

रजहू ते दून्द्री दश पृथक पृथक भई
सतहू ते मन आदि देवता अपार है
ऐसे अनुक्रम करि शिष्य से कहत गुरु
सुन्दर सकल यह मिथ्या भ्रम जार है ७
मेरो रूप भूमि है कि मेरो रूप आप है
कि मेरो रूप तेज है कि मेरो रूप पौन है
कि मेरो रूप व्योम है कि मेरो रूप दून्द्री है
कि अन्तह करण है कि मेरो रूप गौन है
मेरो रूप त्रिगुण कि अहङ्कार महा तत्व
प्रकृति पुरुष कीधौं बोले है कि मौन है
मेरो रूप शब्द है कि मेरो रूप व्योम है
कि मेरो रूप देव है कि मेरो रूप योन है ८
तूतौ कछू भूमि नाहिं आपतेज वायु नाहिं
व्योमपञ्चविषै नाहिं सोतौ भ्रम कूप है
तूतौ कछु दून्द्री नाहिं अन्तह करण नाहिं
तीनौ गुण हू तू नाहिं सातौ छाहं धूप है
तूतौ अहङ्कार नाहिं पुनि महातत्व नाहिं
प्रकृति पुरुष नाहिं तूतौ सो अनूप है

सुन्दर विचारि ऐसे शिष्य सौं कहत गुरु
नाहीं नाहीं करत रहै सो तेरो रूप है ८
तेरो तौ स्वरूप है अनूप चिदानन्दघन
देह तौ मलीन जड़ यौं विवेक कीजिये
तूतौ निस्सङ्ग निराकार अविनाशी अज
देह तौ विन्ना शवन्न ताहि नाहिंधीजिये
तूतौ षड ऊरमी रहित सदा एक रस
देह को विकार सब देह शिर दीजिये
सुन्दर कहत यौं विचारि आपु भिन्न जानि
पर की उपाधि कहा आपु विषे लीजिये १०
देहदै नरक रूप दुख को न वार पार
देहदै स्वरग रूप झूठो सुख मान्यो है
देहदै को बन्ध मोक्ष देहदै असोच्छ प्रोक्ष
देहदै को क्रिया कर्म सब भ्रम ठान्यो है
देहदै मैं और देह सुखि हू विलास करै
ताही को समुझि विनश्यात्मा जीव ठान्यो है
सोऊ देह ते अलिप्त देह को प्रकाश कहै
सुन्दर चैतन्य रूप न्यारो करि जान्यो है ११

देह हलै देह चलै देह ही सो देह मिलै
देह खाय देह पीवै देहई भरतु है
देहई हिवारे गलै देहई अनल जरै
देह रण माहिं जूझै देहई परतु है
देहई अनेक कर्म्म करत विविधि भाँति
चुम्बक की सत्ता पाय लोह ज्यौं फिरतु है
आतम चैतन्य रूप व्यापक साक्षी स्वरूप
सुन्दर कहै सो तौ जन मैं न मरतु है १२

प्रश्नोत्तर ॥

देह यह किन को है देह भूतन को
पञ्च भूत किनते हैं ताम साहङ्कार ते
अहङ्कार कौन ते है जासों महातत्व कहै
महातत्व कौन ते है प्रकृति मझार ते
प्रकृति है कौन ते है पुरुष है जाको नाम
पुरुष सो कौन ते है ब्रह्म निराधार ते
ब्रह्म अब जान्यो है मै जान्यो है निश्चै कारे
निश्चै हम कियो है तो चुप मुख हार ते १३

नरहरिकवि॥

शिक्षा॥

कुण्डलिका॥

नरहरि धरहरि को करै जननि सुतहि विष देय
वारे जो खेतहि हरि चरै साधु पराधन लेय
साधु पराधन लेय नाव करिया गहि चोरै॥
सोद पहरू सोद चोर प्रीति प्रियतम हरि तोरै
नृपति प्रजहि दुख देय कौन समरथ को रोकै हरि
क्षितिपति अकबर ग्रह सुनै धर धरि करै नरहरि ?

हरिनाथ कवि॥

शिवा केराजा की प्रशंसा॥

दोहा॥

पुण्य बीज बलिने बई कर्ण खेत्र है पात
सींच्यो बान्धव गढ़ नृपति जब देख्यो कुंभिलात ?

रसखानि कवि॥

विराग॥

सवैया॥

या लकुटी अरु कामरिया पर
राज्य तिहूं पुर को तजि डारौं
आठहु सिद्धि नवो निधि को सुख
नन्द की गाय चराय बिसारौं
कोटि करौ कलि धौत के धाम
करीर के कुञ्जन ऊपर वारौं
रसखानि कहै इन नैननसौं
ब्रज के बन बाग तडाग निहारौं १

गदाधर रामा॥

सवैया॥

वश ह्वै मुरली स्वर लीन्ह किधौं
किधौं कूल कलिन्दी के दोहन गो
किधौं पीत पटा लरिवया लकुटी
किधौं मोर पंखवा छवि जोहन गो

किधौं लाल की माल के मध्य फंस्यो
किधौं काम कमान नमी भौंहन गो
हम कामों गदाधर योग करैं
मनतो मन मोहन गोहन गो १

महेश्वरदत्त॥

अष्टादश पुराणों की सङ्ख्या॥

घनाक्षरी॥

ब्रह्म है अयुत १०००० पद्म पचपन ५५००० त्रिविंश
२३००० विष्णु चतुर्विंश २४००० शिव पञ्चविंश २५०००
नारदीय है। अष्टादश १८००० भागवत एतहीं वैवर्त्त ब्रह्म
लिङ्ग एकादश ११००० अयुत १०००० वामनीय है॥
कूर्म्म सप्तदश १७००० मत्स्य चौदह सहस्र १४००० नव
दै००० सहस मार्कण्डेय ऊनविंश १९००० गारुडीय है
द्वादश १२००० ब्रह्माण्ड चतुर्विंश २४००० बाराह स्कन्द
एकसै एकासी ८११०० सहस्र जाननीय है २॥
पञ्चशत चौदह १४५०० सहस है भविष्य अग्नि
पञ्चदश सहस सौ चारिशत १५४०० मानिये

इनके एकत्र किये पद्म स्वच्छ लक्ष चारि
४००००० होतहैं विचारि निरधारि जिय जानिये
सुनत सुनावत औ गावत बतावत जै
हरिलोक पावत कहावत न जानिये
जनन मनाय समुझाय कै महेश इन
कहत सुनाय मनभाय तौ बखानिये २
विष्णु के २५ अवतारों के नाम औरचरित्र ॥
वामन बराह यज्ञ कपिल कुमार पृथु
दत्त बल ऋषभ नृसिंह हंस ठानिये
मत्स्य कूर्म्म हरि हय सुख व्यास कृष्ण बुद्ध
मोहनी परशुराम रामचन्द्र मानिये
कल्की नारायण धन्वन्तरि औ ध्रुव एते
पञ्च विंश २५ गायें पे असङ्ख्याकृति जानिये
गाय जिन गुण पार जात न गणेश शेष
प्रजनेश औ महेश क्यों महेश भानिये ३
बलि जाली वामन नृसिंह प्रहलाद पाली
हरि गज लाली रामधाली लड्डु नाहको
मत्स्य वेद उद्धारी औरकूर्म्म पृष्ठ गिरिधारी

कृष्ण कंसहारी मोहनारी मारी राहु को॥
बुद्ध दया कारी वराह महिधारी कपिल
योग सञ्चारी राम मारी सहस्र बाहु को
कल्की म्लेच्छ हारी व्यास वेद विस्तारऋषभ
ज्ञानहिं पसारी पृथु भूमि गारी लाहु को ४
हयास्य वेदोद्धारी हंस भक्ति योग चारी
प्रलम्ब मारी बल ध्रुव उच्च लोक धारी है
नारायण तपकारी कुमार आत्मतत्वपारी
यज्ञ लोक भारी दत्तयोग विस्तारी है
लोक रोग हारी वैद्य राज उपकारी सब
कहाँ लौ पुकारी बलिहारी बलिहारी है
दुष्ट अपकारी हितकारी निज दास के
महेश अघहारी श्री अनेक कार्य कारी है ५

बारह मासा॥

हरिगीतिका॥

गज वदन मदन विदारि पद शिर धारि सज्जन मनावऊं
रघुनाथ पद धरि माथ श्री यदुनाथ गीत बनावऊं

नभ शुक्ल गिरि कर नन्द चन्द्र संभारि सञ्चत लीजिये
रवि वार हरतिथि छन्द शुभ हरि गीतिका कहि दीजिये ६
आषाढ़ स्वादु विसारि नारि परारि पाय लोभाय गे
अज ग्वाल बाल विहाल करि नंदलाल हाय रिसाय गे
रुद्ध द्वार बार कपाट ठाटि जगट ठाटे आय के
जगनाथ बिच नद नाथ सो वहिं माथ हथ्थ लगाय के ७
घन घोर शोर कठोर मोर दरोर सजनी को सहै
तड़िता तड़ातड़ तड़पि मनडर पाय दद्दु सरिव कालहै
मोहिं झूलिं गावन मास श्रावन नहिं सुहावन लागई
घन श्याम विन घन श्याम लखि सखि काम बाम सुजागई ८
भादौं भयानी भामिनी सखि यामिनी बिच दामिनी
अब भेंक भेकी करहिं नेकी जानि एकी कामिनी
अगार द्वार बजार वारि विहारि मनहुं बहाइहै
ब्रजनाथ कुंवरि साथ त्यहि गहि हाथ गाय बचाइहै ९
सखि कार मोर गवांर बिन गिरि धारि सारि मचावहीं
जलपिरड आप्त अकाश तजि यहि मास पीतर आवहीं
नवराव पाव भराय गात्र नवाय देवि मनावहीं
अवनीर नाहिं गंभीर सखि नर धीर सीर लुनावहीं १०

नंदलालहित नरबाल तुलसी ग्वाल बालमुलीपहीं
पुनि दीप बारि संवारि आश्विन मास कार्त्तिक दीप हीं॥
मन धूत करि जन द्यूत खेलि जगाय माधव गावहीं
अलि कूबरी फंद फन्दैके ब्रजचन्द काह्यक आवहीं ११
वर नारि कंस सुधारि मुण्डन गवन गाधहिं लागिकै
नव धारि पाय मनाय नवपिय हिय लगावहिं जागिकै
बिन मीत प्रीत पुनीत अगहन दहन सम मोहिं लागई
सरिवर श्याम धाम निहाय हाय कुवाम संग अनुरागई १२
यह कंस चेरि मुरारि घेरि स्व सौरव पौष दिखावई
ननु मेल नेल फुलेल्न करि निज अङ्ग अङ्ग लखावई
भरि तूल मध्य दुकूल हरि अनुकूल करि हिय लावई
करि दीन चाव दुराव सांस्वद काह कूबरि पावई १३
चहुँ ओर भोर तुषार धार पहार कानन राजहीं
अब माघ साज समाज नीरथ राज त्यारिक्वर गाजहीं
करि ध्यान गानन हान गुड़ तिल अन्नदेहिज भूजहीं
जहं नन्द नन्द अनन्द तहं यहं नाहिं मोहिं कछु सूझहीं १४
नरबाल बाला हे निहाला फागु फागुन गावहीं
एक सङ्ग रङ्ग विरङ्ग करि त्यारिव अङ्ग अङ्ग बुड़ावहीं

भरि झोरि रोरि गुलाल गाल लगाय उपर उड़ावहीं
बल वीर नाहिं अधीर काया डारि हम फगुवा वहीं १५
ऋतुनाथ आय अनाथ नारि सनाथ करि यश लीजिये
यदुनाथ नाथ मनाय कै गहि हाथ त्यहि मोहिं दीजिये
तव बीच नीच अमैत्र चैत्र विदेशि नारिन्ह मारई
जहँ फूल फल दल कमल जल जलकाम भल बल भारई १६
वेशाख बसै नर डार डार पहार मारवली अली
पुनि मत्त मोर चकोर शुक पिक रटत शब्द गली गली
बन बापि बाग तड़ाग उपबन बास मोहिं न भावई
यदु वीर हीन समीर तीन नवीन पीर उठावई १७
धन धाम ग्राम उशीर नीर समीर नद नहिं तीर री
सब लगत ताते नहिं सुहाते सदन विन बल वीर री
अब ज्येष्ठ धूरि उड़ात गात सुखात बात न आवई
सरि शीत चन्दन नन्द नन्दन अङ्ग कूबरि लावई १८
हे नाथ कर हम नाथ नारि अनाथ निज विन जानिकै
गहि हाथ माथ जुड़ाय हृदय लगाय दासी मानिकै
नर नारि करि विश्वास बारह मास सुनि जो गाइहैं
हरि राधिका पद प्रीति रीति महेश दत्त सो पाइहैं १९

तुलसी दास जी के सर्व्व ग्रन्थों की कुछ कुछ कविता॥

कवित्व रामायण॥

घनाक्षरी॥॥

जाहिर जहान में जमानो एक भाँति भयो
बेंचिये विबुध धेनु रासभी व्यसाहिये
ऐस्यउ कराल कलि काल में कृपाल तेरे
नाम के प्रताप न त्रिताप तन दाहिये
तुलसी तिहारो मन वचन करम जन
येहू नातो नेह निज ओर तेनिवाहिये
रङ्क के नेवाज रघुराज राजा राजन के
उमरि दराज महाराज तेरी चाहिये१

राम शलाका॥

दोहा॥

राम राज राजत सकल धर्म्म निरत नर नारि॥
राग न रोरव न दोष दुख सुलभ पदारथ चारि१

गीतावली॥

कौशल्याजी का वाक्य ॥

राग केदार॥

पौढ़िये लाल पालने हौं झुलावौं॥

कर पद मुख चरण कमल लषत लषि लोचन भ्रमर बुलावौं
बाल विनोद मोद मञ्जुल मणि किलकनि रवनि रबुलावौं
तेहु अनुराग ताग गुहिबे कहं मति मगन यानि बुलावौं
तुलसी भणित भली भामिनि उरसो पहिराय फुलावौं
चारु चरित रघुवर तेरेहि मिलिगाय चरण चित लावौं ३

बरवा रामायण॥

जानकी जी की प्रशंसा॥

सिय मुख शारद कमल जिमि किमि कहिजाय
निशि मलीन वह निशि दिन यह विकशाय ४

शिक्षा॥

कलि नहिं ज्ञान विराग न योग समाधि।
तुलसी सुमिरहु रामहिं नित निरुपाधि ५

दोहा वली॥

तुलसी वहां न जाइये जहाँ कपट को हेत ॥१॥
हम तन हारैं हैं कुली मीचहिं आपन खेत ६
नर्क विशेष निषेध पति उर मानस सुपुनीत
बसत मराल लर हित करि त्यहि भजपलटि विनीत ७

विनय पत्रिका॥

तामें से पोटि मनहुं तनु पायो॥
नीच मीच नहिं गनसि शीस पर दूषनि पटविमरायो
स्मरणि धरणि धन धाम सुहृद पशु कोनहिं इनअपनायो
काकै रहे गये संग काके सब सनेह छल छायो
जिन भूषन जगजीति बाँधि यसत्रयनी बाँहबसायो
तिनको काल कलेवा कैगे तू गिनती कब आयो
मानत नहीं सारको सांचो निगम नेति त्यहि गायो
अजहुं न भजसि दास तुलसी त्यहि त्यहि महेश मन लायो ८

हनुमत हाकुक॥

घनाक्षरी॥

दिग्गज दबकि जात शेस शीस अलसात
हहलात वारिधि घटत द्युति भानु की।

मेरु धसकत कमठ कसकत उर रावण को
चलत अवनि छवि छपत कृशानु की
सुभट सकात दैत्य देखि कै परात मन
राम मुसुकात अति पाय निज जानु की
गर्व गिरि जात शोक सुर वितनात वन
नाक अरगात सुनि हांक हनुमान की ४

चन्द्र कवि॥

सेना देख कर परमालिक का भागना॥

दोहा॥

देखि फ़ौज परिमाल नृप काँपि चले तजि ज्ञान
दश हज़ार भट सङ्ग ले चले महोबे थान १
ब्रह्म नद फिरि गाड्यो धरि क्षत्रिय धर्म्म धारि
पृथी राज सो पद्धरे बज्जावन तर वारि २

भुजङ्ग प्रयात॥

दुहूं सैन्य मिल्ली दुहूं बाग लिन्नी
दुहूं धारि धर्म्मे बरं दूरु किन्नी
दुहूं सैन्य कड्ढी दुहूं कोर बाढ़ी
दुहूं बार बानो शब्द चुच्च काढ़ी ३

बजे भेरि निश्शान जङ्गीनवल्लभ्
गजे नाद तुरही सवल्लम्भुसल्लभ्
हुहूं नाद कीनो सुरं शङ्ख भारी
हुहूं नाम हर्षे सु हाहा उचारी४
कहे चन्द भो हो सुनो चाहुवानम्
चलायो गढ़ म्लाधि बादें भुजानम्
मुखम्लान जम्मे सु दुंगे भवानी
मिलायो बलम्लाहि धाये जवानी५
अगे कीन सैना सु चौंडल्ल हाथी
रहे पीदि असवार बन्नाय साथी
चलावे मुखङ्कान्ह पहीं उठाई
किधौं रावने राम भौंहैं रुठाई६
अगे आप हत्थीन पै हत्थवाहैं
बरन्दन्न नाने उदाने उमाहैं
उपारन्त रन्ने बली बाहु जोरैं
गहे पुच्छ शुण्डा बगारैं झमोरैं७
कहूं ते भुशुण्डै नचै ते न पावै
कहूं कोपि प्रत्यक्ष धर्मो मिलावै

कहूं भाव साधै कहूं कोपि रोरै
कहूं घाव बाहै कहूं कोपि चोरै ८
नहूं बान बल्मो कियो पील कानी
मुख मन्त्र बोलै तु दूजो भवानी
कहूं हंक बड्डू. दुहूं सैन्य सोहू
बजावं मढ़ं झोह निर्मोह होई
करैं खण्ड खण्डै घट न्याव धारैं
बिकट्ट म्वली बाहु ठट्ट निहारैं
चलावन्त तीरं हुन्हीरं गुमानी
धरक्कै धरन्नी खनक्कै सुचानी १०
उरं सेल्ह लागैं उरम्यार होई
गिरैं नट्टवा से कला चूकि सोई
वहैं कन्ध कि पर्यान बन्धड्डु. लावै
परै मुण्ड धन्नी सुरण्ड न्नचावै ११
गुरज्जं व्वहै शीस रोसे रवानी
शिरं होत चूना विखून्नं जवानी
वहै मुग्दर म्मार धारन्त कत्ती।
परै फील मन्त्रा सुधरनी वरन्नी १२

करै वार हङ्ग डुन्दारी करूरम्
करी मान मत्ता परै चाक चूरम्
इसी भाँति कान्हैं कियो युद्ध भारी
मिल्यो ध्यान रुम्बा डुलीं दूरधारी १३

दोहा॥

कान्ह कटक कीन्हों कहर हटक परी दल माहिं।
भटकि वीर भागे बली कोऊ पलटत नाहिं १४

शिव प्रसाद कवि॥

शङ्करजी की प्रशंसा॥

दोहा॥

शङ्कर सेवा करत जो सो पावत बहु वित्त॥
विद्या में अति प्रबल है रटत शम्भु दै चित्त १
शङ्कर जी सुरस्वार्थ लगि कीन्ह गरल को पान
जाँके कण्ठ विषान में विष को बनो निशान २
बाणासुर के सङ्ग है युद्ध कीन्ह हरि माहिं॥
ऐसे शम्भु कृपाल को भजन करहु मन माहिं ३

महादेव के भजन विन नहिं पावत हरि लोक।
विषय भोग करि बहुत दिन पुनि मरि भोगत शोक ४
ऐसे दया निधान को भजा करौ दिन राति।
प्रतिदिन होहिं अनन्द बहु नाश होहिं अराति ५

महेश दत्त ॥

जिन २ कवियों की कविता इस ग्रन्थ में है उनके नाम।

घनाक्षरी ॥

तुलसी नारायण मदन हुल्लास राम
सहज रान भगवती दास रत्न धाम है
अजवासी दास सिंह सबल नरोत्तम
सबल लछूलाल गिरिधर राय नाम है
बिहारी रघुनाथ शिव प्रसाद जन्यदास
गिरिजा प्रसन्न मोतीलाल कृपा राम है
सेख कर सीता राम चरण भिखारी दास
रामनाथ मानसिंह अवध लल्लाम है १

श्रीपति शिव प्रसन्न पद्माकर केशवजी
हिमाचल रङ्गाचार प्रिया दास ठानिये।
मीरा देव नाभा दास दास वंशीधर रु।
जानकी दास मतिराम राम सिंह मानिये
सूरदास सुन्दर मलूकदास नरहरि
हरिनाथ रसखानि गदाधर भानिये
चन्द्र ये महेश दत्त सहित इक्यावन कवि
काव्य काव्य सङ्ग्रहमें लिखी भूप जानिये २

इस ग्रन्थ में जो छन्द हैं उनके नाम॥

दोहा॥

दोहा चौपाई घनाक्षरी सोरठा जानु॥
चामर सवैया गीतिका हुमरि सवैया ठानु ३
दोवै भुजगप्रयात सय्युता त्रिभङ्गी मानु॥
तोमर मदिरा विज्जया तन्त्रि नराच बखानु ४
तोधक तोटक स्वागता छप्य चतुष्पदि नीका।
प्रज्झटि माणा बक्रीड शशि वदन मरहठाठीक ५

चौबोला चन्द्रवरि विषदि बरव विलुपद छन्द
छन्द नरिन्दरु माल्मिका तैंतिस करत सु वृत्त ई
केदारा गुर्ज्जर धनाश्री आदिक हैं राग ॥
पढ़िहैं सुजन सुधारि सब करिकै अति अनुराग७

जिस प्रकार से यह ग्रन्थ बना है उसका वर्णन॥

सिद्धि श्री शुभ गुण सदन श्री कालिन्द्रीनिद्ध·
साहब डेरेकर सुभग जामें गुण दिन विद्ध·८
संस्कृत अरबी फारसी अंगरेज़ी जिहि सद्ध·
छायासी घूमत फिरत माती जाके रद्ध· ९
जाकी कृपा कटाक्ष से ये सबही के अद्ध·
विद्या व्यापी जाहि सों सब के उठी उमद्ध·१०
सुमति बढ़ी जिहि भाँति सों हुओ कुमति को भद्ध·
सोई कीन्ह्यों रात्रि दिन खोजि सकल शुभ दद्ध·११
ग्राम २ गद्द २ चह्यो जन २ पण्डित होय।
याद्ध परजो नाहिं भयो रह्यो तासुमति सोय १२

नाकी आज्ञा पाय कै ग्रन्थ रच्यो मैं येह ॥
भूल होय जहं सुजन त्यहि पढ़ियो शुद्ध सनेह १३

ग्रन्थ समाप्ति के मासादि का वर्णन ॥

हार गीतिका ॥

नभ राम नन्दरु चन्द्र सं॰वत कार पूरण मासिका
विधु पूष बबधु व ग्रन्थ पूर्न्नि सुरामनगर निवासिका
शुभ काव्य सङ्ग्रह नाम केरि महेश दत्त हितूकरी
अरु दहन नग वसु चन्द्र ईसा वर्ष बस्यकटूबरी १४

इस ग्रन्थ के पद्यों की सङ्ख्या ॥

दोहा ॥

यामैं एक सहस्र अरु एक सठि हैं सब पद्य
यह मैं जानत नहिं कयतिक होहिं गने यहि गद्य १५

इति

जिन २ कवियों की कविता इस ग्रन्थ में है उन के ग्राम नाम पठन पाठन जन्म मरण इत्यादि की अवस्था॥

तुलसीदास जी॥

ये सरयू पारीण अर्थात् सर वरिया ब्राह्मण चित्रकूट के इलाक़े में राजापुर के रहने वाले थे इन के गुरू का नाम नृसिंहदास था कहते हैं कि ये यद्यपि षट शास्त्री पण्डित थे पर ईश्वराराधन में चित्त नहीं लगता था एक दिन इन की स्त्री ने ऐसा उपदेश किया कि ये सब गृहस्थाश्रम छोड़कर रात्रि दिन श्री राम जी का स्मरण करने लगे बहुत दिन काशी चित्रकूट अयोध्या आदि तीर्थों में रहकर वृन्दा बन को गये वहां नाभा जी से भेंट हुई और कृष्णचन्द्र जी जोकि सर्वदा मुरली धारण

किये रहते हैं उन्हें उन्हों ने देख कर कहा कि मैं तो प्रणाम तभी करूंगा जब धनुर्ब्बाण धारण करोगे यह सुन कर कृपा चन्द्र जी ने वैसा ही किया तब उन्हों ने साष्टाङ्ग प्रणाम किया और बहुत दिनों तक वहां रहे इन को हनुमान् जी का इष्ट था फिर वहां से पलट काशी जी में बसकर इन्हों ने बड़ी बड़ी सिद्धता दिखाई ये संस्कृत और भाषा दोनों के बड़े कवि थे इन्हों ने विनय पत्रिका गीतावली रामचरित मानस दोहावली रामश्लोका बरवा रमायण कवितावली छन्दोवली महल्लावली और हनुमद्बाहुक आदि ग्रन्थ बनाये मैं जानता हूं कि इस भारत खण्ड में भाषा के कवियों के शिरोमणि थे अत्यन्त इन के समान दूसरा नहीं हुआ इन्हों ने सर्व्वजनों के उपकार के लिये कविता की और श्रीराम यशो वर्णन को छोड़ और किसी का वर्णन नहीं किया कि जैसा बहुधा कवि लोग ठुमुक २ झुमुक २ झनन २ आदि पद बहुत ललित बनाकर लोगों को अधिक विषय वासना में लगाते चले आते हैं

इनकी प्रशंस कहां तक करूं येसम्वत् १९८० में श्री काशी जी के मध्य शरीर त्याग कर वैकुण्ठ वासी हुये

मदनगोपालजी॥

ये कान्य कुब्ज ब्राह्मण फतूहा बाद के निवासी थे दून्होंने सम्वत १९७६ में बलरामपुर के महाराज दिग्विजय सिंहजी के पिता अर्जुनसिंह के नाम से अर्जुनविलास नाम के ग्रन्थ बनाया ये अच्छे कबि थे उस ग्रन्थ में दून्होंने सब पदार्थों का बर्णन संक्षेप से किया है और ग्रन्थ बनाने के पश्चात थोड़े ही दिनों में दस असार संसार को छोड़ दिया॥

हुल्लासराम॥

ये शाकद्वीपीय ब्राह्मण ज़िले बारह बङ्की तहसील फतेपुर ग्राम रामनगर के रहने वाले थे दून के पिता का नाम प्रयाग दत्त था दून्होंने बुद्धि प्रकाश बैतालपञ्चविंशति कालङ्कारादि ग्रन्थ निर्म्मित किये १८४५ सम्वत में उत्पन्न हुये और १९१२ में मृत्यु वश हुये॥

सहजराम॥

ये सनाढ्य ब्राह्मण पञ्जाब के रहने वाले थे और यहां सुलतानपुर के ज़िले में जो बंधुवा ग्राम है वहां के रहने हारे एक नानक साही ब्राह्मण के शिष्य हुये येभी बड़े महात्मा हुये हैं और सहजराम रामायण प्रह्लाद चरित ये दो ग्रन्थ इन्होंने रचित किये और सम्वत् १९०५ में इस संसार से निरपृह हो स्वर्ग वास किया॥

भगवती दास॥

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण फैज़ाबाद के ज़िले में किठावां ग्राम के रहने वाले थे उसी समय में हुये थे जबकि तुलसी दास जी थे इन्होंने सम्वत् १६८८ में नासकेतोपाख्यान निर्म्माण किया और ये सम्वत् १७१४ में स्वर्गी हुये॥

रत्न कवि॥

ये ब्राह्मण काशी जी के रहने वाले थे इन्हों ने प्रेमरत्न नाम ग्रन्थ सम्वत् १८०५ में बनाया॥

ब्रजवासी दास॥

ये ब्राह्मण कहीं पूर्व के रहने वाले थे इन्होंने वृन्दाबन में आकर सम्वत् १८२७ में ब्रज विलास ग्रन्थ रचा ये बड़े ही श्री कृष्णोपासक थे और जन्म भर वहीं रहे और शरीर त्याग किया॥

सबल सिंह चौहान॥

ये फ़र्रुखाबाद के ज़िले में राम गङ्गा के तट पर सबल पुर के रहने वाले बड़े परिश्रमी पण्डित थे कि देखो सम्पूर्ण महाभारत को भाषा किया अब इन के लड़के वाले हरदोई ज़िले के सार्दूग्राम में रहते हैं॥

नरोत्तम दास॥

ये सीता पुर के ज़िले में बाड़ी के वासी थे इन्होंने सम्वत् १५८२ में सुदामा चरित्र नाम ग्रन्थ बनाया था॥

नवल दास॥

ये क्षत्रिय जनवार ज़िले बारह बङ्की तहसील

राम सनेही ग्राम गूढ़ के रहने वाले थे वृद्धदेश्वराराधन किया और ज्ञान सरोवर आदि कई ग्रन्थ बनाये और सम्वत् १८१३ में वहीं मृत्युवश हुये॥

लखूजी लाल॥

ये गुजराती ब्राह्मण सहस्र अवदीच आगरे के निवासी इन्हों ने प्रेम सागर सभा विलास आदि ग्रन्थ बनाये और इन का जन्म सर्व्वत् १८३० में हुआ था॥

विहारी लाल॥

ये कान्य कुब्ज ब्राह्मण श्री वृन्दावन के रहने वाले थे इन्हों ने सत सई नाम ग्रन्थ जयपुर के राजा जयसिंह राय सवाई के कथन से उन्हीं के निमित्त निर्म्माण किया॥

अनन्य दास॥

ये कान्य कुब्ज ब्राह्मण जिले गोंडा ग्राम चकदूवा के रहने वाले राजा पृथ्वीराजे के समयमेथे इन्हों ने अनन्य योग नाम के ग्रन्थ बनाया उस के

देखने से विदित होता है कि अच्छे कवि थे सम्वत १२७५ में वैकुण्ठ यात्रा की ॥

रघुनाथदास महन्थ ॥

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण पचवार के पांडेसीतापुर के ज़िले में पैंते पुर के रहने वाले हैं प्रथम ये रापट की पलटन में गोलन्दाज़ों में नौकर थे और अयोध्या जी में सौनी दास के शिष्य हुये और वहां नौकरी और भगदभजन दोनों करते थे यहां तक कि बांगर के दूलाक में किसी राजा से लड़ाई होती थी और ये भोजन बनाते थे कि बैरी की सेना ने धावा किया सब गोलन्दाज भगे तब रघुनाथदास का वेष बन कर ईश्वर ने आपआकर गोलन्दाज़ी करके शत्रु की सेना को हटाया उसी समय में रापट साहब ने देखा कि अकेला रघुनाथ दास तोप चला रहा है दूसरे प्रसन्न होकर कहा कि तुझे हुदेदार बनाऊंगा कुछ घड़ी के पीछे सबने जाना कि मेरे लिये ईश्वर को नौकरी करनी पड़ी तो आप नौकरी छोड़ कर श्री अयोध्याजी में

वासुदेव घाट पर रहने लगे और अब राम घाट पर रामाराधन करते और अपने तपो बल से प्रति दिन चार पांच सौ मनुष्यों को भोजन देते हैं इन्हों ने हरिनाम सुमिरनी एक बड़ा अद्भुत ग्रन्थ बनाया है

मलूक दास कवि ॥

ये ब्राह्मण कड़ा मानिक पुर जो कि गङ्गा जी के तट पर है वहां के रहने वाले बड़े सिद्ध थे इन के मित्र एक मुरारिदास वैष्णव जो कि कड़ा नगर से बीस कोश पूर्व्व दिशा में कहीं गङ्गा जी के निकट रहते थे माघ मास में उन्हों ने एक बड़ा भारी भण्डारा किया पर मनुष्य बहुत थे इस से सामग्री न पहुंच सकी तब ईश्वरानुग्रह से यह वृत्त मलूक दास को विदित हुआ तो एक तोड़ा पर अपनी ओर से लिखवा कि मुरारि दास के पास पहुंचे उसे ले गङ्गा जी से कहा कि हे गङ्गे इस को अभी वहां पहुंचा दीजिये क्योंकि मनुष्य इस को ले जाकर समय पर नहीं पहुंच सक्ता यह कह गङ्गा जी में छोड़ दिया उसी समय मुरारि दास अपने घाट पर स्नान करने गये

थे कि तोड़ा रुपयों से भरा हुआ पाय में लगा उसे देख जाना कि मल्लूक दास का भेजा हुआ है सब को भोजन कराया ये मल्लूक दास तुलसी दासजी के समय में थे क्योंकि जब तुलसी दासजी अयोध्या जी से चित्र कूट जाते थे तो इनसे भेंट हुई थी ये संवत १६९५ में वहीं मृत्यु वश हुये ॥

मोती लाल कवि ॥

ये सरवरिया ब्राह्मण बांसी के राज्य में अघैला ग्राम के बासी बहुत दिन पठन पाठन करसंवत १५९८ में वहीं मृतक हुये इन्होंने गणेशपुराण को भाषा किया ॥

कृपाराम कवि ॥

ये सरवरिया ब्राह्मण गोंडा के ज़िले में नरैनापुर के रहने वाले थे इन्होंने श्रीमद्भागवत एकादश स्कन्ध भाषा बनाया ॥

क्षेमकरण मिश्र कवि ॥

ये सरयूपारीण अर्थात् सरवरिया ब्राह्मण नगरहा मिश्र ज़िले बारह बङ्की तहसील रामसनेही

गोमती नदी के कूल पै ग्राम धनौली के बासी थे इन के पिता का नाम आधार मिश्र पिता मह का लक्षणराम और प्रपितामह का लालिमणि मिश्र था मं० १८३५ में इन का जन्म हुआ और ७ वर्ष की अवस्था में संस्कृत विद्या पढ़ने का आरम्भ किया प्रथम जिले सुलतानपुर ग्राम महुआबोझ के निवासी परिडत श्रेष्ठ साधव राम जी से पढ़ते थे तदनन्तर जिले राय बरेली तहसील दिग्विजय गञ्ज ग्राम हलोर के बासी विद्वद्वर्य नयन राम जी से कि जिन का चन्द्रिका पाठन अब तक प्रसिद्ध है उन से तत्पश्चात् जिले बारह बङ्की तहसील हैदर गढ़ ग्राम पुरवरा के रहने वाले श्री मुन्ना लाल शास्त्री जी से तदनु श्री मथुरा जी में छन्दप्रशास्त्राध्ययन करके बहुत दिनों तक पठनपाठन करते हुये अम्बारा बरोधा और बम्बई आदि नगरों से बहुत सा द्रव्योपार्ज्जन कर के गया श्राद्धादि ब्रह्म भोज और ८ कन्याओं के विवाह में बहुत मुद्राव्यय करके अन्तावस्था में श्री अयोध्या जी के मध्य १४ वर्ष बास कर भगवद्भजन

करके संवत् १९१८ में वहीं शरीर त्याग करईश्वर में लीन हुये ये संस्कृत और भाषा दोनों की कविता में बड़े विज्ञ थे कि जिन्हों ने श्री रामरत्नाकर वृत्त रामास्यद गुरुकथा और आन्हिक ये संस्कृत के और राम गीत माला कृष्ण चरितामृत पद-विलास वृत्त भास्कर रघुराज घनाक्षरी गोकुल चन्द्र कथानक ये भाषा के ग्रन्थ बनाये और बड़े रामोपासक थे और कविता हास्यशृंगार वर्णन हीं की करते थे

सीता राम दास कवि॥

ये कवि वैश्य वर्ण ज़िले बारह बड़ुगी ग्राम बीरा पुर के रहने वाले हैं और अपना वणिज और भगवद्भजन करते हैं॥

चरणदास॥

ये कवि फ़ैज़ाबाद के ज़िले में पंडित पुर के रहने वाले थे इन्हों ने स्वरोदय ग्रन्थ बनाया था और ये संवत् १५३७ में मरे थे॥

भिखारी दास कवि॥

ये कायस्थ वर्ण अरवल देश के टेंगा नगर के

रहने वाले थे इन के पिता का नाम कृपालुदास पिता-
मह का वीरभानु प्रपितामह का राम दास और भ्राता
का चैन लाल था इन की कविता के देखने और इन
के लिखने से जाना जाता है कि ये केवल भाषा ही
नहीं जानते थे वरन संस्कृत काव्य कोश में भी बड़े
अधिकारी थे इन्हों ने छन्दोर्णव नाम च्छन्दो-
ग्रन्थ और काव्य निर्णय बड़े २ भारी और सब के
उपयोगी ग्रन्थ निर्म्माण किये काव्यनिर्णय सं-
स्कृत काव्य प्रकाश जो कि मम्मटाचार्य्य कृत है
उसी का भाषान्तर विदित होता है ये सम्वत् १८२५
में मृतक हुये और १७४५ में उत्पन्न हुये थे ॥

रामनाथ प्रधान कवि ॥

ये श्री अयोध्या जी के रहने वाले ब्राह्मण बड़े
भजनानन्द थे कविता भी इन की बड़ी चटापटी की
है इन्हों ने रामकलेवा रामहोरी रहस्य और फुल-
वारे ये ग्रन्थ बनाये ये सम्वत् १८४६ में उत्पन्न
हुये थे और सम्वत् १९२५ में वहीं मृतक हुये ॥

महाराजमानसिंह कवि ॥

जिससेकि उन्हें छोटे बड़े सब मनुष्य अच्छे प्रकार जानते ही हैं इससे मैं इस छोटे ग्रन्थ में इन का वृत्तान्त नहीं लिखता ॥

अयोध्याप्रसाद वाजपेयी ॥

ये कवि ज़िले राय बरेली तहसील दिग्विजयगञ्ज ग्राम सातन पुरवा में रहते हैं संस्कृत और भाषा दोनों जानते हैं पर कविता भाषा ही की करते हैं भाषा की रचना में इन के रसे अनुप्रास और पद लालित्य बहुत कम कवियों के ग्रन्थों में इससे इन्हों ने साहित्य सुधासागर और राम कवित्तावली आदि कई ग्रन्थ बनाये हैं ॥

शिव प्रसन्न कवि ॥

ये ज़िले बारह बङ्की तहसील फतेपुर ग्राम राम नगर के निवासी शाकद्वीपी ब्राह्मण हैं इन के पिता का नाम रामजस्या इन वैद्यराज पितामह का श्याम दत्त और प्रपितामह का केशव राम पण्डित था ये संस्कृत और भाषा दोनों के कवि हैं इन्हों ने सती

चरित्र नाम एक ग्रन्थ बहुत ही उत्तम बनाया है इनकी अवस्था ४४ वर्ष की है॥

श्रीपति कवि॥

ये ब्राह्मण ज़िले बहिराइच में प्रयाग पुरके रहने वाले थे इन्होंने कई ग्रन्थ बनाये परवे सब शृङ्गार ही रस के हैं ये बड़े प्राचीन कवि हैं अर्थात् संवत् १७०५ में थे॥

केशव दास जी॥

ये कवि सनाढ्य ब्राह्मण थे इन के पिता का नाम काशिनाथ पितामह का गणेश दत्त और प्रपितामह का ब्रह्मदत्त था इन के वंश में पाण्डित्य का अधिकार बहुत दिन से चला आता है अब भी अजनेश नाम एक बड़े कवि उसी वंश के हैं और वे आप तो बड़े ही विद्वान् और कवि थे जब उन्होंने कविप्रिया और रसिकप्रिया आदि शृङ्गार रस के ग्रन्थ निर्म्मित किये तब एक रात्रि में वाल्मीकि जी ने आ इन्हें स्वप्न में दर्शन दे कहा कि तुम श्री रामचन्द्र जी का यश वर्णन करो तुम्हारी बुद्धि

बढ़ेगी इन्होंने तब संवत् १९५८ में रामचन्द्रिका नाम ग्रन्थ बनाया और जब तक रहे इसी काव्य शास्त्र के विनोद में लगे रहे॥

हिमाचल राम कवि॥

ये प्राक् द्वीपीय ब्राह्मण ज़िले बहिरायच भटौली के राज्य में बड़े ग्राम के रहने वाले थे इन्होंने नाग-लीला दधिलीला आदि ग्रन्थ बनाये और संवत् १९१५ में वहीं मृतक हुये॥

रङ्गाचार कवि॥

ये पश्चिमोत्तरीय देश में भुदंगावं के रहने वाले बनियाँ थे कविता में निपुण तो न थे हां कुछ थोड़ा बहुत जोड़ जाड़ लेते थे इन्होंने एक ध्रुव चरित ग्रन्थ बनाया जिस का नाम ध्रुव चरित्र रक्खा है ये संवत् १९१६ में वहीं मृतक हुये॥

प्रियादास जी॥

ये वृन्दा बन के निवासी ब्राह्मण थे जिन्होंने

नाभादास जी की बनाई हुई भक्तमाल की टीका बनाई ये भी बड़े भारी कवि और वैष्णव थे॥

मीराबाई॥

ये राजपूताने के मेड़ान नगर में उत्पन्न हुई और चित्तौर के राना को विवाही गईं ये अकबर बादशाह के समय में थीं इन का वृत्तान्त ग्रन्थ में लिख चुके हैं दूसरे अब नहीं लिखा जाता॥

नाभादास कवि॥

ये दक्षिणी अन्धाख्य ब्राह्मण थे और जब इन की ५ वर्ष की अवस्था थी तभी इन के देश में अकाल पड़ा इस हेतु इन की माता इन्हें लेकर जयपुर के बन में भाग आई ये बड़े भजनानन्द थे इस हेतु अग्रदास जी ने जोकि बड़े सिद्ध थे आकर इन के नेत्रों में जल का छिप्या मारा आखें खुल गईं और इन को अपना शिष्य किया इन्हों ने अपने गुरु अग्रदास की आज्ञा से भक्तमाल नाम ग्रन्थ बनाया ये भी उसी समय में थे जब कि तुलसी दास जी थे॥

दास वा दासानि दास वा
वेणी माधव दास॥

ये कवि ज़िले गोंडा में घर्घर के निकट पसिका के रहने वाले थे और तुलसी दासजी के शिष्य थे ये बड़े रामोपासक और गुरु भक्त थे गुसाईंजी के सङ्ग यें भी फिरते थे जो २ सिद्धनायें तुलसी दास जी को इन्हों ने देखी हैं वे सब अपने ग्रन्थ गोसाईं चरित में लिखी है ये सम्वत १६८४ में हरि पुर-बासी हुये॥

वंशीधर मिश्र कवि॥

ये कान्यकुब्ज मिश्र ब्राह्मण ज़िले हर दोई ग्राम संडीले के रहने वाले और बड़े भक्त थे जबकि ये मूलक हुये और ईश्वर प्रेरित दूत इन्हें लेजाने के निमित्त विमान ले आये और इन्हें चढ़ा ले चले तो जोकि खैरा बाद में साधा हलवाई सिद्ध था उस ने अपने यहां उसी समय कहा कि वंशीधर मिश्र विमान पर चढ़े हुये जाते है यह बात सम्वत १६७ की है

जानकी दास कवि॥

ये पवांर ठाकुर गोंडा के ज़िले में गुड़सड़ा ग्राम के रहने वाले थे सामान्यतः अच्छे कवि थे पर इनका बनाया बड़ा ग्रन्थ नहीं देखा गया यह वार्त्ता विदित हुई है कि सम्वत् १४९८ में मृतक हुये॥

मति राम कवि॥

ये कवि फतेपुर के ज़िले में असनी ग्राम के निवासी महापात्र भाट औरङ्गज़ेब बादशाह के समय में थे इन के भाई का भूषण नाम था मति रामजी ने रसराजादि ग्रन्थ बनाये और बादशाही दरबार में जन्म पर्य्यन्त रहे॥

रामसिंह देव कवि॥

ये क्षत्रिय फ़ैज़ाबाद के ज़िले में खड़ासा के रहने वाले थे स्फुट कवित्त इन के सुने गये हैं॥

गिरिजा दत्त कवि॥

ये सरयूपारीण ब्राह्मण सुकुल मैंझगवाँ के ज़िले बारह बङ्की तहसील रामसनेही ग्राम धनौली के रहने वाले हैं सम्वत् १९१३ में इनका जन्म हुआ इनके

पिता का नाम महेश दत्त है ये अभी विद्याध्ययन करते हैं और ईश्वरगुण वर्णन में कविता भी करते हैं ये श्री मदुमापति त्रिपाठी जी के शिष्य हैं॥

सुन्दर कवि॥

ये मेवाड़ देश नरेना ग्राम के निवासी दादू बेड़ना के शिष्य थे ये वही दादू हैं कि जिनके नाम से दादू पन्थियों का मत हुआ है ये सुन्दर जी बड़े सिद्ध हुये थे इन्हों ने सुन्दर साङ्ख्य नाम ग्रन्थ बनाया॥

नरहरि कवि॥

ये भाटों की जाति में एक महा पात्र जाति होती है उसी जाति में उत्पन्न हुये जो कि फतेपुर के ज़िलेमें असनी ग्राम है वहीं के निवासी थे और अकबर बादशाह के कवि थे ये बहुत ही शीघ्र कविता करते थे सम्वत १६६६में ये स्वर्गी हुये॥

हरिनाथ कवि॥

ये नरहरि कवि के पुत्र थे इन्हों ने रीवाँ के राजा को यही दोहा सुनाया था जोकि इस ग्रन्थ में लिखा

है इस के सुनाने पर प्रसन्न होकर राजा ने उन्हें बहुत राजमुक्ता दीं और इन्हों ने सब ब्राह्मणों को दे दीं ये अपने बाप के मरने के समय २२ वर्ष के थे और १७०३ सम्वत् में मरे॥

चन्द्र कवि॥

ये भाट थे और दिल्ली ही में रहते थे राजा पृथ्वीराज के पुरोहित थे इन्हों ने पृथ्वीराज रासा नाम ग्रन्थ बनाया॥

शिवप्रसाद कवि

ये ज़िले बारह बङ्की तहसील फते पुर ग्राम राम-नगर के रहने वाले हैं इन के पिता का नाम श्रीलाल प्रसाद अग्नि होत्री पितामह का भवानी दीन प्रपितामह का सेवक राम और गुरू का नाम महेश दत्त था जो कि ज़िले गोंडा ग्राम विश्वम्भर पुर के निवासी बड़े महात्मा मंझगवां के सुकुल थे इन्हों ने थोड़े ही दिनों से कविता करने का प्रारम्भ किया है इन की अवस्था अभी २५ वर्ष की है॥

महेश दत्त ॥

मैं सरवरिया ब्राह्मण मंझगवां का मुकुल ज़िले बारह बङ्की तहसील समसने हो गोमती नदी के उत्तर कूल पै धनावली अर्थात धनौली ग्राम का रहने वाला हूं मेरे पिता का नाम अवध राम पितामह का राजा वन्द राम प्रपितामह का विश्राम राम और गुरू का नाम श्री मदुमापति जी था कि जो सकल शास्त्र वेत्ता पिराडी पुरी के निवासी कोई ४० वर्ष से श्री अयोध्या जी में निवास किये थे और इसी वर्ष अर्थात सम्वत १९३० भाद्र पद शुक्ल द्वितीया रवि वार को वैकुण्ठ वासी हुये हैं मैं प्रथम तो अपने मातुल पण्डित प्रयाग दत्त जी जो कि धनावली ही में रहते हैं उन से तदनन्तर अपने माता महविद्वद्वर्य क्षेम करण जी से पठन करता था तत्पश्चात ज़िले राय बरेली तहसील दिरिवजय गञ्ज ग्राम भिषारी पुर के निकट पण्डित के पुरवा में जो कि उन्हीं श्री मद्विद्वद्वृन्द शिरोमणि पण्डित राम भीख जी के नाम से बसा है वहाँ उन्हीं महाशय से जो कि व्याकरण

न्याय काव्य कोश धर्म शृंगारत्रादि के वेत्ता हैं व्याकरण काव्यालङ्कार कोश पुराणादि पढ़ा रहा और अब की जीविका प्रसिद्ध ही है कि ज़िले बारह बङ्की ग्राम राम नगर की पाठशाला का संस्कृत अध्यापक हूँ मेरा जन्म सम्वत् १८८७ की आषाढ़ पूर्णिमा को हुआ था॥

इति

कठिन शब्दों का कोष॥

जिससे कि हिन्दी में नपुंसक लिङ्ग नहीं होता इस निमित्त जो शब्द संस्कृत में नपुंसक लिङ्ग और पुंल्लिङ्ग हैं उन्हें पुंल्लिङ्ग ही लिखूंगा परपुल्लिङ्ग के स्थान में पु० और स्त्रीलिङ्ग के स्थान स्त्री० और संस्कृत के स्थान में सं० फारसी के स्थान फा० और अपभ्रंश के स्थान में अ० लिखूंगा ॥

अल्पसर० सं० पु० छोटा ताल।
अवत० सं० अवति क्रिया का अ० रक्षा करता है।
अनुमान० सं० पु० अटकर।
अनहित० सं० पु० अहित का अ० जो हित न हो।
अहि० सं० पु० सर्प्प।

आरत० सं० पु० आर्त्त का अ० दुखी।
अनल० सं० पु० अग्नि।
अकुलीना० स० सं० जो गोठिल न हो।
अगाधि० पु० सं० अगाध का अ० जिसकी थाह नहीं।
अशनि० पु० सं० वज्र।
अराति० पु० सं० शत्रु।
अनित्य० पु० सं० जो सर्व्वदा न रहै।
अजर० पु० सं० जिस को बुढ़ापा नहो।
अमर० पु० सं० जो न मरे।
अर्ज्जन० पु० सं० बटोर।
अनुकूला० पु० सं० अनुकूल का अ० सहकारी।
अध्ययन० पु० सं० पढ़ना।
अन्तर० पु० सं० भीतर-बीच।
अकथ० पु० सं० अकथ्य का अ० जो कहने के योग्य नहीं
अलौकिक० पु० सं० लोक से बाहर।
अञ्जलि० पु० सं० हाथ का सम्पुट -अञ्जुरि।
अरि० पु० सं० शत्रु-वैरी।
अवगाह० पु० सं० स्नान-डुबुकी-बुड्डी मारना।

अवनीश०पु०सं० भूपाल-राजा जो पृथ्वी का मालिक हो।
अनिल०पु०सं० पवन-वायु-बयारि।
अनुशासन०पु०सं० आज्ञा।
अङ्क०पु०सं० अङ्क शब्द का अ० चिन्ह-गोद-अंक।
अवसान०पु०सं० अन्त-पीछे।
अन्त्र०पु०सं० आंत।
असिपत्र०पु०सं० तलवार से पत्ता हों जिस के।
अमरावती०स०सं० इन्द्र पुरी।
अनङ्ग०पु०सं० काम-जिस के अङ्ग न हो।
अजामिल०पु०सं० एक कान्यकुब्जदेशीय ब्राह्मण का नाम
अचानक०हि० अकस्मात्-एकाएकी।
अशकुन०पु०सं० जिसे असगुन बोलते हैं-अशुभ।
अयुत०पु०सं० दश सहस्र का नाम।
अहित०पु०सं० शत्रु-जो प्यारा न हो।
अर्क०पु०सं० सूर्य्य-मदार।
अजपा०पु०हि० अजप्य-सं० का अ० जो जपा न जाय।
अमितव्य०पु०हि० अमित सं० का अ० जिस की गिनती
नहो सके।

अधोगति० स०सं० नरक-नीचे जाना।
अलक्षित०पु०सं० जो देख न परै।
अशन०पु०सं० भोजन।
अचल०पु०सं० पर्व्वत-पहाड़-जो न चले।
अविद्या०स०सं० अज्ञानता-मूर्खता।
अदूषण०पु०सं० जिस का दूषण न हो।
अनुपम०पु०सं० जिस की उपमा न हो सके।
अवनी०स०सं० पृथ्वी-भूमि।
अतन०पु०सं० अतनु-का अ०काम-विनादेह।
अवध०पु०हि० अयोध्या-मनुष्य का नाम भी होता है।
अगर०पु०सं० अगरु का अ० सुगन्ध काष्ठ।
अरिहा०पु०सं० शत्रुघ्न-वैरी को मारने वाला।
अशेष०पु०सं० सम्पूर्ण-सब।
अविकारी०पु०सं० बिना विकार।
अक्रूर०पु०सं० दयालु-जो कृष्ण को मथुरा लेगये उन का नाम।
अवशिष्ट०पु०सं० शेष-बाकी।
अक्षर०पु०सं० वर्ण-और जो च्युत नहो।

अम्भव०पु०सं० कुभाष।
अस्पर्श०पु०सं० स्पर्श का अ० छूना।
आप०स०सं० पानीय-जल।
आलबाल०पु०सं० थाल्हा।
आमेत्र०पु०सं० निर्दयी।

[इ]

इन्द्रजीत०पु०सं० इन्द्रजित् का अ० रावण पुत्र का नाम।
इड्य०पु०सं० वाञ्छित-पूजित।
ईहा०स०सं० चेष्टा-यत्न-उपाय-इच्छा।
ईश०पु०स० महादेव-स्वामी।

[उ]

उपल०पु०सं० प्रस्तर-पत्थर।
उदधि०पु०सं० समुद्र।
उमापति०पु०सं० महादेव।
उदार०पु०सं० दाता-दानी।
उरगारि०पु०सं० गरुड़ सर्पों का वैरी।
उद्यमी०पु०सं० उद्योगी उपायी।

उरग० पु० सं० सर्प्प - सांप।
उदासीन० पु० सं० सन्न्यासी - वीतरागी - उदास।
उपानह० स० सं० पनहीं - जूता - पादत्राण।
उलूक० पु० सं० उल्लू - घुघुआ - खूसट - पक्षी।
उदर० पु० सं० जठर - पेट।
उलूखल० पु० सं० ओखल - ओखरी।
उपस्थ० पु० सं० स्त्री वा पुरुष का चिन्ह।
उशीर० पु० सं० सुगन्धि तृण - खस खस।

[ऋ]

ऋषभ० पु० सं० श्रेष्ठ - एक योगी का नाम - वृषभ।
ऋतु० पु० सं० बसन्तादि ६ स्त्री पुष्प।
ऋद्धि० स० सं० धन - सम्पत्ति।
ऋतुराज० पु० सं० बसन्त काल
ऋतुनायक० पु० सं० बसन्त।

[ए]

एला० स० सं० इलायची।
एकाकी० पु० सं० अनन्य - अकेला - असहाय।

[क]

कृपण०पु०सं०अदानी-अदाता-सूम।
कर्ष०पु०सं०उत्कर्षता-उन्नमता-बनबढ़ाव।
कीश०पु०सं० बानर।
कुञ्जर०पु०सं०हस्ती-हाथी।
कृत०पु०सं०रचित-बना-किया।
कल्पतरु०पु०सं० कल्पवृक्ष-देवताओं का तरु।
कन्दुक०पु०सं० गेंद-गोंद।
कपाल०पु०सं०मस्तक-मुण्ड-मूंड़-कपार।
कौतुक०पु०सं०कुतूहल-परिहास-खेल।
कट०पु०सं० करू-तिक्त-तीत।
कुलिश०पु०सं०वज्र।
केतु०पु०सं० नववां ग्रह-पताका।
किरीट०पु०सं०मुकुट-श्रेष्ठलोगों की टोपी।
कञ्ज०पु०सं०कमल।
कीट०पु०सं०कृमि-कीड़ा।
कल्प०पु०सं०ब्रह्मा का दिन-प्रत्यय।
काञ्चन०पु०सं० सुवर्ण-सोना-सोन।

कलह०पु०सं० कल्कल-खर्दू।
कुम्भज०पु०सं०अगस्त्यमुनि-जो घट से उत्पन्न हो।
कल्लोल०पु०सं०कोलाहल-गर्जन-शब्द होना।
कुधातु०पु०सं०लोह।
कृशानु०पु०सं०अग्नि।
कृपी०स०सं०रेवती।
कर्म्मनाशा०स०सं०एक नदी का नाम जो काशी से पूर्व्व है।
कालनेमि०पु०सं०एक निशाचर का नाम।
कीच०पु०कर्दम-बोदा-हीला-चहला-पङ्क।
कृतघ्न०पु०सं०गुण वादी-उपकार मानने वाला।
केलि०स०सं०खेल-क्रीड़ा-विहार।
कामातुर०पु०सं०कामवश-कामार्त्त-कामकर के-व्याकुल।
कनककशिपु०पु०सं०हिरण्यकशिपुदैत्य का नाम।
किंशुक०पु०सं०पलाश-छूल।
कौस्तुभ०पु०सं०मणि।
कण्ठ०पु०सं०ग्रीवा-गल-गर-गर्दन।

केश०पु०सं० बाल-कच-शिरोरुह।
कदम्ब०पु०सं०समूह-ढेर-वृक्षनाम
कमोरी०स०हि० मटुकी-दुग्ध-दधि-भाण्ड।
कार्म्मुक०पु०सं० धन्वा-धनुष-धनुही-कमान।
कुरुपान०पु०सं० दुर्य्योधन-सुयोधन।
कुण्डल०पु०सं०कर्ण-भूषण-झूमका।
कदली०स०सं० रम्भा-केला।
कमठ०पु०सं०कच्छप-कछुआ।
कांजी०स०हि०एक प्रकार का मण्ड-मांड-गञ्ची।
कीर०पु०सं०शुक-तोता-सुआ।
कदर्य्य०पु०सं० कातर-कायर।
कान्त्र०पु०सं० स्त्री-नारी।
कुष्ठ०पु०सं० राजरोग-कोढ़।
कन्था०स०सं० कथरी-सूजनी-सहस्र डोभ।
कुटुम्ब०पु०सं० बन्धु-परिवार
कटि०स्त्री०सं० कमर-करिहांव।
कुरङ्ग०पु०सं० मृग-हरिण-हला।
कपीश०पु०सं० वानरों के स्वामी।

कोशलेश्व० पु० सं० अयोध्याधिपपरब्रह्म दशरथ
कलिका० स० सं० कली।
किरातनी० स० सं० बनेचरी-भीलिन।
कलापी० पु० सं० मयूर-मोर।
क्रतु० पु० सं० यज्ञ।
कुठार० पु० सं० परशु-कुल्हाड़ी-फरसा।
कालि० पु० सं० कालिय-एक सर्प जो यमुना में
रहता था।
कलङ्किनी० स० सं० पापिनी।
कलिधौत० पु० सं० सुवर्ण-सोना।

ख

खर० पु० सं० तीक्ष्ण-तीक्ष्ण पैन-गर्दभ-गधा।
खग० पु० सं० सूर्य्य-पक्षी ग्रह नक्षत्र।

ग

गजमुख० पु० सं० गणेश।
गिरि० पु० सं० पर्व्वत।
गगन० पु० सं० आकाश।
गिरीश० पु० सं० महादेव-हिमवान्।

गिरा०स०सं० वाणी-बोली।
गजारि०पु०सं० सिंह।
गुणमय०पु०सं० सूतमय
गोर्द०स०हि०छिपी।
गति०स०सं०चाल।
गरल०पु०सं०विष-माहुर
गवाक्ष०पु०सं०कसार्द्र।
ग्रह०पु०सं०सूर्य्यादि ९
गर्द्दभ०पु०सं०खर-गधा।वैशाख नन्दन।
ग्राम सिंह०पु०सं०कुक्कुर-कुकुर-कूकुर-कुत्ता।
गोशाल०स०सं०गायों का घर-खरिया-सार।
गुरुद्वेषी०पु०सं०गुरुद्रोही-गुरुसे वैर करनहार
गृद्ध०पु०सं० गीध-पक्षी।
ग्राह०पु०सं०घड़ियाल।
गङ्गासुत०पु०सं०भीष्मपितामह।
गुप्त०पु०सं०छिपाहुआ-रक्षाकियाहुआ।
गहर०पु०हि०विलम्ब-देर-अतिकाल।
गुण०पु०सं०स्वभाव-रज-सत-तम-सूत्र-डोरा।

गोमल० पु० सं० गोमय-गोबर।
गिरिजा० स० सं० पार्व्वती।
गाथा० स० सं० कथा-कहानी
गेही० पु० सं० गृही-जिसके घर हो-स्त्री हो।
गर्व्वित० पु० सं० अहङ्कारी-मानी।
गज़क० स० फा० चरबौती।
ग़िज़ा० स० फा० खाने की वस्तु।
गौतम० पु० सं० एक ऋषि का नाम जिसकी स्त्री अहिल्या थी।
गोकर्ण० पु० सं० एक ब्राह्मण का नाम जिसका आत्मा धुन्धुकारी था।
गुद० पु० सं० पायु-मलत्याग का मार्ग।
गात्र० पु० सं० अङ्ग।

घ

घटयोनि० पु० सं० अगस्त्य जिन्होंने समुद्र पी लिया था।
घनो० पु० सं० घनकाय० बद्दल-मेघ।
घ्राण० पु० सं० नासा-नाक।
घनश्याम० पु० सं० श्री कृष्ण-काला बादर।

च

चूड़ामणि०पु०सं०शिखा का मणि-एक शुक का नाम।
चटशाला०स०हि०पाठशाला-मदर्सा।
चतुर्भुज०पु०सं०विष्णु-जिसके चार बाहु हों।
चित्रगुप्त०पु०सं०यमराज का मंत्री।
चतुरानन०पु०सं०ब्रह्मा-जिस के ४ मुख हों।
चिन्ता०स०सं०शोक-अंदेशा-डर।
चीर०पु०सं०वस्त्र-कपड़ा।
चपला०स०सं०विद्युत-बिजुरी।
चख०पु०हि०चक्षु का स०नेत्र-नयन-आँख।
चहूँघा०पु०हि०चारों ओर।
चञ्चरीक०पु०सं०भ्रमर-भवँरा।
चमू०स०सं०सेना-सैन्य-फ़ौज।
चाव०पु०हि०पैशून्य-चुग़ली।
चित्रशाला०स०सं०चित्र विचित्र गृह।
चिर०पु०सं०बहुकाल।
चर०पु०सं०दूत-चलने वाला-रवाने वाला।
चक्षु०पु०सं०नेत्र-नयन-अम्बक-आँख-आँख

छ०

छिद्र०पु०सं०छेद-रन्ध्र।

ज

जलधि०पु०सं०समुद्र।
जनक०पु०सं०पिता-राजाजनक।
जगदम्बा०स०सं०संसार की माता।
जरठ०पु०सं०वृद्ध-बुड्ढा।
जीहा०स०हि०जिह्वा-जीभ।
जनन०पु०सं०जन्म-उत्पत्ति।
जलज०पु०सं०कमल-जो पानी से उत्पन्न हो।
जननी०स०सं०माता-मा-महतारी।
जरामन०पु०हि०बुढ़ार्द्व।
जल्पि०सं०क्रिया०बकना।
जङ्गम०पु०सं०जो चल न सके।
जलद०पु०सं०मेघ-बद्दल।
जम्बुक०पु०सं०शृगाल-सियार-गीदड़।
जलधर०पु०सं०मेघ-वारिद-बद्दल।
जठर०पु०सं०उदर-पेट।

ज्ञानि०स०सं०ज्ञानि।
जाले०पु०सं०समूह-धोरवा देना।
जव०पु०सं०वेग-शीघ्रता।
जगनाथ०पु०सं०जगन्नाथ का अ०संसारका स्वामी

झ

झष०पु०सं०मत्स्य-मछली।
झाँझी०स०हि०फूटी कौड़ी।

त

तरुणाई०स०हि०जवानी।
तरु०पु०सं०वृक्ष।
त्राहि०सं०क्रि०रक्षाकरो।
तरणी०स०सं०नौका-नाव
त्रास०पु०सं०भय-डर।
तृषित०पु०सं०प्यासा।
तात०पु०सं०पिता-प्यारा।
तरुण०पु०सं०युवा-जवान।
तरुणी०स०सं०युवती-जवानी-स्त्री।
तृष्णा०स०सं०पिपासा-लोभातिशय-प्यास।

तरणा०पु०सं० जो उतर सके।
तारणा०पु०सं० तारने वाला।
त्रिपुरारि०पु०सं० महादेव।
तुम्ह०सं० तुम्हारा वा तुम्हारी।
तस्कर०पु०सं० चोर।
तम०पु०सं० अन्धकार-राहु-नमोगुण।
त्रिकाल०पु०सं० जिस में तीन माद्रा हों।
तावत०पु०हि० तप्त करता है।
तरणि०पु०सं० सूर्य्य।
तमूल०पु०सं० ताम्बूल का अ०पान।
तनुत्राण०पु०सं० देह रक्षक।
ताड़का०स०सं० राक्षसी-जिसे श्री राम ने मारा।
तारकनन्दन०पु०सं० तारक पुत्र।
तलातल०पु०सं० नीचे का लोक।
तामरे०स०हि० तावर।
त्वक्०स०सं० चर्म्म-खाल।
तूल०पु०सं० रुई।
तुषार०पु०सं० पाला।

त्रिताप०पु०सं०दैहिक-दैविक-भौतिक ३ ताप।
तर्क०पु०सं०न्याय।

द

दशानन०पु०सं०रावण।
दशन०पु०सं० दन्त-दाँत।
दिकपाल०पु०सं०इन्द्रादि १०देव।
दारुण०पु०सं०घोर-भयानक।
द्युति०स०सं०दीप्ति-प्रकाश।
दीप०पु०सं०दिया-दीपक।
दमनक०पु०सं०एक शृगाल का नाम।
दुख प्रद पु०सं० दुखदकाश०दुखदायी।
दुहिता०स०सं०कन्या-पुत्री-लड़की।
द्यूत०पु०सं०जुआ-एक प्रकार का खेल।
दूत०पु०सं०पठवनियां-हरिकारा।
दण्डपाणि०पु०सं०जो हाथ में दण्ड लिये हो।
दारा०पु०सं०स्त्री-और एक प्रकार का वाद्य।
दामरी०स०हि०रस्सी।
द्रोण०पु०सं०द्रोणाचार्य्य-श्याम काक।

दुश्शासन ०पु० सं० दुश्शासन का अ० एक मनुष्य का नाम।
दुखमोचन०पु०सं०दुखमोचन का अ०दुख छोड़ानेवाला।
दव०पु०सं० बन का अग्नि-दवरहा।
दमामा०पु०फा०नक्कारा-भेरी-दुन्दुभि।
दशोरी० दश २।
दीन०पु०सं०दुखी।
देवऋषि०पु०सं०नारद।
द्विज०पु०सं० ब्राह्मण-पक्षी।
दम्भ०पु०सं०दर्प-अहङ्कार-घमण्ड।
दैहिक०पु०सं० जो देह से हो।
दारक०पु०सं०विदारण करने वाले।
द्विप०पु०सं०हस्ती।
दान ०पु०सं०देना-वितरण-हस्ती का मद।
दीनता ०स०सं०दुखदैन्य-आधीनता।
देवर्दश०पु०सं०इन्द्र-देवराज।
दन्ती०पु०सं०करी-हाथी।

द्विजदेव०पु०सं० महाराज मानसिंह का दूसरा नाम
दामिनी०स०सं० विद्युत-बिजुली।
दुन्दुभि०पु०सं० वाद्य-बाजा।
दुस्सह०पु०सं० असह्य-जो दुख से सहा जाय।
दानै०पु०हि० दानव सं० का अ०
देव०पु०सं० देवता-देवदत्त कवि का दूसरा नाम।

दहन०पु०सं० पावक-अग्नि।
दुकूल०पु०सं० वस्त्र-कपड़ा।
दराज़०पु०फ़ा० लम्बा।

ध

धनद०पु०सं० कुबेर
धाम०पु०सं० गृह-गेह-घर।
धन्वी०पु०सं० धनुर्द्धर-धनुष बाँधने वाला।
धरणी०स०सं० भूमि-पृथ्वी।
धृति०स०सं० धारणा शक्ति व्योग।
धनेश०पु०सं० कुबेर।
धूम०पु०सं० धुआँ।

ध्रुव० पु० सं० निश्चय-एक राजा का नाम-पृथ्वी के दोनों शिर।
धराधरी० पु० सं० पर्व्वत-पहाड़।
धर० पु० सं० धारण करने वाला।
धुरू० पु० सं० ध्रुवकान्त०

न

नभ० पु० सं० आकाश।
निकर० पु० सं० समूह-झुण्ड
नीर० पु० सं० जल-उदक-सलिल।
निन्दक० पु० सं० निन्दा करने वाला।
निधि० पु० सं० कुबेर का एक रत्न-सम्पत्ति-नव।
नमस्कार० पु० सं० शिर से प्रणाम करना।
नाक० पु० सं० स्वर्ग्ग-जलजीव।
निरस० पु० सं० नीरस का भ० बिनारस-शुष्क।
निरामिष० पु० सं० बिना मांस।
निशा० स० सं० रात्रि।
नरचीता० पु० हि० नर० व्याघ्र-भेड़।
नासा० स० सं० नासिका-नाक-नकुना।

नरेश्व०पु०सं०राजा।
निकेत०पु०सं०गृह-सद्म-घर।
नरहरि०पु०सं०नृसिंह-एक कवि का नाम।
नन्दिघोष०पु०सं०अर्जुन का रथ।
निषङ्ग०पु०सं०तरकस।
निस्पाप०पु०सं०निष्पाप का अ०बिनापाप।
नरशिर माला०स०सं०मनुष्यों के मुण्ड की माला
नागारिपु०पु०सं०गरुड़-पन्नगाशन।
नीड०पु०सं०क्षुतकुल-घोंसला-झोंझ।
निमित्त०पु०सं०हेत-प्रयोजन।
नियम०पु०सं०इन्द्रियनिग्रह-इन्द्रियों को वशमें करना
नूतन०पु०सं०नव्य-नवीन-नया-नव।
निरते०क्रि०नाचे।
निमिवंशी०पु०सं०जनक वंशी।
निदाघ०पु०सं०ग्रीष्मकाल-गरमी।
नाना०अनेक प्रकार।
नग्न०पु०सं०नङ्गा।
निगम०पु०सं०वेद।

नद्नाथ०पु०सं०समुद्र।
निषेध०पु०सं०रोक-अ-मा-नो-ना।

प

पावक०पु०सं०अग्नि।
पवन०पु०सं०वायु।
पवि०पु०सं०प्रस्तर-पत्थर।
पषान०पु०सं०पाषाण का रूप०पत्थर।
पतङ्ग०पु०सं०सूर्य्य-पारदी।
पातक०पु०सं०पाप।
पुञ्ज०पु०सं०समूह-ढेर।
पुलस्त्य०पु०सं०मुनि-ब्रह्म पुत्र।
पोच०पु०हि०नीच-छोटा।
परशु०पु०सं०फरसा-कुठार।
पीयूष०पु०सं०अमृत-जिस के पीने से न मरे।
पयोधि०पु०सं०समद्र।
पोषक०पु०सं०पुष्ट करने वाला।
भेरे०क्रि०पठाये।
पुत्रवती०स्त्री०सं०जिसके पुत्र हो।

पाथा०पु०सं०जल।
पटम्बो०पु०हि०वसना।
प्रलय०पु०सं०ब्रह्मा का दिन-नाश।
पीन्हा०पु०हि०मोद-पीन सं०का श०।
पिक०पु०सं०पपीहा-चातक-पक्षी।
पाणि०पु०सं०हस्त-हाथ।
पय०पु०सं०दुग्ध-जल।
पट०पु०सं०वस्त्र।
पथिक०पु०सं०राही-मुसाफिर।
पर्य्यङ्क०पु०सं०पलंग-शय्या।
परिजन०पु०सं०बन्धु।
पुरीष०पु०सं०विष्ठा-अपवित्र वस्तु।
पल०पु०सं०मांस-घटीका षष्ठांश।
पयोधर०पु०सं०मेघ-स्तन-चुच्चु।
पाश०पु०सं०फांसी।
पर्ण०पु०सं०पत्र-पत्ता।
पति व्रता०स्त्र०सं०जो अपने पतिही को देव समझे।
पतीहार०पु०सं०सन्देशा पहुँचानेवाला-दूत।

पारिजात० पु० सं० कल्पवृक्ष।
प्रबोधि० कृ० क्रि० समझाकर।
पावस० पु० सं० वर्षाऋतु।
पृथु० पु० सं० अयोध्या के एक राजा का नाम।
प्रतिमा० स० सं० मूर्त्ति-पुतली।
पुरातन० पु० सं० पुराना-पुरनिया।
परिहार० पु० सं० अवज्ञा-अपमान-त्याग।
पट्ट० पु० सं० पीढ़ा।
पिपीलि० पु० सं० चींटी।
प्रिय० पु० सं० हित-प्यार।
पञ्चयज्ञ० पु० सं० वेदपाठ-हवन-अतिथि का सत्कार-तर्पण-बलिवैश्यदेव।
प्रचण्ड० पु० सं० उग्र-अतिशय।
पनस० पु० सं० कटहल।
पूषण० पु० सं० सूर्य्य।
पीनी० स० हि० मोटी।
पुरुहूत० पु० सं० इन्द्र।
पद्मराग० पु० सं० एक मणि का नाम।

पराग०पु०सं०धूलि।
पत्नी०स०सं०पत्नी का अ०स्त्री।
परिकर्म्म०स०परिक्रमा सं०का अ०घूमना।
पायु०पु०सं०गुद।
प्रकृति०स०सं०जिससे सृष्टि होती है।
पुरुष०पु०सं०दूनसे और प्रकृति दोनों से सृष्टि होती है।

फ

फणी०पु०सं०सर्प्प।
फणीश्वर०पु०सं०सर्प्पों का राजा।

ब

बीस०पु०सं०विंशका अ०दूसरा प्रकार विंशादिके अ०जानिये।
बीहा०पु०हि०विंशा-बीस।
ब्रह्म विचार०पु०सं०ब्रह्मज्ञान-ईश्वरका जानना।
बट०पु०सं०बरगद।
बाला०स०सं०स्त्री।
बनमाला०स०सं०तुलसी-कुन्द-मन्दार-पारि-
जात-कमल की माला।
ब्रह्म घात०पु०सं०ब्राह्मण को मारना।

बन०पु०सं०अरण्य-जंगल-कपास।
ब्रण०पु०सं०घाव।
बड़वानल०पु०सं०अग्नि।
बेणु०पु०सं०वंश-बाँस।

भ

भट०पु०सं०योद्धा-वीर।
भीरु०पु०सं०कातर-डरपोंक।
भोरे०हि०भूल-भूला हुआ।
भृकुटी०स०सं०भ्रुकुटी-भ्रूकुटी-भौंह।
भामिनि०स०सं०स्त्री-सम्बोधन।
भेषज०पु०सं०औषधि-दवाजा।
भानी०हि०भक्षी।
भुआरा०हि०पु०भूपाल-राजा।
भृत्य०पु०सं०दास।
भूरि०पु०सं०बहुत।
भृङ्ग०पु०सं०भ्रमर-भँवरा।
भृगुनन्द०पु०सं०परशुराम।
भुकम्म०पु०सं०भुजदंड।

भुजङ्ग०म०पु०सं०सर्प्प।

म

मेरु०पु०सं०पर्व्वत।
मराल०पु०सं०हंस-पक्षी।
मृगपति०पु०सं०सिंह।
मूलक०पु०सं०मूली।
मारुत०पु०सं०पवन-वायु।
मुकुट०पु०सं०बड़े राजाओं की टोपी।
मर्कट०पु०सं०वानर।
मनुजाद०पु०सं०राक्षस-मनुष्योंके भक्षणेवाला
मद्य०पु०सं०मदिरा।
मरकतमणि०पु०सं०एकप्रकारका बहुमूल्यप्रस्तर।
मुद०स०सं०हर्ष।
मज्जन०पु०सं०स्नान।
मरु०पु०सं०निर्ज्जलदेश।
मालव०पु०सं०क्षत्राधिक स्थानदेश।
महिदेव०पु०सं०ब्राह्मण।
मसि०स०सं०मसी-स्याही।

मोदक०पु०सं०लड्डू।
मृगजल०पु०सं०मृगतृष्णा-जो घर्म्ममें सर्व्वत्र
झल झलाती दीखती है।
मिस०पु०सं०मिषका अ०ओढ़र-बहाना।
मम०सं०हमारा वा हमारी-मेरा-मेरी।
मौनी०पु०सं०जो न बोले।
मनुजपति०पु०सं०मनुष्यों के स्वामी।
मलिन्द०पु०सं०भ्रमर।
मनोभव०पु०सं०काम।
मधुमास०पु०सं०चैत्रमास।
मधुपुर०पु०सं०मथुरा पुरी।
मल्लिका०स०सं०मालती-पुष्प वृक्ष।
मुहीम०स०फ़ा०चढ़ाई।
मैन०पु०हि०काम।
मृगमद०पु०सं०कस्तूरी।
मापति०पु०सं०विष्णु।
मेढ०सं०लिङ्ग इन्द्रिय।
मदनविहारि०पु०सं०महादेव।

य

युवराज०पु०सं० अङ्गद-बली अहद।
युगल०पु०सं० युग्म-दो।
युवती०स०सं० स्त्री-जवानी।
यज्ञ०पु०सं० क्रतु-मङ्गल कार्य्य।
युग०पु०सं० दो वा चार की सङ्ख्या।
यौवन०पु०सं० जवानपन-जवानी।
यक्ष०पु०सं० नीच देव जाति।
योजन०पु०सं० ४ क्रोश की सङ्ख्या।
यशस्वी०पु०सं० जिस में यश हो।
योनि०स०सं० पश्वादि जाति-भग।
यूथ०पु०सं० झुण्ड।

र

रङ्क०पु०सं० दरिद्र।
रुद्र०पु०सं० महादेव।
रसना०स०सं० जिह्वा-जीभ।
रज०पु०सं० रजोगुण-स्त्री पुष्प-धूलि-
रण०पु०सं० सङ्ग्राम-लड़ाई।

रोष० पु० सं० रिसाना।
रविनन्दिनि० स० सं० यमुना।
राकेश० पु० सं० चन्द्र-चन्द्रमा।
राजिव० पु० सं० राजीव का रू० कमल।
राज रमणी० स० सं० राजाओं की स्त्रियां।
रव० पु० सं० शब्द।
रिपुहन्० पु० सं० शत्रुघ्न।
रौरव० पु० सं० नरक जिस में रुरु नाम कृमि रहते हैं।

ल

लघुसर० पु० सं० छोटा ताल।
लीक० स० सं० कलङ्क-पगडण्डी।
ललाट० पु० सं० मस्तक-माथ।
लक्ष० पु० सं० लाख।
लङ्केश० पु० सं० लङ्का का स्वामी।
लक्ष्मन० पु० हि० लक्ष्मण का रू०।
लुनावहीं० हि० क्रि० कटावहीं।

व

विस्तार० पु० सं० फैलाव।

विधि० पु० सं० ब्रह्मा-आद्धा।
वृष्टि० स० सं० वर्षा।
विन्दु० पु० सं० बूंद।
वल्लक्ष० पु० सं० शुक्ल-उज्ज्वल।
विरञ्चि० पु० सं० ब्रह्मा।
वधिर० पु० सं० बहिरा।
वैनतेय० पु० सं० गरुड़।
विपुल० पु० सं० बहुत।
विग्रह० पु० सं० कलह-खर्द्द।
विशद० पु० सं० उज्ज्वल।
वन्दनीय० पु० सं० स्तुत्य प्रणाम करने के योग्य।
वायस० पु० सं० काक।
विभूति० स० सं० ऐश्वर्य्य-गरव-भस्म।
विश्व० पु० सं० संसार।
वल्कल० पु० सं० छल्ली।
वेश्या० स० सं० वारवधू।
वाम० पु० सं० शोभन-दुष्ट-टेढ़ा।
वैश्य० पु० सं० वणिक-बनिया।

वक्ष०पु०सं० छाती।
विशिरव०पु०सं० वारा-तीर।
वृश्चिक०पु०सं० राशि-बिच्छू।
विष्ठा०स० पुरीष-मैला।
व्याज०पु०सं०ओढ़र।
वृषकेतु०पु०सं० महादेव।
वृन्ताक०पु०सं० बैंगन-भांटा।
वीथी०स० सं०मार्ग।
वितान०पु०सं०मण्डप-चँदवा।
विहङ्ग०पु०सं० पक्षी।
वसुधा०स०सं० पृथ्वी।
वत्साक०पु०सं० बालाक-एक ऋषि का भी नाम है बकपट्टि।
वामदेव०पु०सं० महादेव-वशिष्ठ का भ्राता।
वाक०स०सं० वाणी-भाषा।
व्योम०पु०सं०आकाश।
वर्त्तुल०पु०सं०गोल।
वापि०स०सं०बावली।

शु

शुचि०पु०सं०पवित्र-आषाढमास।
श्रुति०स०सं० सुनना-कर्ण-वेद।
शूल०पु०सं०त्रिशूल-उदरव्यथा।
शिल्प०पु०सं० राजा का कर्म्म।
शशी०पु०सं० चन्द्रमा।
शिशु०पु०सं० बालक-लड़का।
शायक०पु०सं० बाण-सायक।
शारदा मृग०पु०सं० वानर।
शीर्ष०पु०सं० मूरर्व।
शृगाल०पु०सं० गीदड़-सियार।
शव०पु०सं० मृतक-मरा हुआ।
शोक०पु०सं० शोच-रवुटका-सन्देशाह।
शक्ति०पु०सं० बल-भगवती।
शावक०पु०सं० कुमार-बच्चा।
शमन०पु०सं० यमराज।
शाक०सागा-तरकारी-खड़-मुष्टि-कसुजा।
शक्र०पु०सं० इन्द्र।

शुक०पु०सं० शुकाचार्य्य-व्यास पुत्र-तोता।
शृङ्गार०पु०सं० भूषणादि धारण करना रंडुवा है।
श्वशुर०पु०सं० स्त्री वा पति का पिता।
श्मशन गण०पु०सं०यमदूत।
श्वान०पु०सं०कुक्कुर-कुत्ता।
शार्ङ्ग०स०सं०धनुष।
शर०पु०सं०बाण।
शीस०पु०शीर्षस०का अ०सुण्ड।
शैलकुमारी०स०सं० पार्व्वती।
शुण्ड०पु०सं० सूंड़ि।
शोन०पु०हि०शोणितसं०का स०रक्त-रुधिर लोहू।
शोणित०पु०सं०रुधिर।
शरासन०पु०सं०धनुष।
शार्दूल०पु०सं०व्याघ्र और पक्षी।
श्रेणी०स०सं० पङ्क्ति--पांति।
शपथ०पु०सं० सौगन्द।
शिखि पक्ष०पु०सं० मयूर पक्ष-मोरके पर।
श्वास०पु०सं० सांस।

श्रोत्र० पु० सं० कर्ण-कान।

ष

षट्० सं० ६ की सङ्ख्या।
षोड़श० सं० १६ सङ्ख्या।
षड़ानन० पु० सं० षड्मुख-६ मुख जिस के हों।

स

सचिव० पु० सं० मन्त्री-सलाही।
स्वयम्० सं० अपने आप।
सभासद० पु० सं० सभा के बैठने वाले।
सुराज्य० पु० सं० अच्छा राज्य।
सहस्रभुज० पु० सं० सहस्रबाहु-अर्जुन।
सुमन० पु० सं० पुष्प-फूल।
सरोज० पु० सं० कमल।
समर० पु० सं० सङ्गम-लड़ाई।
सर्व्वत० सं० सर्व्वदा-सबदिन।
सन्निपात० पु० सं० एक प्रकार का ज्वर जो मरण
प्रद होता है।

सेत्ता०पु०हि०सेतु सं०का अ०पुल।
सुरसरि०स०सं०गङ्गा।
सरस्वति०म०सं०सरस्वती नदी।
सद्य०सं०उसी समय।
सरल०पु०सं०सहज-सीधा।
सुरानीक०पु०सं०देवताओं का समूह।
सुधा०स०सं०अमृत।
सुरा०म०सं०मदिरा-दारू।
सङ्कट०पु०सं०बटोर।
सारी०स०हि०शुक स्त्री।
सुता०स०सं०कन्या-बेटी।
सहेट०हि०एकान्त रहने का स्थान।
स्वैरिणी०स०सं०जो स्त्री निजपति छोड़ अन्य मे रमै।
सञ्चित०सं०पु०बटोरा हुआ-एकत्र किया हुआ।
स्यन्दन०पु०सं०रथ।
सुरदारु०पु०सं०पीनस।
सीम०पु०सं०सीमा का अ०डाँड़-हद्द।

सारथ०पु०सं०सारथी का०स्त्री० रथ हाँकनेवाला।
स्वयम्बर०पु०सं०जहां कन्या अपने ही प्रसन्न
करके पति को ग्रहण करती पिताद्वारे।
सलिल०पु०सं०जल।
सत्य भामा०स०सं०श्रीकृष्णचन्द्र की पटरानी।
सुगन्धराज०पु०सं०कल्प वृक्ष।
समूह०पु०सं०निकर-झुण्ड
सूर०सं०पु० सूर्य्य।
सरन०हि०कि०चलना।
सम्मन०पु०सं०अच्छा चित्त।
सपर्द्धा०स०सं०स्पर्द्धा का अ०ई र्ष्या।
सुहृद०पु०सं०मित्र-व्यवहारी।
सदृश०पु०सं०समान-बराबर।
सखा०पु०सं०मित्र।
सर्षप०पु०सं०सरसों।
सकोटी०हि०बटोर धरना।
सुखमा०पु०सं०सौख्य।
सङ्गर०पु०सं०सङ्ग्राम-लड़ाई।

समीर० पु० सं० वायु।
सहकार० पु० सं० आम्र।

ह

हरि० पु० सं० विष्णु-सूर्य्य-सिंह-भेक-इंद्र-सर्प।
हयशाला० स० सं० वाजिशाला-घोड़शाल।
हर० पु० सं० शिव।
हय० पु० सं० अश्व-घोड़ा।
हनु० पु० सं० महावीर-चौहरी।
हेठ० हि० नीचे।
हाला हल० पु० सं० विष।
हेलना० हि० निन्दा-हेला का-अ०
हिंसा० स० सं० जीव मारडारना।
हून० पु० सं० शब्द।
हाटक० पु० सं० सुवर्ण-सोना।
हिमऋ० पु० सं० ऋतुभत्यांतमार्गशीर्षकौरपौष।

क्ष

क्षिति० स० सं० भूमि।
क्षमा० स० सं० सहना।

क्षुभित० पु०सं० क्षोभयुक्त।
क्षोणी० स०सं० पृथ्वी।
क्षतजाती० स०सं० रक्तयुक्त।
क्षिप्र० पु०सं० शीघ्र।

क्षि

